मै तुम्हें क्षमा करूंगा

विष्णु प्रभाकर

इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन
के 71 कृष्णनगर, दिल्ली 110 051
द्वारा प्रकाशित

संस्करण 1986

लेखकाधीन   मूल्य 35 00 रुपये

कमल प्रिंटर्स
9/5866 गांधीनगर, दिल्ली 110 031
में मुद्रित

MAIN TUMHEN CHHAMA
KARUNGA (Short Plays)
by Vishnu Prabhakar

Price 35 00

दो शब्द

विद्यार्थी जीवन मे इतिहास मेरा प्रिय विषय रहा है। लेकिन जहा तक सृजन का सम्बन्ध है उस ओर मैंने बहुत कम देखा है। उसका कारण है। मेरे आसपास इतनी सामग्री बिखरी रही है और वर्तमान का दावा कुछ इतना प्रबल रहा है कि अतीत मे झाकने का न तो अवकाश मिला न जरूरत ही महसूस हुई।

इसलिए कथा साहित्य के क्षेत्र मे तो मैंने एकाध कहानी को छोडकर कभी कुछ नही लिखा। हा नाटक के क्षेत्र मे तीन बडे नाटक और नौ एकाकी लिखे हैं। बच्चो के लिए भी बहुत कुछ लिखा है पर इस लिखने के पीछे मेरे अन्तर की प्रेरणा प्राय नही रही। रहा बस आकाशवाणी और पत्र-पत्रिकाओ का आग्रह, विशेष रूप से आकाशवाणी का।

इसका यह अर्थ नही है कि अतीत वर्तमान के लिए अप्रासगिक ही रहता है। इसके विपरीत वहा बहुत कुछ है समझने-सोचने के लिए और आज के मूल्यो की कसौटी पर कसने के लिए। काल अपने समग्र रूप मे एक और अविभाज्य है। हमने ही उसे अपनी सुविधा के लिए खडो मे बाट लिया है। यह सच है कि मूल्य बदलते हैं और स्थितिया भी बदलती हैं। पर यह तो विकास का धर्म है। स्थिर कहा कुछ नही होता।

प्रस्तुत सग्रह मे आठ लघु नाटक सकलित हैं। छह की कथावस्तु इतिहास से ली गई है और दो की इतिहासपूर्व के युग से। आदर्श और यथार्थ की शाश्वत बहस का समादर करते हुए भी हम कह सकते हैं कि इनमे जिन मूल्यो का प्रतिपादन हुआ है वे किसी न किसी रूप मे आज भी प्रासगिक हैं।

एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा। 'मर्यादा की सीमा' एकाकी की कथावस्तु रामायणकालीन भारत से ली गयी है। घटना तब की है जब राम लका विजय के पश्चात अयोध्या मे शासन कर रहे थे। हनुमान उनके

परम भक्त थे और आज्ञा सेवक भी। वे सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि कभी उन्हें अपने परम आराध्य राम के विरुद्ध भी हथियार उठाने पड़ सकते हैं। परन्तु माँ के वचन की रक्षा के लिए वे उनसे युद्ध ही नहीं करते उन्हें पराजित भी कर देते हैं। उस समय हनुमान की माता देवी अंजना हर्ष विभोर होकर पुकार उठती हैं मर्यादा पुरुषोत्तम महात्मा राम को राम के परम भक्त ने पराजित कर दिया।

फिर उसी साँस में धीमे से कहती हैं यह राम की ही जय है।

हनुमान इस स्थापना को और स्पष्ट करते हुए कहते हैं महात्मा राम मेरी जीत आपकी जीत है। शरणागत राजा शकुन्त की रक्षा करने के लिए आपसे युद्ध करके मैंने आपकी ही रक्षा की है मर्यादा पुरुषोत्तम।

ये सभी लघु नाटक आकाशवाणी से प्रसारित हो चुके हैं। कुछ तो एक से अधिक बार भी हो चुके हैं। कम से कम तीन नाटक मंचस्थ भी हुए हैं। फिर भी इनकी मूल प्रेरणा आकाशवाणी से ही मिली है।

अन्त में एक बार फिर दोहरा दूँ कि इनका महत्व इस तथ्य में भी निहित है कि आगत का निर्माण बिना अतीत की अन्तरंगता के सम्भव नहीं है। क्योंकि हमारी जड़ें वहीं हैं। और जड़ से कटकर जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। हाँ सन्तुलन सीमा और औचित्य का— ध्यान तो रखना ही होगा।

818 कुण्डेवालान
अजमेरी गेट दिल्ली 110 006

—विष्णु प्रभाकर

जिनकी प्रेरणा से ये लघु नाटक
पुस्तक रूप मे आ सके
उन्ही स्नेही मित्र
श्री सतराम विचित्र
की
पुण्य-स्मृति
को
समर्पित

क्रम

मैं भी मानव हूँ

पात्र

पहला प्रहरी
दूसरा प्रहरी
अशोक
राधागुप्त
संघमित्रा
कुमार
उपगुप्त

(रंगमंच पर अस्ताचलगामी सूर्य की लालिमा के कारण प्रकाश मन्द पड़ता जा रहा है। मृत्यु का अन्धकार जैसे वातावरण को ग्रसता आ रहा है। दूर पृष्ठभूमि में अग्नि की लपटें इस प्रकार धुआँ फेंक रही हैं, जैसे महानाश आकाश को निगल जाना चाहता है। मंच पर सम्राट अशोक के शिविर का कुछ भाग दिखाई देता है। सजावट में राजसी वैभव की पूरी छाप है। भूमि पर बहुमूल्य कालीन और गलीचे बिछे हैं। एक ओर सम्राट के बैठने का ऊँचा आसन है। इधर उधर धूपदान हैं जिनसे उठकर सुगंधित धुआँ वातावरण को और धूमिल बना रहा है। द्वार के पास अनेक मुख वाले पतील सोत हैं जिनमें दीपक जलते हैं। पृष्ठभूमि में करुण संगीत इस प्रकार उभर रहा है मानो प्रलय चीत्कार कर उठा हो—

माँ तेरे आँगन में जलती महानाश की ज्वाला
अस्ताचल पर रक्तिम लपटें लप-लप लपक रही हैं
चिता धूम के बाल बिखेरे उतर रहा तम काला
ये सड़ते शव जलते खण्डहर रक्तिम रोती राह

रणचण्डी की सदा अपरिमित भर भर रीता प्याला
माँ तेरे आँगन में जलती महानाश की ज्वाला।

गीत के समाप्त होते न होते दो ओर से दो प्रहरी मंच पर प्रवेश करते हैं और अत्यंत उद्विग्न भाव से एक ओर खड़े होकर गीत सुनते हैं। स्वर जैसे पृष्ठभूमि में जाते हैं, वे भी जैसे जाग जाते हैं। आह भर कर पहला प्रहरी कहता है।)

प० प्रहरी कितना दर्द है इस गीत में! सचमुच गायिका ने जो कुछ हो रहा है उसका चित्र खींच दिया है। चारों ओर मरण की दानवी लीला छा रही है। धरती असंख्य मानवों के क्षत विक्षत शवों से पटी पड़ी है।

दू० प्रहरी और उनको देखना हमारी नियति है।

प० प्रहरी नहीं हमारी नियति है उन पर आक्रमण करने वाले गिद्धों को उड़ाना।

दू० प्रहरी हाँ इस मरण पर्व में गिद्ध और गीदड़ ही तो आनन्द का संगीत अलापते हैं।

प० प्रहरी समझ में नहीं आता इस वीभत्स लीला को मनुष्य विजय क्यों कहता है? मुझे शंका होती है कि कलिंग हारा है या जीता है।

दू० प्रहरी हम इस प्रकार भी तो कहा जा सकता है कि हमारे सम्राट जीते हैं या हारे हैं।

प० प्रहरी श श श। सम्राट के सम्बन्ध में कुछ मत कहो। वे आजकल बहुत उद्विग्न हैं।

दू० प्रहरी इसीलिए तो मुझे शंका होती है। हमारे सम्राट और उद्विग्न हों। लेकिन आजकल मैं देखता हूँ कि जब भी वे रणभूमि या बन्दीगृह से लौटते हैं ऐसा लगता है जैसे उनके प्राण झुलस रहे हैं। मधुर मादक संगीत सुनते सुनते वे चौंक पड़ते हैं। और अपने हाथों को उलट पुलट कर देखने लगते हैं। यही शायद शंका का जन्म है।

प० प्रहरी सचमुच तुम्हारी आँखों ने बहुत दूर तक देख लिया है। मुझे

भी एसा ही लगता है। लकिन कलिग के राजकुमार अभी तक नही पकडे गय हैं। इस ग्रान से व और भी चिंतित है।

दू० प्रहरी जब तो तासली म आदमी दिखाई ही नही दत। कुमार न जान कहाँ जा छिप है? (धीर से) पग्सा उन्होन अदभुत पराक्रम दिखाया। उन्ह पीछे हट जाना पडा। लेकिन उनकी हाथी सना की मार स मगध सना त्राहि त्राहि कर उठी।

प० प्रहरी (दूर देखकर) वह तो मैंन भी दखा था लेकिन उधर दखो आकाश म गिद्ध कम मडरा रह हैं। चलो चलो हम उनको भगाए।

दू० प्रहरी समझ म नही आता उनको भगान म लाभ क्या है? व हमसे अच्छे ही ह। शवो पर आक्रमण करत है। हम तो जीवित व्यक्तियो को शव बनात हैं।

प० प्रहरी आओ आओ हम लाग चल। हम आज्ञा का पालन करना ह। सम्राट के काम की व्याख्या करना नही।

दोनो अपन बल्लम तानकर चीखते हुए जात हैं। एक क्षण तक उनकी आवाज गूजती रहती है। दूसर क्षण सम्राट अशोक शिविर म घूमत हुए दिखाई देते हैं। धीरे धीरे वे बाहर आकर शिविर के सामने बन हुए चबूतरे पर टहलने लगते हैं। बठने के लिए एक सिंहासन वहाँ रखा हुआ है। इस समय वे बहुत उद्विग्न हैं। उनके रत्नजडित आभूषण रेशमी उत्तरीय सब उनकी दीनता को गहरा करते हैं। घूमते घूमते वे अस्फुट स्वर मे कुछ बोलते रहते हैं। सहसा गिद्धो को उडाने की आवाज तेज होती है। सम्राट चौंक पडते हैं।

अशोक (चौंककर) कौन? (इधर उधर देखकर) कोई नही यहा तो कोई नही। शायद यह मरी पगध्वनि ही थी। म समझा कोई सैनिक है। यहाँ तो प्रहरी भी नही दिखाई दत।

जाना। वे ही गिद्धों का उद्धार के लिए गये हैं। (दीर्घ निःश्वास) गिद्धों का उद्धार न मरे हुए लोगों की रक्षा करना चाहते हैं। कितने मन पड़े होंगे युद्धभूमि में। एक लाख आदमी तो मर ही हैं। युद्ध में आदमी मरते ही रहते हैं। इस युद्ध में कुछ अधिक मरे हैं। कलिंग का दर्प जो चूर्ण करना था। चूर हो गया। ठीक हुआ। ठीक हुआ न। हाँ ठीक हुआ। (सहसा छाती तन जाती है। उसी समय प्रहरी आकर प्रणाम करता है)

प्रहरी सम्राट की जय हो। महामात्य आपके दर्शनों के लिए आना चाहते हैं।

अशोक आने दो।

प्रहरी जो आज्ञा सम्राट। (प्रहरी जाता है और महामात्य राधागुप्त प्रवेश करते हैं)

राधागुप्त सम्राट की जय हो। सम्राट यह जानकर प्रसन्न होंगे कि कलिंग के राजकुमार बन्दी हो चुके हैं।

अशोक (चौंककर) क्या कहा महामात्य?

राधागुप्त मैंने निवेदन किया सम्राट कि कलिंग के राजकुमार बन्दी हो चुके हैं। युद्ध अब समाप्त हो चुका है। आज्ञा हो तो राजकुमार को सम्राट के चरणों में इसी समय उपस्थित किया जाय?

अशोक (अनमना सा) ठहरो महामात्य ठहरो। तुमने तीन बातें बतायी हैं। कलिंग के राजकुमार बन्दी हो चुके हैं। युद्ध समाप्त हो चुका है। राजकुमार को इसी समय यहाँ उपस्थित किया जा सकता है। सचमुच महामात्य, क्या अब युद्ध की आवश्यकता नहीं रही। क्या अब शस्त्रों की झंकार सुनने को नहीं मिलेगी। आहतों की चीत्कार बन्द हो जायगी?

राधागुप्त सम्राट! अब कलिंग में कौन बचा है जो शस्त्रों की पुकार सुनेगा? जो वृद्ध, वनिताएं या बालक वहाँ शेष हैं वे न

सुन सकते है और न बोल सकते हैं। वे केवल अपलक दृष्टि से शून्य मे ताकते रहते है। उनसे बातें [illegible] इस प्रकार देखते है कि बोलने वाला स्वयं पानी पानी हो जाता है। लेकिन सम्राट अब भी वहां एक व्यक्ति शेष है, जो देखता भी है और बोलता भी है।

अशोक — सच ? ऐसा कोई व्यक्ति है कलिंग मे ? (सहसा तीव्र होकर) वह कौन है ?

राधागुप्त — वह कलिंग का राजकुमार है।

अशोक — लेकिन तुमने तो अभी कहा था कि कलिंग का राजकुमार बन्दी हो चुका है। बन्दीगृह मे आकर भी क्या वह साहस का परिचय करता है ?

राधागुप्त — तब से वह कुछ अधिक बोलने लगा है सम्राट।

अशोक — (होंठ दबाकर) वह शायद भारत सम्राट चण्डाशोक के स्वभाव को नही जानता।

राधागुप्त — जानता अवश्य होगा सम्राट। और आप भी तो उसकी वीरता से परिचित है। वह मगध मे हमारा अतिथि रहा है। आखेट के समय उसके हस्तलाघव की सम्राट ने भूरि भूरि प्रशंसा की थी। और देवी संघमित्रा

अशोक — (तीव्र स्वर) महामात्य, यहाँ देवी संघमित्रा की बात नही है।

राधागुप्त — लेकिन सम्राट यह सत्य है कि देवी संघमित्रा आज भी इस क्षण भी राजकुमार की प्रशंसक है। अभी अभी उनके बन्दी होने का समाचार सुनकर उन्होंने कहा था, कुमार के साथ वही बर्ताव होना चाहिए जो एक वीर पुरुष के साथ होता है।

अशोक — (क्रुद्ध) महामात्य हम देवी संघमित्रा के परामर्श की आवश्यकता नही है। हम जानते है हम क्या करना है। कुमार हमारा शत्रु है और शत्रु के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, यह हम संघमित्रा से नहीं जानना चाहते।

कलिंग का इसी समय उपस्थित किया जाय। हम स्वयं उसकी बातें सुनेंगे।

राधागुप्त — मैं अभी लाता हूँ। (प्रणाम करके जाता है और दूसरे ही क्षण संघमित्रा कक्ष में प्रवेश करती है। जूड़ा कसकर बाँधने से उसके मुख की मुद्रा कसी हुई कमान की तरह हो गयी। कमर में फेंटा कसे वह किसी वीर पुरुष से कम नहीं जान पड़ती। आते ही स्नेह भरे स्वर में पुकारती है)

संघमित्रा — भैया।

अशोक — तुम इस समय यहाँ क्या आयी?

संघमित्रा — सम्राट से निवेदन करने के लिए संघमित्रा आ गयी है। आज्ञा हो तो उपस्थित करूँ?

अशोक — इस समय नहीं। हमें कुछ बहुत आवश्यक काम है।

संघमित्रा — इस संध्याकाल में सम्राट का जो काम है वह मैं जानती हूँ लेकिन कुछ क्षण के लिए क्या वह काम रुक नहीं सकता?

अशोक — तुम क्या जानती हो वह क्या काम है? और जानती हो तो यह भी तुम्हें मालूम होगा कि वह रुक नहीं सकता।

संघमित्रा — जैसी आपकी इच्छा लेकिन इतना निवेदन करने की धृष्टता अवश्य करूँगी कि कलिंग कुमार के भाग्य का निर्णय करते समय आपके न्याय की परीक्षा भी होने वाली है।

अशोक — भारत सम्राट चण्डाशोक का न्याय विश्व विदित है। कुमार को मेरे चरणों में सिर झुकाना ही होगा।

संघमित्रा — और न झुकाया तो?

अशोक — तो यह तलवार उसे झुका लेगी। (तलवार को म्यान में बजाता है। संघमित्रा काँप जाती है। सम्राट हँसते हैं) काँप गयी? क्या तुम्हें शस्त्रों से डर लगने लगा है?

संघमित्रा — नहीं मैं शस्त्रों से नहीं डरती।

अशोक — तो कुमार की मृत्यु से डरती हो?

संघमित्रा — नहीं सम्राट मुझे उसकी भी चिंता नहीं है। चिंता मुझे आपकी है। गलती से आप तलवार को शौर्य का प्रतीक समझ बैठे हैं।

अशोक — तलवार नहीं तो शौर्य का प्रतीक क्या है ?

संघमित्रा — हृदय। हृदय की विशालता और उदारता का नाम है शौर्य।

अशोक — हृदय की उदारता और विशालता (सहसा अट्टहास) हृदय की उदारता और विशालता ! जान पड़ता है कि कलिंग के उस भिक्षुक का प्रभाव तुम पर भी पड़ा है ? आखिर तुम नारी हो और नारी की अवरोध शक्ति बड़ी दुर्बल होती है लेकिन याद रखो अशोक बौद्धों की इस दुर्बल नीति के बल पर भारत का सम्राट नहीं बना है।

संघमित्रा — सम्राट

अशोक — तुम अब जा सकती हो संघमित्रा

संघमित्रा — लेकिन भैया

अशोक — जाओ संघमित्रा। भारत सम्राट अशोक तुम्हें जाने की आज्ञा देता है।

संघमित्रा — जा रही हूँ सम्राट पर भूलिए नहीं कि हृदय की विशालता का नाम ही शौर्य है। (चली जाती है। सम्राट एक क्षण उसे जाते देखते हैं और फिर एकाएक उठते हैं)

अशोक — संघमित्रा मैं जानता हूँ तुम क्या कहना चाहती हो। तुम कलिंग के युवराज से प्रेम करती हो परन्तु युवराज मेरा शत्रु है और तुम मेरी बहिन (इसी क्षण राधागुप्त कलिंग के कुमार के साथ प्रवेश करते हैं। दो सैनिकों ने कुमार को बाँधा हुआ है। कुमार रणवेश में हैं। प्रशस्त ललाट, उन्नत वक्षस्थल किंचित श्यामल वर्ण सहास्य विश्वास से पूर्ण मदन और आजानु बाहु। एक साथ रक्षा और दर्प के प्रतीक। सम्राट अपलक उनको ओर देखते हैं)

राधागुप्त — सम्राट की जय हो। कलिंग के राजकुमार उपस्थित हैं।

अशोक (कठोर स्वर मे) महामात्य कलिंग का अब कोई राजकुमार नही है। वह एक साधारण बन्दी है।

कुमार अशोक अपनी वास्तविक अवस्था म सभी साधारण होते है। तुम भी अशोक पहले हो सम्राट पीछे।

अशोक (कडककर) बन्दी जानते हो तुम किससे बात कर रहे हो ?

कुमार जानता क्यों नही ? मैं मगध के हत्यारे सम्राट चण्डाशोक से बात कर रहा हूँ। उस चण्डाशोक से जिसने मा वसुधरा को अपने लाखो पुत्रो का रक्त पीने के लिए विवश किया है।

अशोक (अतिशय क्रुद्ध होकर) बन्दी कलिंग के लोगो की तरह तुम वाचाल ही नही धृष्ट भी हो। इस असभ्यता का एक ही प्रतिकार मेरे पास है और वह है कटार। (कटार दिखाता है)

कुमार हत्यारे के पास कटार के अलावा और भी कुछ होता है क्या ?

अशोक बन्दी म तुम्हारा अभी सिर काट सकता हूँ।

कुमार जो धरती माता अपने लाखो पुत्रो का रक्त पी चुकी है वह एक पुत्र का और रक्त पियेगी तो कोई अन्तर नही पडेगा।

राधागुप्त धृष्टता की भी एक सीमा होती है। होश म आकर बातें करो।

कुमार तुम्हें भी क्रोध आ गया महामात्य। आखिर हो तो विष्णु गुप्त चाणक्य के शिष्य। लेकिन सुन लो राधागुप्त तुम्हारे इस हत्यारे सम्राट को एक दिन इन हत्याओं का बदला चुकाना होगा। उसका अपना हृदय उसको भर्त्सना करेगा।

अशोक (सहसा अट्टहास कर उठता है) वही उपगुप्त का स्वर। वही बौद्ध भिक्षु की वाणी। बौद्धो की दुर्बल नीति के कारण ही तुम्हारा पतन हुआ है बन्दी।

कुमार मेरा पतन नही हुआ है अशोक पतन तुम्हारा हुआ है।

अशोक — मेरा पतन ? भारत सम्राट का पतन ? असम्भव। बन्दी, असम्भव

कुमार — असम्भव नहीं अशोक। वह पूरी तरह सम्भव हो चुका है। लाखों मनुष्यों का रक्त तुम्हारे पतन की घोषणा कर रहा है। लाखों घायलों की कराह में तुम्हारे पतन का स्वर गूंज रहा है। ललनाओं की सूनी मांगों में, माताओं की खाली गोदियों में, शिशुओं की निरीह शून्य दृष्टि में, सब कहीं तुम्हारे पतन की कहानी अंकित है। कलिंग के उजड़े हुए ग्राम, वीरान प्रदेश ये सब तुम्हारे पतन के साक्षी हैं। तुम जीतकर भी हार गये हो अशोक। और कलिंग मिटकर भी अमर हो गया है।

अशोक — अशोक हार गया है। कलिंग अमर हो गया है। (अट्टहास)

कुमार — हँस लो, जितना हँस सको हँस लो। लेकिन मगध में तुम्हें यह हँसी नहीं मिलेगी। वहाँ के मार्ग रक्त में रंग पड़े हैं। तुम्हारे सिंहासन के चारों ओर लाशों के ढेर लगे हुए हैं। बन्दीगृहों में उठती हुई कराह ने सारे वातावरण को विषाक्त बना दिया है। अशोक तुमने कलिंग की धरती ही जीती है आत्मा को नहीं। धरती की जीत को तुम जीत कहते हो।

राधागुप्त — जीत नहीं तो और क्या है ? आत्मा को किसने देखा है ? शरीर सत्य है। उसकी जय सच्ची जय है। तुम्हारे इस शब्द जाल से तुम्हारी पराजय जय में नहीं पलट सकती कुमार।

कुमार — मेरी पराजय ? मुझे किसने पराजित किया है महामात्य ?

राधागुप्त — भारत सम्राट महाराज अशोक ने और किसने ?

कुमार — राधागुप्त जिस कलिंग को सोलह राज्यों को उखाड़ फेंकने वाला तुम्हारा गुरु पराजित नहीं कर सका जिसने सदा तुम्हारी सत्ता को चुनौती दी है उसे कोई भी कभी भी पराजित नहीं कर सकता। मैं अन्तिम बार तुमसे कह देना

चाहता हूँ कि जब तक कलिंग के राजकुमार के शरीर में प्राण शेष हैं तब तक वह कभी भी पराजय स्वीकार नहीं कर सकता।

अशोक (तीव्र स्वर में) तुम पराजय स्वीकार नहीं करोगे? मुझे प्रणाम नहीं करोगे?

कुमार कलिंग का राजकुमार कलिंग के अतिरिक्त और किसी के सिंहासन के सामने झुकने की कल्पना नहीं कर सकता।

अशोक लेकिन कलिंग का सिंहासन धूल में मिल चुका है। कलिंग का स्वामी मैं हूँ।

कुमार कलिंग के युवराज के रहते कलिंग का स्वामी कोई नहीं हो सकता।

अशोक हान का प्रश्न नहीं है। कलिंग का राजकुमार मेरी ठोकरों में लोट रहा है।

कुमार ठोकर लगाना तो दूर की बात है उसकी ओर दृष्टि उठाने वाले की आँख निकाल ली जाती है अशोक।

राधागुप्त (कड़ककर) बस करो बन्दी, बस करो। नहीं तो

कुमार नहीं तो तुम्हारा सिर काट लिया जायेगा (हँसता है) तुम लोगों में सिर काटने से अधिक शक्ति है ही कहाँ? तुम सब कायर हो और कायर कभी किसी को पराजित नहीं कर सकते।

अशोक महामात्य! बन्दी से कहो कि वह व्यर्थ का वितण्डावाद न उठाकर मेरी अधीनता स्वीकार करे। अशोक वीर पुरुषों को क्षमा करना जानता है। (राधागुप्त बोलने को होता है लेकिन राजकुमार अवसर नहीं देता)

कुमार लेकिन वीर पुरुष किसी की क्षमा ग्रहण करना नहीं जानते। विश्वास रखो कलिंग का राजकुमार जीते जी वीरता को कलंकित नहीं करेगा। (अशोक तिलमिला उठता है)

अशोक महामात्य! बन्दी से पूछो, क्या यह उसका अन्तिम निर्णय

बल पराक्रम था ? (चीखता है) लेकिन जाते समय कुमार ने क्या कहा था ? (वातावरण में शब्द गूंजते हैं) एक बन्दी का सिर भी नहीं झुका सके। श्रावडो ठुकरान के लिए ता अनेक गीदड श्मशान में घूमा करते है लेकिन यह वीर पुरुषों का मार्ग नहीं है। अशोक तुम जो कुछ आज कर रहे हो एक दिन रक्त के आंसुओं से उसके लिए तर्पण करोगे। तुम्हारी अपनी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी। अपने हृदय की आग में तुम्हें जलना पड़ेगा। जिन्हें आज तुम मार रहे हो उन्हीं के एक दिन चरण चूमोगे। (स्वर पृष्ठभूमि में जाते हैं। अशोक चीखता है) नहीं नहीं नहीं। यह सब शब्दजाल है। पराजय की खीझ उतारने का उपक्रम। लेकिन (सहसा उद्विग्न होता है) आहतों का चीत्कार दुखियों की करुण पुकार पीडित नागरिकों का हाहाकार उफ (दोनो हाथों से अपने हृदय को दबाता है) अचानक यह क्या हुआ ? हृदय में यह कैसी पीडा होती है ? नेत्र क्यों मुदे जाते है ? यह मुझे क्या होने लगा है ? यह मुझे कौन पुकार रहा है ? कौन मेरी हंसी उडा रहा है। (पृष्ठभूमि में अट्टहास का स्वर) कौन है ?

इसी समय संघमित्रा मंच पर प्रवेश करती है।

संघमित्रा सम्राट की जय हो। मैं हूं संघमित्रा। कुमार के भाग्य का निर्णय कर चुके।

अशोक (शान्त होकर) आह तुम हो संघमित्रा। तुम उस बन्दी की बात कर रही हो ? कलिंग के लोग बडे धृष्ट होते हैं। मैं उसे क्षमा करने को तैयार था परन्तु वह किसी भी प्रकार मेरी अधीनता स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ।

संघमित्रा अधीनता स्वीकार करने को उसके पास रखा ही क्या है ? सारा देश श्मशान बन चुका है। वह उर्वर भूमि अपने ही हर्षोत्पन्न निवासियों के शवों से भरी पडी है। राजमार्गों पर हृष्टपुष्ट और बहुमूल्य हाथियों के अंग अंग बिखरे पडे है।

कलिंग क व सुदर वस्त्र जि ह आप और हम बडे चाव स मगाकर पहना करत थ चीर चीर होकर हवा म उड रह ह। कितन लोग थ कलिंग म। माग नही मिलता था। पर तु अब

अशाक (सहसा उद्विग्न होकर) तुम उसका दश दखन गयी थी सघमित्रा ?

सघमित्रा जाना ही पडता है। जिस समय आपके शूरवीर सैनिक घरा स निकाल कर उन भाल सरल और निरपराध कलिंग निवासिया का वध करत ह तो सम्राट महानाश का मस्तक भी शम म झुक जाता है।

अशाक यह युद्ध है सघमित्रा। और युद्ध म विरोधी का नाश ही किया जाता है।

सघमित्रा जानती हूँ सम्राट। मैं विराध नही करती। केवल सम्राट क सनिका क कम का बखान करती हूँ। आपक सनिक आज्ञाकारी ह। छाट छोट बच्चा और औरता तक का व घर म नही छाडत। उन्ह बाहर निकालकर घरा म आग लगा दत ह। इसलिए कुमार न गलती की जो श्मशान क लिए सिर दिया।

अशाक ता तुम जानती हा कि मैंन व दी का सिर काट दन की आज्ञा दी है।

सघमित्रा जानती ता नहा पर कल्पना कर सकती हूँ। बचपन से आपका पहचानती हू। राजगद्दी भी ता आपन बडे भैया सुसीम क सिर का सौदा करक ली थी। आरा की भ ति विरासत म नही पाई। विरासत एक प्रकार का दान है। और दान लेना वीरता का अपमान है।

अशोक (तीव्र परन्तु व्यग्र स्वर मे) गद्दी की तो यहा काई चर्चा नही थी सघमित्रा।

सघमित्रा आपके स्वभाव की ता थी। कुमार का प्राणदण्ड दकर आपन राजसत्ता की ही नही अपन स्वभाव की मयादा की भी

रक्षा की है।

अशोक (क्रुद्ध होकर) स्वभाव की मर्यादा। सघमित्रा, अशोक शक्ति में विश्वास रखता है। दया और करुणा को तो वह साम्राज्य का शत्रु मानता है। सुसीम पिता के राज्य काल में भी तक्षशिला का विद्रोह शान्त नहीं कर सका था। वह बौद्धों की दुर्बल नीति का पक्षपाती था। वह मानवता की पुकार जैसी काल्पनिक भावनाओं में विश्वास करता था।

सघमित्रा निःसन्देह बडे भैया सम्राट होने के लिए नहीं थे। वे गद्दी पर बैठते तो मौर्यों की राजपताका कैसे चारों दिशाओं में फलती? देश कैसे विजित होते? माँ वसुन्धरा कैसे अपनी सन्तान का रक्त पीती? अशोक कैसे मानव चीत्कार का सगीत सुनता?

अशोक तुम जानती हो कि चीत्कार में भी सगीत होता है?

सघमित्रा होता है सम्राट। उसको सुनकर मनुष्य जीवन से डरना सीखता है।

अशोक (व्यग्य से) शब्दों का मायाजाल। वही शब्दों का मायाजाल। सघमित्रा जो जीवन से डरेगा वह विजयी कैसे?

सघमित्रा जैसे सम्राट जीते हैं। जैसे सम्राट के सैनिक जीते हैं।

अशोक सम्राट यानी जैसे मैं जीता हूँ। सघमित्रा तुम भी उन बौद्धों से हेल मेल बढ़ाने लगी हो। तभी यह रहस्यमयी भाषा बोलती हो। (सहसा धीमे स्वर में) बन्दी भी कुछ इसी प्रकार कहता था।

सघमित्रा (उत्सुक होकर) बन्दी क्या कहता था सम्राट?

अशोक वह कहता था कि तुम कैसे वीर हो जो एक बन्दी का सिर भी नहीं झुका सके। खोपडी ठुकराने के लिए तो श्मशान में अनेक गीदड घूमा करते हैं। जो कुछ तुम आज कर रहे हो एक दिन उसके लिए रक्त के आसुओं से तर्पण करोगे। तुम्हारी अपनी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी। अपने हृदय की आग में तुम्हें जलना होगा। (सहसा हँसता है) लेकिन यह
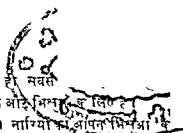
सब वाग्जाल है। भुजबल ही सबसे
और आत्मा की बाते नारी और भिक्षु के लिए है।

संघमित्रा (हँसकर) धन्यवाद भैया। नारियों को आपने भिक्षुओं के समकक्ष माना। लेकिन एक बात पूछूँ?

अशोक (अनमना सा) बात पूछने को तो आज मेरा भी मन करता है।

संघमित्रा आपका मन बात पूछने को करता है? तो फिर पूछिये न? मैं तो सदा आपको तंग करती ही रहती हूँ। आप क्या पूछना चाहते है?

अशोक कुछ नही संघमित्रा कुछ नही। तुम पूछो।

संघमित्रा नही सम्राट, आप ही पूछिये।

अशोक पूछूँ?

संघमित्रा अगर मुझे किसी योग्य समझते हो तो पूछो।

अशोक नही यह बात नही है संघमित्रा। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि किसी का वध करने की कोई और रीति नही होती?

संघमित्रा समझी नही सम्राट। और रीति से आपका क्या आशय है?

अशोक जिसका वध करना हो उसके प्राण न निकले और वह मर जाय।

संघमित्रा नही भैया। मैं ऐसी कोई रीति नही जानती। जो शस्त्र धारण करता है वह जान भी नही सकता।

अशोक अच्छा जाने दो। यह कहो संघमित्रा, शस्त्र धारण करने वाला क्या कायर होता है?

संघमित्रा नही तो। आपको अचानक यह क्या होने लगा? आप ऐसे प्रश्न क्यो पूछते हैं?

अशोक नही नही मुझे कुछ नही हुआ। ऐसे ही कुछ याद आ गया था। कोई बात नही। बात यह है कि हम अब शीघ्र सिंहल विजय के लिए चलेंगे।

संघमित्रा सच? मैं भी चलूँगी। सुना है, बहुत सुन्दर देश है और हम है सौन्दर्य के उपासक। उसे चाट जानेवाले। (हँसती है)

अच्छा मैं रेवा को भेजती हूँ, आप थक गये होंगे।

अशोक नहीं नहीं संघमित्रा। मैं गाना सुनना नहीं चाहता। मैं अब कभी गाना नहीं सुनूँगा।

संघमित्रा (गौर से देखकर) आप गाना नहीं सुनेंगे ? क्या क्या हुआ ?

अशोक कुछ नहीं संघमित्रा। हुआ तो कुछ नहीं नन्दिनी जब रेवा गाती है तो न जाने क्या मुझे युद्धभूमि का दृश्य दिखायी देने लगता है। मैं उसके मादक संगीत में घायलों का चीत्कार सुनता हूँ। मेरे कानों में उस समय बन्दियों की करुण पुकार गूँज उठती है। (उद्विग्न होकर) संघमित्रा, युद्ध में इतने आदमी मरते क्यों हैं ? युद्ध होते क्यों हैं ?

संघमित्रा आप निश्चय ही अस्वस्थ हैं सम्राट। आपका मन त्रस्त है। आपको संगीत की आवश्यकता है। मैं अभी रेवा को भेजती हूँ। (जाती है)

अशोक (पूर्ववत् उद्विग्न) क्या इतने आदमी मरते हैं ? क्या इतना रक्त बहता है ? बन्दी कहता था कि मैंने माँ वसुन्धरा को उसका उसके बेटों का रक्त पीने के लिए विवश किया है। कोई अपने बेटों का रक्त पीता है ? क्या संघमित्रा ? (दृष्टि उठाकर देखता है) संघमित्रा चली गयी। महामात्य कहते थे कि यह कलिंग के राजकुमार की बड़ी प्रशंसा कर रही थी। उसकी प्रशंसा तो मैंने भी की है। उस दिन आखेट में उसका हस्तलाघव देखा। इस महानाश में उसका अदम्य साहस देखा। मैं चाहता तो उसी क्षण उसका सिर काट देता लेकिन साहसी मनुष्य को सामने पाकर मौत भी अपना काम भूल जाती है। उसका साहस अंगद के पैर के समान मेरे क्रोध के सामने डटा रहा। उसने मुझे चुनौती दी। बस एक बन्दी का सिर नहीं झुका सके सच मैं एक बन्दी का सिर नहीं झुका सका। मैं जिसके इंगित पर लक्ष लक्ष सिर पैरों को चूमते हैं जिसकी भृकुटि पर काल काँप उठता है जिसकी क्रोध की ज्वाला में सम्पूर्ण विश्व भस्म

हो सकता है वह एक सिर नहीं झुका सकता। (दीर्घ निश्वास) संघमित्रा कहती थी शौर्य तलवार में नहीं होता। शायद वह ठीक कहती थी। तभी तो मैं जीते जी उसका सिर नहीं झुका सका। उसका सिर काटकर मैं उसे ठुकराना चाहता था (राधागुप्त का प्रवेश) कौन?

राधागुप्त सम्राट् क्षमा करें। एक बौद्ध भिक्षु आपसे मिलना चाहते हैं।

अशोक बौद्ध भिक्षु को रहने दो। मैं तुमसे पूछता हूं, कुमार यही कहता था न कि मैं एक बंदी का सिर नहीं झुका सका।

राधागुप्त वह कुमार की धृष्टता थी। उसी का दण्ड उसे भुगतना होगा। उषा की प्रथम किरण के साथ उसका सिर आपके चरणों में लोटेगा।

अशोक यही तो वह कहता था। मैं जीते जी उसका सिर नहीं झुका सका। अब उसके कटे हुए सिर को ठुकराना चाहता हूँ। कटे हुए सिर को कौन ठुकराता है महामात्य?

राधागुप्त सम्राट् आज बहुत उद्विग्न दिखायी देते हैं। चित्त शायद ठीक नहीं है। देवी कहाँ है?

अशोक जाने दो देवी को राधागुप्त। मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि क्या मैं जीवित व्यक्ति का सिर नहीं झुका सकता? क्या मुझे उसका सिर काटना ही होगा?

राधागुप्त जो भारत सम्राट की आज्ञा नहीं मानता, उसका सिर काटा ही जाता है।

अशोक लेकिन महामात्य आज्ञा तो वह फिर भी नहीं मानेगा।

राधागुप्त यदि वह आज्ञा मान लेता तो उसे दण्ड दिया ही क्यों जाता?

अशोक दण्ड। यही तो संघमित्रा कहती थी कि शौर्य तलवार में नहीं होता हृदय में होता है। क्या महामात्य, हृदय भी क्या दण्ड दे सकता है? उसमें इतनी शक्ति है?

राधागुप्त हृदय की शक्ति को मैं नहीं जानता देव। मैं शासन की शक्ति को जानता हूँ जो दण्ड देने की अधिकारिणी है और जानता हूं संगीत की शक्ति को जो मन की उद्विग्नता को

दूर करके निर्णय करने की क्षमता पैदा करती है। मैं अभी रखा को बुलाता हूं। (जाने को मुड़ता है। उसी क्षण प्रहरी लड़खड़ाता हुआ वहाँ प्रवेश करता है। वह घायल है)

प्रहरी सम्राट की जय हो

अशोक यह तुमको क्या हुआ प्रहरी? क्या अभी युद्ध बंद नहीं हुआ है?

प्रहरी मनुष्यों का युद्ध तो बंद हो चुका सम्राट अब पशुओं का युद्ध आरम्भ हुआ है। युद्धभूमि क्षतविक्षत शवों से पटी पड़ी है। गिद्ध और गीदड़ उन्हीं पर आक्रमण करते हैं। घायलों को उनसे बचाने के लिए हमें युद्ध करना ही पड़ता है।

अशोक तो अब हम पशुओं से युद्ध करना होगा। (हँसता है) ठीक है कलिंग में अब मनुष्य रह ही कहाँ, जो हमसे युद्ध करें? यही तो संघमित्रा कहती थी

प्रहरी सम्राट क्षमा करें। द्वार पर एक भिक्षु आपसे मिलने के लिए उतावले हो रहे हैं। वे कलिंग के राजकुमार से भेंट करना चाहते हैं।

राधागुप्त हां सम्राट वे कहते हैं कि वे शायद कुमार को आपकी अधीनता स्वीकार करने पर राजी कर लें।

अशोक (प्रहरी से) बौद्ध भिक्षु को सादर यहाँ लिवा लाओ।

प्रहरी जो आज्ञा। (जाता है)

अशोक (हँसता है) महामात्य! यह कैसी विडम्बना है जो काम मैं नहीं कर सकता उसे शस्त्र कर सकते हैं भिक्षु कर सकते हैं। नहीं महामात्य, मैं वह शक्ति चाहता हूं जिसके द्वारा बन्दी का सिर झुका सकें। क्या वह शक्ति मुझे मिल सकती है? (प्रहरी के पीछे भिक्षु उपगुप्त का प्रवेश)

प्रहरी सम्राट की जय हो। भिक्षु उपगुप्त पधारे हैं।

अशोक प्रणाम करता हूं भन्ते। मुझे मालूम हुआ है कि आप कलिंग के राजकुमार से बन्दीगृह में मिलना चाहते हैं और उसे

मगी अधीनता स्वीकार करन के लिए गाजी करना चाहत ह। मैं यह जानना चाहता हूँ कि जा काम मैं नहा कर मक्ता आप कसे कर सकत है ? क्या मैं कुमार क दण्ड पर फिर स विचार नही कर सकता ?

राधागुप्त सम्राट आप सब कुछ कर मकन है, परन्तु आपको अपने पद की मयादा को समझ लना चाहिए।

अशोक यह तुमने क्या कहा महामात्य ? मुझे अपन पद की मयादा का समझ लना चाहिए। मैं सम्राट हू किसी का ब दी नही हू।

उपगुप्त सम्राट जब तक व्यक्ति अपन लिए जीता है तब तक वह बन्दी ही रहता है। आकाक्षा की परिधि सीमित है पर तु उसकी प्यास बडी भयकर होती है। मकडी के जाल क समान उसम फसकर कोई भी जीवित नही रहता।

अशोक मकडी क जाल क समान उसम फसकर काइ भी जीवित नही रहता ? शायद आप ठीक कहत है लेकिन भ न ! क्या काइ ऐसी शक्ति हाती है जा जिना नाश क विरोधी का पराजित कर सक ?

उपगुप्त किसी का पराजित करन की भावना ही मनुष्य की सबस बडी दुबलता है महाराज।

अशोक (उद्विग्न होकर) किसी का पराजित करन की भावना ही मनुष्य की सबस बडी दुबलता है। किसी का पराजित करन की भावना

उपगुप्त सम्राट रात बीत रही है। क्या मैं प्रभात की पहली किरण म पूव

अशोक रात बीत रही है। भन्त, आपन कितनी सुन्दर बात कही है। रात बीतती है तभी प्रभात हाना है।

उपगुप्त लकिन आज का प्रभात किसी की मत्यु का सन्देश लकर आ रहा है सम्राट।

अशोक आप कलिंग क राजकुमार की बात कर रह हैं भन्त ?

आपको उसके लिए कुछ भी नहीं करना होगा। मैं उसे क्षमा कर दूगा।

राधागुप्त (तीव्र स्वर मे) नही यह नही हो सकता। सूर्य की पहली किरण के साथ कलिंग कुमार का सिर आपके चरणो मे लोटेगा। तभी कलिंग विजय पूर्ण होगी।

अशोक नहीं महामात्य! यदि मैं सम्राट हू तो मुझे अपना आदेश वापिस लेने का अधिकार भी है।

राधागुप्त सम्राट जो आदेश आपने दिया है, उसे वापिस लेने का अधिकार इतना सरल नहीं है। वह साम्राज्य की प्रतिष्ठा का प्रश्न है शक्ति का प्रश्न है शासन की मर्यादा सुरक्षित रखने का प्रश्न है।

अशोक शासन की मर्यादा। इस मर्यादा का अर्थ क्या है? क्या इसका यही अर्थ है कि हम अपने ही आदेश के बन्दी हो? नहीं मैं इस आदेश को स्वीकार नहीं करता। मैं जीवित मानव को अपने अधीन करना चाहता हू। शस्त्रबल से नही तो हृदय के बल पर ऐसा करूगा। हृदय की शक्ति का दूसरा नाम है क्षमा। भन्ते! आप इसी क्षण बन्दीगृह मे जाकर कलिंग के युवराज को उसकी मुक्ति का समाचार दे सकते है। कुछ ही देर मे मैं भी वही आने वाला हू। (प्रहरी से) प्रहरी भिक्षु उपगुप्त को अभी बन्दीगृह मे ले जाओ और चण्डगिरि से कहो कि पहला आदेश स्थगित किया जाता है। वह मेरे आने की राह देखे।

प्रहरी जो आज्ञा सम्राट। आइये भन्ते इधर से।

उपगुप्त चलो। मैंने इतना नही सोचा था। (सम्राट से) सम्राट का कल्याण हो। बन्दीगृह मे राह देखूगा। (जाता है)

अशोक राधागुप्त तुमको विश्वास नहीं आ रहा। लेकिन तुम नहीं जानते कि मै कलिंग कुमार को पराजित करना चाहता हू। लेकिन वह पराजय

राधागुप्त जय और पराजय। मैं केवल इतना ही जानता हू कि इस

समय सम्राट ने जो कुछ किया है वह उचित नहीं है।

अशोक (हँसता है) राधागुप्त इस समय मैं तुमसे विवाद करना नहीं चाहता। यह उचित हो या अनुचित परन्तु मुझे लग रहा है कि यदि मैं ऐसा न करता तो पागल हो जाता। इस समय मैं देवी कारुवाकी के शिविर में जा रहा हूँ। सघमित्रा यदि दिखायी दे तो उसे वहीं भेज देना। कुछ ही समय में मैं बन्दीगृह में पहुँच जाऊँगा। (प्रहरी से) प्रहरी हमें मार्ग दिखाओ। (आगे आगे प्रहरी और उसके पीछे अशोक बाहर चले जाते हैं। राधागुप्त चिन्तित अवस्था में क्षण भर वहीं खड़े खड़े अशोक को जाते देखते हैं। फिर वे भी तेजी से चले जाते हैं। दोनों ओर से दो प्रहरी प्रवेश करते हैं)

प० प्रहरी गिद्धों और गीदड़ों को भगाते भगाते मैं बुरी तरह थक गया हूँ। मनुष्य से युद्ध किया जा सकता है लेकिन जानवर तो कुछ सोचते ही नहीं।

दू० प्रहरी वह देखो आकाश में गिद्धों की सेना कैसे मडरा रही है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि युद्ध का सचमुच अन्त आ पहुँचा।

प० प्रहरी सुना तो मैंने भी है कि सम्राट राजकुमार को क्षमा कर देंगे लेकिन अगर क्षमा ही करना था तो इतना बड़ा मरण त्योहार क्यों मनाया? इतनी बड़ी दानवी लीला किसलिए?

दू० प्रहरी सम्राटों की माया कौन जानता है? एक क्षण वे रक्त और ज्वाला की भाषा बोलते हैं तो दूसरे क्षण मनन विराग का राग छेड़ देते हैं।

प० प्रहरी सम्राट महत्त्वाकांक्षी होते हैं। वे विजय चाहते हैं। किसी भी शर्त पर विजय। इस महानाश को देखकर हमारे सम्राट डर गये। सुना है, अब ये हृदय के माध्यम से विजय प्राप्त करना चाहते हैं।

दू० प्रहरी युद्ध और हृदय। हृदय और युद्ध। हमारी नियति तो आदेश

का पालन करना ही है। आज गिद्धों को उड़ाते हैं कल उन्हीं की सेवा करेंगे जिनको हमने मारा था। बीते कल हमने तलवार उठायी थी, आने वाले कल शायद हम भिक्षु उपगुप्त से शिक्षा ग्रहण करने का आदेश मिले।

प० प्रहरी हम तो आदेश पालन करना है।

दू० प्रहरी सम्राटों के शासन में आदेशों का पालन करना ही मनुष्यों की नियति है। (दोनों उसी प्रकार घूमते और बातें करते रहते हैं—और पर्दा गिर जाता है)

स्वराज्य की नीव

पात्र

लक्ष्मीबाई
जूही
मुन्दर
रघुनाथराव
तात्या
सेनानायक

(रंगमंच पर युद्धभूमि का प्रतीकात्मक दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैम्प कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तम्बू का एक भाग दिखायी देता है। पर्दा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्तो के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

लक्ष्मीबाई मेरे देखते देखते क्या से क्या हो गया जूही। झाँसी, कालपी ग्वालियर कहाँ से कहाँ पहुँच गयी। परन्तु मंजिल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ परन्तु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय आ जाता है। उसे पार करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं। सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है और राव साहब हैं कि रक्तमण्डल की छाया में ऐशोआराम में मशगूल

हैं। नाच गान म दिल बहला रह है। ब्राह्मण भाजन म ही अपनी मुक्ति ढून्त है। भाँग का नशा ही उनक लिए विजय का नशा है। (आवश मे आते आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने क लिए मुह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती हैं) जूही जूही, मैंन प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नही दूगी। लकिन झाँसी हाथ म निकल गयी। (अत्यन्त धीमे स्वर मे) झाँसी हाथ मे निकल गया जूही। (सहसा तीव्र होकर) नही, नही, झाँसी हाथ म नही निकली। मैं अपनी झाँसी नही दूगी। मैं झाँसी लकर रहूगी। मैं अकेला हूँ लकिन उसमे क्या। मैं अकेली ही झासी लेकर रहूँगी।

जूही कौन कहता है आप अकली हैं महारानी। आप तो गीता पढती ह। फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाइ मैं निराश नही हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूगी लेकिन क्या तुम नही जानती कि उस दिन बाबा गगादास ने मुझम क्या कहा था? जब तक हमारे समाज म छूतछात और ऊच नीच का भेद नही मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोडकर जनसवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नही मिल सकता वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।

जूही लकिन महारानी उन्होने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति म बढकर है स्वराज्य की स्थापना क लिए भूमि तयार करना स्वराज्य की नीव का पत्थर बनना। जिस प्रकार फल और फूल अपने रस और सौन्दर्य क लिए वृक्ष की जड पर निभर करते है उसी प्रकार भवन का अस्तित्व उसकी नीव पर ही है। सफलता और असफलता दव क हाथ म ह। लकिन नीव क पत्थर बनने से हम कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाइ (मुस्कराकर) शाबाश मेरी कनल! तुम लोगों से मुझ यही

आशा है। जिस स्वराज्य का बीज तुम जसी नारियाँ वनन जा रही हैं वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल म आता है या नहीं आता लेकिन मुझे इस बात का दुख अवश्य है कि हमारे पास शक्ति है लकिन फिर भी हम दुबल हैं। हमारे पास तात्या जस सेनापति हैं लेकिन फिर भी हमारी सेना म अनुशासन नहा है। हमारे पास ग्वालियर का किला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों ? जानती हो क्या ?

जूही जानती हू महारानी ! हम विलासिता म डूब गये हैं।

तभी मुस्कराती हुई मुन्दर वहाँ प्रवेश करती है।

मुन्दर कौन कहता है कि हम विलासिता म डूब गये हैं ? विलासिता म डूबे हैं राव साहब। दादा के नवाब, सेनापति तात्या।

जूही (सहसा) नहीं, नहीं मुन्दर। सेनापति नहीं।

मुन्दर (मुस्कराती हैं) आह समझी। तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।

जूही (दृढ स्वर में) मैं उनका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरकार तात्या, राव साहब को अपने तन मन का स्वामी मानते हैं।

मुन्दर और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।

जूही हाँ मैं उनको अपना स्वामी मानती हू और मानती रहूँगी। लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हू और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हू। इसके लिए म सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ। ठुकरा चुकी हूँ।

मुन्दर (सकपकाकर) जूही तू तो नाराज हो गयी। मेरा यह मतलब नहीं था। म तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तुमने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो रोकती क्यों नहीं ?

लक्ष्मीबाई जूही ने उन्हें रोका है मुन्दर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को गये थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।

जूही हां रानी मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूं। बराबर नाचती रही हूं परन्तु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फांसी नहीं बना सकती। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।

लक्ष्मीबाई (दीर्घ निःश्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें काट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात ही क्या थी?

जूही बाई साहब मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिये मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।

मुन्दर और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।

लक्ष्मीबाई नहीं मुन्दर नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकर ही उनको उस नींद से जगा सकती है।

जूही दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?

लक्ष्मीबाई हां जूही दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती है। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं। क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरी नहीं उठेगी।

मुन्दर बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी चमक उठेगी। श्रीखण्ड और लड्डुओं पर जान देने वाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर

उठता है)

जूही (चौंककर) महारानी महारानी आपने कुछ सुना ?

लक्ष्मीबाइ (मुस्कराकर) सुना य तोपो का स्वर है जूही।

मुदर लेकिन फिरगी के तापा का स्वर। फिरगी आ गये है।

लक्ष्मीबाइ मैं जानती थी कि व आयेंगे। तुम जल्दी जाओ और अपनी सना का देखा। रघुनाथराव स कह दो कि कूच के लिए तैयार रह। किसी भी क्षण आवश्यकता पड सकती है।

मुदर जा आना। (जाती है)

लक्ष्मीबाई और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरत उन्ह यहाँ आने क लिए कह दे।

जूही खोज क्या नही सकती ? आपकी आना होने पर मैं उन्ह पाताल स भी खीचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुडती है कि रघुनाथराव तेजी से प्रवेश करते हैं)

रघुनाथराव महारानी आपन सुना।

लक्ष्मीबाइ क्या रघुनाथ ?

जूही क्या हुआ सरदार ?

रघुनाथराव महारानी जनरल रोज की सेना न मुरार म पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही (कांपकर) क्या पेशवा की सेना हार गयी ?

लक्ष्मीबाई पेशवा की सेना हार गयी यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखे खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होन की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का किला नही ले सकेगा।

रघुनाथ मैं जानता हूँ वह कभी नही ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच क लिए तयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देन क लिए आया था। (जाता है)

लक्ष्मीबाई और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे है।

जूही (बाहर देखकर) जी हाँ य तो सरदार तात्या ही है।

सरदार तात्या का प्रवेश।

खुली है आप लोगों की। मैंने बार बार समझाया पर आपने नहीं सुना। ग्वालियर का किला क्या जीत लिया मानो सारे हिन्दुस्तान को जीत लिया। उस जीत के नशे में तुम भूल गये कि वह किला हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं था। वह पाने का एक साधन मात्र था। तुम साधन को लक्ष्य समझ बैठे। तुम्हारा त्याग, तुम्हारी तपस्या, तुम्हारा बलिदान, सब व्यर्थ साबित हुए।

तात्या (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूं कब तक फटकारती रहेंगी?

जूही सरकार, इस बार इनको माफ कर दीजिए।

लक्ष्मीबाई तू कहती है अच्छा। लेकिन (सुन्दर का प्रवेश)

सुन्दर सरकार, सेना तैयार है।

लक्ष्मीबाई तो मैं भी तैयार हूं। तात्या, तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई लेकिन आज हम देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बतायेंगी, उसी पर चलूंगा।

लक्ष्मीबाई तो जाओ ब्राह्मणों को विदा कर दो। लड्डुओं और श्रीखण्ड की फिक्र छोड़ो। तलवार संभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ रागरंग। याद रखो हम स्वराज्य लेना है। हम रणभूमि में मौत से जूझना है।

तात्या महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूं।

लक्ष्मीबाई जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों को दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या — ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई — तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत या हार मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं। चिन्ता केवल इस बात की है हमारी वीरता कलंकित न होने पाय।

तात्या — बाई साहब! वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए प्रणाम।

लक्ष्मीबाई — प्रणाम तात्या। मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ देर न लगाना। (तात्या चला जाता है)

मुन्दर — सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।

जूही — और मैं तोपखाना सम्हालूँगा।

लक्ष्मीबाई — और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। हर हर महादेव। (तीनों हर हर महादेव का उदघोष करती हैं। पृष्ठभूमि में यही उदघोष उभरकर आता है जो मंच पर प्रकाश के धुंधलाते न धुंधलाते सब कहीं छा जाता है। फिर धीरे धीरे शांति छाने लगती है। प्रकाश उभरने लगता है और पृष्ठभूमि में गीतापाठ का स्वर उठता है। एक क्षण बाद अट्टहास करती हुई जूही मंच पर प्रवेश करती है। पीछे मुन्दर है)

मुन्दर — अरे जूही तू इतना क्या हँस रही है?

जूही — मुझे कल की बात याद आ रही है मुन्दर। हमारा पठान सरदार कैसा चिल्ला चिल्लाकर लड़ता है। हमारा वार मुलाहिजा करो। हमारा वार मुलाहिजा करो। और उस स्मिथ की सेना ने बार बार फाटक पर हमला किया परन्तु हर बार उसे पीठ दिखाना पड़ा। बाई साहब तो बस मुन्दर साक्षात दुर्गा के समान दिखाई दे रही थीं। इधर उधर यहाँ वहाँ सब कहीं बाई साहब। मैं तो एक बार घबरा

गयी थी।

मुंदर (व्यंग्य) और तुम्हें सरदार तात्या भी तो दिखाई दिये होंगे।

जूही (मुक्त भाव से) हट पगली। उनको देखने के लिए भी क्या नजर उठाने की जरूरत है। वह तो दिल का सौदा है। लेकिन मुझे ।। मुंदर यह सिर का सौदा दिल के सौदे से बड़ी मजेदार मालूम होता है। जब रानी की आज्ञा पाकर मैंने तोप का मुंह एक अंगुल नीचा करके मार शुरू की तो फिरंगी ऐसे बिछ गये जैसे बरसात में पनाले कीड़े-मकोड़े बिछ जाते हैं।

मुंदर लेकिन इसमें तो इतना हंसने का कोई कारण नहीं है।

जूही क्या नहीं है? सरदार की तोपों की मार में फिरंगी पीठ दिखा दें और मुझे हँसी न आये? स्वराज्य की लड़ाई में हम एक मंजिल और आगे बढ़ जाएं और उस पर भी मैं हँस न सकूं? मुंदर तू भी हँस। जोर से हंस पगली। देख आज तो आकाश भी हंस रहा है। धरती भी हँस रही है। पेड़ पौधे फूल पत्तियां पशु पक्षी सभी हंस रहे हैं।

जोर से हंसती है। मुंदर भी हंस पड़ती है।

मुंदर तू तो पागल हो गई है। तुझे अपने सरदार पर बड़ा गर्व है, लेकिन सिपाही को क्या इस तरह हंसना चाहिए?

जूही नाचकर देखूंगी।

मुंदर तुमसे बात करना बेकार है। अच्छा क्या बाई साहब गीता पाठ कर चुकी होंगी? **(लक्ष्मीबाई का प्रवेश)**

लक्ष्मी कर चुकी मुंदर। मैं तैयार हूं। तूने सबको सूचना दे दी है न? और घोड़ा ले आई?

मुंदर बस वहीं जा रही थी कि इस पगली की हँसी ने मुझे रोक लिया। अब जाती हूं। इसे आप संभालिए। **(मुंदर जाती है)**

बाई **(जूही के कंधे पर हाथ रखकर)** तू इतना क्यों हंस रही

थी ? सिपाही को इतना नहीं हँसना चाहिए ।

जूही — मुन्दर जितनी समझ तो मुझमें है नहीं बाई साहब। पर इतना जरूर जानती हूँ कि हँसने में मौत का डर दूर हो जाता है ।

लक्ष्मीबाई — सच ? तब तो मुझे भी हँसना चाहिए ।

जूही — जरूर हँसना चाहिए बाई साहब । और आज तो हम स्वराज्य लेना है या उसकी नींव का पत्थर बनना है । बीच का कोई रास्ता नहीं ।

लक्ष्मीबाई — हाँ जूही अब तो इधर या उधर ।

जूही — क्षमा करें बाई साहब । एक बात पूछूँ ?

लक्ष्मीबाई — तुझे भी पूछने के लिए क्षमा माँगनी पड़ेगी ?

जूही — मैं मौत से नहीं डरती लेकिन आपके चेहरे पर फैली हुई इस उदासी को देखकर जरूर डर लगता है । आप उदास क्यों है ?

लक्ष्मीबाई — नहीं नहीं मैं उदास नहीं हूँ लेकिन

जूही — लेकिन क्या ? क्या आपको ग्वालियर की सेना पर विश्वास नहीं ? क्या आपको डर है कि वह सिंधिया महाराज और फिरंगियों की तरफ चली जायगी ।

लक्ष्मीबाई — हो सकता है कि जियाजीराव की घोषणा का असर उस पर हो और वह

जूही — नहीं नहीं बाई साहब ! सरदार ने हमें पक्का विश्वास दिलाया है और उनके सेनानायक भी अभी यहीं आने वाले हैं ।

लक्ष्मीबाई — जानती हूँ और उनके चले जाने से मैं डरती भी नहीं । डरने से हो भी क्या सकता है ? जो कुछ है उसी को लेकर मुझे लड़ना है । लेकिन मैं इतना निश्चित रूप से जानती हूँ कि तुझे आज अपने पूरे जौहर दिखाने है ।

जूही — आशीर्वाद दीजिए बाई साहब कि आपकी यह जूही मौत से कभी नहीं डरे । (कहते कहते ग्रीवा तान लेती है)

लक्ष्मीबाई — जूही जो हसना जानते है मौत उनको कभी नही डरा सकती वह उनको प्यार कर सकती है। (बाहर देखकर) अरे वह कौन आ रहा है? शायद सेनानायक है। तू उन्हे आदरपूर्वक यहाँ ले आ।

जूही — जो आज्ञा (जाती है। रानी एक क्षण बाहर की ओर देखती है फिर बोल उठती है)

लक्ष्मीबाई — आओ आओ सेनानायक। (सेनानायक का प्रवेश। वह प्रणाम करता है। जूही मुस्कराती है)

सेनानायक — सेनापति तात्या ने मुझे बताया कि हमारी सेना के सम्बन्ध मे आप विश्वस्त नही है। मैं आपसे यही निवेदन करने आया हूँ कि सिंधिया महाराज की घोषणा का हमारी सेना पर उलटा ही असर हुआ है। उन्होंने आपके साथ मरने और जीने का निश्चय कर लिया है।

लक्ष्मीबाई — नही, नही मुझे कोई शंका नही है। मै आप पर पूरा विश्वास करती हूँ। स्वराज्य की लडाई मे आप कैसे पीछे रह सकते है?

जूही — हा सरकार सेनानायक तात्या का हर प्रकार सहायता करेंगे। मै इन्हे तब से जानती हूँ जब मैं नर्तकी के रूप मे सेना मे घूमा करती थी।

सेनानायक — (हँसकर) महारानी हमारे देश की नारी अब जाग उठी है। विजय हमारी है। आप चिन्ता न करें। आपकी आज्ञा का पालन होगा।

लक्ष्मीबाई — मैं जानती हूँ लेकिन तुम्हे सेनापति तात्या के साथ रहना होगा। उनकी योजना के अनुसार काम करना होगा।

सेनानायक — ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई — मुझे तुम पर भरोसा है।

सेनानायक — महारानी की कृपा है। जाने की आज्ञा चाहता हूँ। प्रणाम।

सेनानायक जाता है।

जूही — क्षमा करें बाई साहब। मैं इतना विश्वास नही कर सकती

थी, जितना आप करना चाहती हैं।

लक्ष्मीबाई (मुस्कराकर) मुझे उसका ध्यान है मेरे कनल। अच्छा तू अब सरदार का लड़का कल वाली बात की याद तो दिला।

जूही कौन सी बात की बाई साहब ?

लक्ष्मीबाई यही कि कोई ऐसी बात हो तो उन्हें सेना लेकर निकल जाना चाहिए और स्वराज्य की लड़ाई जारी रखनी चाहिए।

जूही क्षमा करें बाई साहब। आप बार बार उन अशुभ परिणामों की कल्पना क्या करती हैं ?

लक्ष्मीबाई सैनिक के लिए शुभ और अशुभ कुछ नहीं होता। उसे सब कुछ की कल्पना करनी पड़ती है, क्योंकि उसका लक्ष्य शहीद होना ही नहीं है, जय पाना भी है। मैं तो कहूंगी जय पाना ही उसका लक्ष्य है।

जूही समझ गयी बाई साहब। अभी जाती हूँ। (जाती है लक्ष्मी एक क्षण उसको जाते देखती है और फिर मुस्करा उठती है)

लक्ष्मीबाई कैसी सरल कैसी वीर बाला है ? एक मुंदर है मानो वीरता की साक्षात मूर्ति हो। एक यह जूही है कि डर भी जिससे स्वयं डरता है। क्या इनके रहते हुए हमारी पराजय हो सकती है ? क्या तात्या के रहते भी हम हारना पड़ेगा ? काश, सिंधिया महाराज हमारा साथ दे सकते। काश स्वराज्य की आग उनके दिल में भी धधक सकती।

मुंदर का प्रवेश।

मुंदर बाई साहब, घोड़ा ले आई हूँ। आइए देख लीजिए।

लक्ष्मीबाई चलो। (दोनों द्वार के पास आती हैं) जानवर देखने में सुंदर है। (एक क्षण के लिए बाहर निकल जाती है। मुंदर वहीं दीवार का सहारा लिए खड़ी रहती है। लक्ष्मीबाई दूसरे क्षण ही लौट आती है) मुंदर घोड़ा सचमुच सुन्दर है परन्तु अन्तवन का जीव जान पड़ता है। ऐसे जीव

कभी कभी युद्धभूमि में अड़ जाया करते हैं लेकिन कोई चिन्ता नहीं। अब तुम दामोदर को देखो। उसे खिलापिला कर रामचन्द्र की पीठ पर बाँध देना। और हाँ रघुनाथ कहाँ है?

मुन्दर — वे सब इधर ही आने वाले थे। लीजिए वे आ भी गये। आइये आइये, आप लोग इधर आइये। (उसी क्षण रघुनाथ राय, रामचन्द्र तथा दूसरे कई सरदार मंच पर आकर लक्ष्मीबाई को प्रणाम करते हैं)

लक्ष्मीबाई — मैं अभी आप लोगों की चर्चा कर रही थी। आप सब तैयार हैं न?

रघुनाथराव — जी महारानी जी। हमने अपने अपने मोर्चों पर प्रबन्ध कर लिया है।

लक्ष्मीबाई — रामचन्द्र, आज तुम दामोदर को अपनी पीठ पर बाँध लेना। अगर कहीं मैं वीरगति पाऊँ तो

रामचन्द्र — ऐसा न कहें महारानी जी। जीत हमारी ही होगी।

लक्ष्मीबाई — मैं भी ऐसा ही मानती हूँ। मानना भी चाहिए लेकिन फिर भी सेनापति को सभी स्थितियों के लिए तैयार रहना आवश्यक है। इसलिए मेरे मर जाने पर तुम दामोदर को दक्षिण ले जाना। स्वराज्य की लड़ाई समाप्त नहीं होनी चाहिए।

मुन्दर — स्वराज्य की लड़ाई स्वराज्य मिलने पर ही समाप्त हो सकती है बाई साहब।

लक्ष्मीबाई — तभी तो कहती हूँ कि हम केवल नाक के नीचे ही न देखना चाहिए।

रामचन्द्र — आपकी आज्ञा का पालन होगा महारानी जी।

लक्ष्मीबाई — और रघुनाथ तुम्हें इस बात का ध्यान रखना होगा कि फिरंगी मेरी देह को छून न पाए।

मुन्दर — बाई साहब आप बार-बार मरने की ही बात क्यों करती हैं?

रघुनाथराव — सावधान मुन्दर। सिपाही को व्याकुल नहीं होना चाहिए। महारानीजी ! विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी पवित्र देह को छूने का साहस केवल पवित्र अग्नि ही कर सकेगी।

मुन्दर — बाई साहब मेरी भी एक प्रार्थना सुन लीजिये। जीते जी सदा आपके साथ रही मरने पर भी आपके साथ ही रहना चाहती हूँ।

लक्ष्मीबाई — ऐसा ही होगा। ला, हम सबको शर्बत पिला, हम सब चलें।

मुन्दर — अभी लाती हूँ बाई साहब। (जाने को मुड़ती है कि सहसा बिगुल बज उठता है)

लक्ष्मीबाई — लो फिरंगी का बिगुल बज उठा। शर्बत रहने दो मुन्दर। अब तो वीरता का शर्बत हमारी राह देख रहा है। चलो, दुश्मन से छीनकर हम उस पर अधिकार करेंगे। हरहर महादेव। (सभी हर हर महादेव पुकारते हैं। सहसा जूही दौड़ती हुई आती है)

जूही — सरकार युद्ध आरम्भ हो गया। सरदार तात्या ने उत्तर दिया है कि आपकी आज्ञा का अक्षर अक्षर पालन होगा। हर हर महादेव। (सभी लोग हर हर महादेव का स्वर घोष करते हैं। मंच पर प्रकाश धुंधलाने लगता है। हर हर महादेव पुकारते हुए लोग आते हैं और जाते हैं। तोपों का गर्जन तीव्र होता है। मंच पर पूर्ण अंधकार छा जाता है। आवाजें उसी प्रकार उभरती रहती हैं। फिर प्रकाश उभरने लगता है। इसी समय ग्वालियर की सेना के सेनानायक एक सरदार के साथ वहाँ प्रवेश करते हैं)

सेनानायक — तुमने देखा हालत कितनी खराब है। महारानी किसी भी तरह नहीं जीत सकती। अब ग्वालियर की सेना को ग्वालियर के महाराज के साथ होना चाहिए। देशभक्ति का नाटक बहुत हो चुका।

सरदार — लेकिन सेनानायक।

सेनानायक — लेकिन वेकिन छोड़ो। अब तुम सेना को लेकर उधर चलो

जाओ। हम अब पहले से भी अधिक पुरस्कार मिलेंगे। (बाहर देखकर) लो, अब महारानी इधर ही आ रही है। तुम जल्दी इधर से निकल जाओ। (सरदार तेजी से बाहर जाता है। एक क्षण बाद महारानी आती है)

लक्ष्मीबाई — कौन सेनानायक ! तुम यहाँ कैसे आए ?

सेनानायक — महारानीजी मैं सरदार तात्या को ढूढ़ता हुआ इधर आ गया था। दुश्मन की मार बहुत तेज है।

लक्ष्मीबाई — कोई चिन्ता नहीं। हम भी तेज हैं। तुम सरदार को ढूढ़ कर कहो कि वे राव साहब की सहायता के लिए जाएँ। वे घिर गए हैं।

सेनानायक — मैं अभी उनसे कहकर स्वयं राव साहब की ओर जाता हूँ।

तेजी से जाता है। महारानी तम्बू के पीछे एक उचित स्थान पर जाकर खड़ी हो जाती हैं और नेपथ्य की ओर देखती हुई आवेग में पुकारती हैं।

लक्ष्मीबाई — शाबाश वीरो बढ़े चलो ! तुम्हारी तलवारों पर सूरज की किरण चमक रही हैं। तुम्हारे चेहरों पर विजय की ज्योति दमक रही है। तुम स्वराज्य की ओर बढ़ रहे हो। तुम्हारा हर कदम स्वराज्य की मंजिल को छोटा कर रहा है। तुम्हारे वीर पुरखा तुम्हारा अपूर्व युद्ध देखने के लिए आकाश में इकट्ठे हो रहे हैं। बढ़े चलो, बढ़े चलो हर हर महादेव।

मुन्दर तेजी से प्रवेश करती है।

मुन्दर — रानी साहिबा रानी साहिबा ग्वालियर की सेना दुश्मन से जा मिली।

लक्ष्मीबाई — (काँपकर) जा मिली। जो डर था वही हुआ। लेकिन कोई चिन्ता नहीं। तात्या को इस बात की सूचना दो और कहो कि तोपखाने को चलने वाले मार तेज करें।

मुन्दर — अभी जाती हूँ महारानी। (मुन्दर जाती है। कोलाहल तेज होता है। लक्ष्मीबाई पूर्ववत तेज स्वर में कहती है)

लक्ष्मीबाई वीरो सनिको, अच्छा हुआ जो व कायर हमस अलग हो गय। तुम उ ह बता दो कि स्वराज्य क वीर सनिक फौलाद की चट्टान की तरह होत हैं। शाबाश ! स्वग स दवता तुम्ह दख रह हैं। दश की लाज आज तुम्हार हाथो म है ! लाल कुर्ती क सैनिको अपनी तलवारो की चमक से दुश्मन की आखो को चौधिया दो !

मुदर का तजी से प्रवेश।

मुदर (कापकर) सरकार, सरकार जूही

लक्ष्मीबाई क्या हुआ जूही को ? क्या वह घायल हो गयी। उसकी मर हम पट्टी का प्रब ध हुआ ?

मुदर बाई साहब जही घायल नही हुइ। तलवार स लडती हुई वह सीधी स्वग चली गयी। दुश्मन के साँडनी सवारो की एक पूरी टुकडी उसक तोपखान पर जा टूटी और वह चारो ओर स घिर गयी। लेकिन वह तनिक भी तो नही घबराई। तलवार हाथ म लिए नाचती रही और हसती रही। शत्रु क सैनिक बहुत कीमत दकर उस स्वग भेज सक। पर तु उसकी हसी अभी भी युद्धभूमि म गूज रही है। प्राणो न उसका साथ छोड दिया, पर तु उसकी हसी अब भी उसके मुख पर नाच रही है। (सहसा मु दर जोर से हँस पडती है)

लक्ष्मीबाइ मुदर मुझे जूही पर गव है लकिन तू इतना क्यो हसती है ? क्या तू भी जान वाली है ? (रघुनाथ का तेजी से प्रवेश)

रघुनाथराव महारानी ! दुश्मन की पैदल सेना न पीछे स आकर हमला बोल दिया है। हम घिर गय है। सावधान ! (उसी तेजी से चला जाता है)

मुदर पीछे स हमला हो गया है। महारानी हम घिर गय है।

लक्ष्मीबाई (पास आकर) कोई चिन्ता नही। मै राव साहब की ओर जाती हूँ। तुम अपन मोर्चे पर जाओ। आज के दिन क

लिए ही हम सब जन्म लेते है। (तेजी से मुडती है कि तात्या मंच पर प्रवेश करते हैं)

तात्या (हाँफता हुआ) बाई साहब जो होना था हो चुका। अब कोई आशा नही।

लक्ष्मीबाई मैं जानती हूँ लेकिन तुम्हे अपना काम याद है?

तात्या याद है बाई साहब मैं आपको भी निकालकर ले जा सकता हूं। आप मेरे साथ चल।

लक्ष्मीबाई नही तात्या यह नही होगा।

तात्या तो मुझे अपने पास रहने की आज्ञा दीजिये।

लक्ष्मीबाई तात्या तुम भी दुबल हो। नही जानते कि स्वराज्य हम सबसे बडा है। इसलिए कलेजे पर पत्थर रखकर सेना को निकाल ले जाओ। आजादी के युद्ध की यह लौ कभी नही बुझनी चाहिए। यह मेरी आज्ञा है।

तात्या आपकी आज्ञा का पालन होगा बाई साहब। (तेजी से बाहर जाता है। पीछे पीछे लक्ष्मीबाई और मुन्दर भी जाती हैं। हर हर महादेव का युद्ध घोष तीव्र होता है। दो क्षणों के लिए मंच पर यही स्वर गूंजता रहता है। सैनिक लडते हुए इधर से उधर और उधर से इधर जाते हैं। तभी मुन्दर के साथ रघुनाथ वहाँ प्रवेश करते हैं)

रघुनाथ मुन्दर महारानी कहाँ है? शत्रु बहुत तेज हो रहा है। तुमको उनका साथ नही छोडना चाहिए।

मुन्दर उनके पास पहुँचने के सब रास्ते बन्द हो चुके है। (दोनो ऊँचे स्थान पर चढ जाते हैं) वह देखो सरदार महारानी किस तरह दोनो हाथो मे तलवार लिए लड रही है। माना साक्षात महाकाली हम लोगो की रक्षा के लिए धराधाम पर उतरी है। वह देखो वे बाहर निकलने के लिए मार्ग खोज रहा हैं। सरदार तात्या नही दिखाई दे रहे?

रघुनाथ सरदार रानी का आदेश पूरा कर रहे है। वे दुश्मन का व्यूह तोडकर दक्षिण की ओर बढ रहे है। (सहसा काँपकर)

अरे रघुनाथ जी देखो। रामचन्द्र गिर गया। दामोदर उसकी पीठ पर है। (चिल्लाकर) ठहरो शत्रुओ तुम उसे नहीं छू सकते। (तेजी से निकला चला जाता है)

सुन्दर — ओह मैं क्या करूँ? इधर महारानी हैं उधर उनका बेटा है किधर जाऊँ? मैंने रानी से कहा था कि आपके साथ रहूँगी लेकिन रानी का बेटा तो रानी से भी बढ़कर है। उसका जीना आवश्यक है। वह जीवेगा तो नहीं, नहीं, महारानी बाई साहब नहीं मुझे रामचन्द्र के पास जाना चाहिए। मुझे रामचन्द्र की सहायता करनी चाहिए। मुझे रामचन्द्र की सहायता करनी चाहिए। (चिल्लाकर) ठहरो रामचन्द्र मैं आता हूँ। फिरंगियो तुम्हारा काल आ पहुँचा है। हर हर महादेव। (तेजी से बाहर जाता है। शोर बढ़ता है। दूसरे ही क्षण लक्ष्मीबाई मंच पर प्रवेश करती हैं। वे बहुत घायल हो चुकी हैं, लेकिन आवेग से पुकारती हुई आती हैं)

लक्ष्मीबाई — नहीं तुम मुझे नहीं पा सकते। मैं तुम सबको समाप्त कर दूँगी। यह लो। (मुड़कर आक्रमण करने के लिए बाहर झपटती हैं। दूसरे ही क्षण हँसती हुई लौटती हैं) सब भाग गये। चारों ओर सन्नाटा ही सन्नाटा है। मृत्यु का सन्नाटा। पराजय का सन्नाटा। स्वराज्य की मंजिल दूर रह गई। लेकिन कोई डर नहीं। मैंने नींव इतनी मजबूत डाली है कि जब उस पर भवन बनेगा तो प्रलय भी उसे नहीं डिगा सकेगी। (रघुनाथ सुन्दर के शरीर को पीठ पर उठाये मंच पर प्रवेश करता है) कौन रघुनाथ? यह तुम्हारी पीठ पर कौन है? सुन्दर! तो सुन्दर भी गई। सुन्दर भी गई रघुनाथ।

रघुनाथ — हाँ महारानी सुन्दर भी गई। एक-एक करके सभी नींव के पत्थर बन गये। इसकी देह को कोई छू न सके इसलिए उठा लाया हूँ लेकिन आप सावधान रहें। शत्रु के सैनिक

इसी ओर आ रहे हैं। मैं मु दर का दाह सस्कार करने के लिए उधर जा रहा हूँ।

लक्ष्मीबाई जाओ रघुनाथ। मु दर को अपने हाथों से चिता को समर्पित कर दो। वह तुम्हें कितना प्यार करती थी। जाओ मैं शत्रु से अंतिम बार लोहा लेने जा रही हूँ। (दोनों दो ओर चले जाते हैं। हर हर महादेव के नारे तेज होते हैं। एक गोरा सैनिक कई सैनिकों के साथ मंच पर प्रवेश करता है)

गोरा एं पकड़ो पकड़ो। वह कठेवाला रानी है। देखो कैसे तलवार चलाटा है? उस पकड़ो। (तेजी से रामचन्द्र प्रवेश करता है)

रामचन्द्र रानी को पकड़ने से पहले अपने को सँभाल। (दोनों लड़ते हुए बाहर जाते हैं। चीख की आवाज सुनाई देती है। उसी पर हर हर महादेव का अट्टहास का स्वर गूँजता है। तभी एक सैनिक दौड़ता हुआ आता है)

सैनिक मुझे अभी रघुनाथराव की तलाश करनी है। महारानी का घोड़ा अड़ गया है और फिरंगियों ने उन्हें घेर लिया है। (पीछे मुड़कर देखता है) वह देखो महारानी कितनी बहादुरी से लड़ रही हैं। नहीं नहीं मैं उनको छोड़कर नहीं जा सकता। (तेजी से वापिस जाता है। दूसरे ही क्षण महारानी की हर हर महादेव की आवाज उभरती है। फिर पिस्तौल की आवाज उभरती है। रघुनाथ चीख उठता है और दूसरे ही क्षण वह घायल रानी को सँभाले हुए मंच पर प्रवेश करता है)

लक्ष्मीबाई रघुनाथ! सब कुछ समाप्त हो गया मैं भी अब नींव का पत्थर होने जा रही हूँ।

रघुनाथ आह महारानी बाई साहब। आपके सिर और छाती से कैसे खून बह रहा है और आपकी आँख

लक्ष्मीबाई आँख कट गई रघुनाथ। अच्छा हुआ। अपनी पराजय अपनी आँखों से नहीं देख सकी। तुम्हें याद है, मैंने क्या कहा था

मेरी देह को महारानी बेहोश हो जाती हैं। रामचन्द्र **दामोदर को पीठ से बांधे हुए मंच पर प्रवेश करता है)**

रघुनाथ गमचन्द्र जल्दी करो। महारानी बेहोश हो गयी है। इन्हें बाबा गंगादास की कुटिया में ले चलो। शत्रु किसी भी क्षण आ सकता है।

रामचन्द्र **(रुंधा कण्ठ)** ओफ यह क्या हो गया ? **(सहसा लक्ष्मीबाई आंख खोलती है)**

लक्ष्मीबाई कौन रामचन्द्र ? दामोदर कहाँ है ?

रामचन्द्र दामोदर मेरी पीठ पर है महारानी। मैंने वचन दिया है उसका पालन करूंगा। मैं उसे सुरक्षित दक्षिण ले जाऊँगा।

लक्ष्मीबाई पा नी

रघुनाथ जल्दी रामचन्द्र जल्दी। इन्हें बाबाजी के पास ले चलो। अन्त बहुत समीप है। **(दोनों बड़ी सावधानी से रानी की देह को उठाकर ले जाते हैं)**

लक्ष्मीबाई **(दूर से आता क्षीण स्वर)** रामचन्द्र तेज अन्तिम बार चमक रहा है।

रघुनाथ स्वराज्य की ज्योति बुझ रही है। **(वे बाहर जाते हैं। पष्ठ भूमि में एक स्वर उभरता है)**

स्वर स्वराज्य की ज्योति कभी नहीं बुझ सकती। वह अमर रहेगी। सूर्य का तेज अनन्त सूर्य में विलीन हो गया है। लेकिन रानी की स्वराज्य की भूख भारत के जन जन की भूख बन गई है।

जाओ रानी याद रखेंगे यह कृतज्ञ भारतवासी।
यह अनुपम बलिदान जगायेगा स्वतन्त्रता अविनाशी।।

पर्दा पूरा गिर जाता है।

कलंक-मुक्ति

पात्र

कृष्ण	यादव संघ का नेता
बलराम	कृष्ण के बड़े भाई
अक्रूर	एक प्रमुख यादव
शतधन्वा	एक प्रमुख यादव
देवकी	कृष्ण की माँ
सत्यभामा	कृष्ण की एक रानी
सात्यकि	एक प्रमुख यादव
तीन यादव	दो यादवी एक उद्घोषक

(प्रारम्भिक संगीत के बाद कई क्षण तक घोड़ों की टाप और रथों के चलने की ध्वनि दूर से पास आती है, फिर दूर चली जाती है, फिर पास आती है, फिर दूर चली जाती है। इसके बाद कुछ व्यक्तियों के तेजी से आने की पदचाप उभरती है और उसके बाद क्षणिक शान्ति हो जाती है फिर कई व्यक्ति उत्तेजित स्वर में बातें करते हैं। पृष्ठभूमि में अनेक व्यक्तियों के स्वर उभरते रहते हैं।)

प० यादव लो बलराम और कृष्ण हस्तिनापुर से लौट भी आये।

दू० यादव सत्यभामा जब उन्हें लिवा लाने को गई थी तो उन्हें लौटना ही था।

ती० यादव अब शतधन्वा की मृत्यु निश्चित है।

प० यादव लेकिन वह तो भगा है हो न।

दू० यादव कहीं भी हो कृष्ण उसे नहीं छोड़ेंगे। उसने उनके ससुर की हत्या की है।

ती० यादव (हँसकर) नियति भी ऐसा व्यंग्य करती है। वह उसका ससुर होने वाला था। सत्यभामा शतधन्वा की वाग्दत्ता थी।

प० यादव वाग्दत्ता शतधन्वा की थी परन्तु पत्नी कृष्ण की है और सच तो यह है कि सत्यभामा है भी कृष्ण के योग्य।

दू० यादव ठीक कहते हो। कृष्ण हमारे संघ का नेता है। संघ के बाहर भी उसकी पूजा होती है इसलिए हर सुन्दरी उसी की है।

अट्टहास फिर रथ की ध्वनि, घोड़ों की टाप उभरती है, फिर सब कुछ रुक जाता है।

बलराम कहो सात्यकि, शतधन्वा कहाँ है? सुना है वह यहाँ से भाग गया।

सात्यकि हाँ आर्य आपके आने का समाचार पाते ही वह यहाँ से चला गया। पहले तो उसने आपसे युद्ध करना चाहा था और इसलिए वह सेनापति कृतवर्मा के पास गया था। लेकिन उसने कह दिया कि कृष्ण से शत्रुता करना मेरी शक्ति से बाहर है।

बलराम लेकिन शायद सत्राजित की हत्या करने की सलाह देते समय उसने यह नहीं सोचा था।

सात्यकि हाँ यह सलाह उसी ने दी थी। उसने यहाँ तक कहा था कि कृष्ण, बलराम हस्तिनापुर गये हुए हैं। उनके लौटने से पहले ही तुम सत्राजित को मारकर अपना प्रतिशोध ले लो। सत्यभामा तुम्हारी वाग्दत्ता थी। उसका कृष्ण के साथ विवाह करके उसने तुम्हारा अपमान किया है।

बलराम यदि यही बात थी तो उसे कृष्ण को चुनौती देनी चाहिए थी।

सात्यकि कृष्ण की शक्ति को कौन चुनौती दे सकता है? इसके अतिरिक्त महामति अक्रूर ने उससे कहा था कि इसमें कृष्ण का अपराध नहीं है अपराध सत्राजित का है।

बलराम (हँसकर) चाचा बहुत चतुर हैं। सुना है शतधन्वा उनकी भी शरण में गया था।

सात्यकि लकिन उन्होन स्पष्ट कह दिया कि वह कृष्ण के विरुद्ध किसी की सहायता नही कर सकत। उनके आन से पहले उसे यहा स भाग जाना चाहिए।

बलराम ता यह भी चाचा की ही सलाह थी, लेकिन वह भागकर कही नही जा सकता। उसन कृष्ण के ससुर की हत्या की है। मैं उस त्रिलोक म भी नही छाडूगा। कहा है कृष्ण !

कृष्ण (दूर से आता हुआ स्वर) मैं यह रहा भैया।

बलराम रथ तयार करन की आज्ञा दो। हम दोनो शतधन्वा का पीछा करेंगे। उसका वध करना ही होगा।

कृष्ण लकिन भया

बलराम रक्त का प्रतिशाध रक्त मे ही होता है कृष्ण। सारथी स कहा कि वह रथ जाड ले। मैं सत्यभामा की आखा म आँसू नही देख सकता।

सत्यभामा हा आय मैं पिता की मृत्यु का प्रतिशोध चाहती हू। शतधन्वा कायर है। उस मुझस प्रेम था तो मेरे पति को ललकारा होता। मर पिता स युद्ध किया हाता। वीर पुरुष सात हुए सिंहा का वध नही किया करत। उसन मेर सोत हुए पिता का सिर काटा है।

बलराम वह कायर था इसीलिए तो भाग गया है।

कृष्ण शुभे, अब तम चिन्ता मत करो। भैया ने जब निश्चय कर लिया है ता शतधन्वा की रक्षा कोई भी नही कर सकता। हम उसका वध करक ही लौटेंगे।

बलराम और मणि लकर भी तुम्हारे पिता की स्यमन्तक मणि भी ता वही ल भागा है।

सात्यकि रथ तैयार है आय।

बलराम आओ कृष्ण।

कृष्ण चलो भैया।

जाने की पदचाप उभरती है फिर घोडो की टापें तज होती हैं होती जाती हैं धनुष की टकार सुनाई

देती है। रथ पास आकर फिर दूर चले जाते हैं। स्वर उभरते हैं।

कृष्ण भैया वह देखो।

बलराम देख रहा हूं उसके रथ की चाल धीमी पड रही है। शायद घोड़े थक गये हैं। अपना रथ और तेज करो।

रथों के तेज होने की आवाज। बीच बीच मे वीरों की हुंकार। फिर जैसे रथ के गिरने का आभास।

बलराम लो उसका घोडा गिर गया।

कृष्ण भैया मैं अब पैदल ही उसका पीछा करना चाहता हूँ।

बलराम उसकी मृत्यु आ पहुंची है। तुम जा सकते हो।

रथ से कूदने और भागने का आभास।

कृष्ण ठहरो शतधन्वा। वीर पुरुष भागा नहीं करते। ठहरो, कितना ही भागो, मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं।

शतधन्वा *(हांफते हुए) लो तुम आ ही पहुंचे कृष्ण। अच्छी बात है* आओ। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हें जीता नहीं छोड़ूंगा। तुमने मेरी वाग्दत्ता का हरण किया है। तुम वध्य हो।

कृष्ण (हँसकर) कायरों की भांति भागकर सम्भवत तुम मेरा वध करने के लिए ही यहां आये हो। (दोनों के हांफने का आभास)

शतधन्वा कृष्ण तुम तन्त्र के अधिष्ठाता हो पद का दुरुपयोग करके शायद तुमने वीरता का परिचय दिया है। मैं तुम्हें जीवित नहीं लौटने दूंगा।

कृष्ण (हंसकर) शतधन्वा तुमने सोते हुए शेरों का वध करना सीखा है जागते हुओं का नहीं। (भागने की ध्वनि) अरे तुम फिर भागने लगे ठहरो शतधन्वा। ठहरो नहीं तो यह आता है मेरा चक्र (चक्र के चलने की तीव्र ध्वनि और फिर एक चीख) गया बेचारा। यह भी उसी मार्ग पर गया। अब देखूं मणि कहां है। (क्षणिक विराम) इसके पास मणि

तो दिखाई नहीं देता। न, न यहाँ भी नहीं है तो कहाँ है। कहाँ है मणि? अब मैं भैया को क्या जवाब दूंगा? मणि कहाँ गई? कहाँ गई मणि!

गूढ़ अंतराल संगीत फिर कई व्यक्तियों के अट्टहास का स्वर उठता है।

प० यादव तुमने सुना, शतधन्वा को मारकर कृष्ण लौट आये। मैंने उनको अभी अकेले ही सभापति महाराज अक्रूर के पास जाते देखा है।

दू० यादव कृष्ण को कोई नहीं जीत सकता। वह वृष्णियों का ही नहीं सभी यादवों का नेता है। संघ के बाहर भी उसकी पूजा होती है।

प० यादव लेकिन वह कहता है मणि शतधन्वा के पास नहीं थी।

दू० यादव वह बड़ा चतुर है। इस मणि के कारण उस दो पत्नियाँ मिल चुकी हैं।

ती० यादव तो उससे क्या उसको कितनी ही पत्नियाँ मिल सकती हैं। वह सुन्दर है वीर है प्रतिभाशाली भी है। लेकिन मणि कहाँ है?

दू० यादव हाँ प्रश्न तो यही है। आखिर मणि कहाँ है? (हँसते हैं)

प० यादव जानते हो जब उसने बलराम से यह कहा कि शतधन्वा के पास मणि नहीं है तो उन्होंने क्या कहा?

ती० यादव क्या कहा?

प० यादव उन्होंने कहा तुम झूठ बोलते हो। उनको यह विश्वास है कि कृष्ण ने मणि चुरा ली है।

दू० यादव क्या बलराम को भी कृष्ण पर विश्वास नहीं। (हँसकर) यादव किसी का विश्वास नहीं करते। अरे वह देखो कृष्ण इधर ही आ रहे हैं। विजय पर विजय और सुन्दरी पर सुन्दरी पाकर भी उनका मुख कैसा लाल हो रहा है। वह शायद सत्यभामा के महल की ओर जा रहे हैं। आओ हम लोग उनके मार्ग से हट जाएँ और सुनें कि वह क्या कह रहे

है। (पीछे हटने और फिर किसी के धीरे धीरे पास आने की पदचाप)

कृष्ण (स्वगत) आखिर यह सब क्या है। इस मणि के कारण प्रसेन सत्राजित और शतधन्वा जैसे वीर मारे गये। इस मणि ने यादवों की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया है। भैया बलराम तक मुझे चोर समझते है। है तो आखिर वे भी यादव ही। धन शक्ति, रूप और ऐश्वर्य इन सब ने यादवों को उन्मत्त कर दिया है। ऐसा लगता है कि उनका सर्वनाश समीप है। मैं क्या कर सकता हूँ? जो होना है हो। लो सत्यभामा तो इधर ही आ रही है। पिता के शोक में व्याकुल सुन्दरी सत्यभामा की मुखश्री कैसी मुरझा गयी है। चलूँ इसे भी शुभ समाचार दूं। (पदचाप उभरते हैं) शुभे प्रसन्न हो तुम्हारे पिता का हत्यारा इस लोक में नहीं रहा।

सत्यभामा वार्ष्णेय की जय हो। मैं सब सुन चुकी हूं। अपने प्रियतम से मुझे यही आशा थी।

कृष्ण लेकिन सत्यभामा

सत्यभामा मौन क्यों हो गये आयपुत्र! लेकिन क्या?

कृष्ण यही कि शतधन्वा के पास मणि नहीं मिली।

सत्यभामा (अविश्वास से) शतधन्वा के पास मणि नहीं मिली?

कृष्ण हाँ मैंने बहुत खोजा। वह उसके पास नहीं थी।

सत्यभामा मणि तो उसी के पास थी।

कृष्ण विश्वास तो मेरा भी यही है।

सत्यभामा और आपने ही उसका वध किया।

कृष्ण हाँ मैंने अकेले ही उसका वध किया है।

सत्यभामा तब मणि और कहाँ जा सकती है?

कृष्ण (व्यथित होकर) सत्यभामा!

सत्यभामा (काँपकर) आयपुत्र।

कृष्ण भैया की तरह क्या तुम भी मानती हो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ कि मैंने मणि छिपाई है कि मैं मणि अपने पास रख

कर

सत्यभामा (विकल होकर) नही नही दव मरा यह आशय नही। मैं ता कवल यही कह रही थी कि मणि उसके पास नहा मिली तो कहा गयी।

कृष्ण सभी यह कहत हैं। सभी मुझ पर अविश्वास करत है। जो मरे विरोधी है व भी। जो मर साथी है व भी। मैं तुम्ह दोष नही दता सत्यभामा। इस मणि के कारण तुम्हारे पिता की मत्यु हुई। इस मणि के कारण तुम शतधन्वा की पत्नी हान स वचित हा गयी।

सत्यभामा (दढ होकर) वह जो कुछ हुआ मरी इच्छा स हुआ। मैंन शतधन्वा को कभी नही चाहा।

कृष्ण लेकिन उसन ता चाहा था।

सत्यभामा ता इसस क्या यान्वी जिस चाहती है उसी का वरण करती है।

कृष्ण फिर भी तुम्हार लिए उसन तुम्हारे पिता का वध किया। मुझे चुनौती दी लकिन मणि कहाँ छिपाकर रख गया। किसका न गया ?

सत्यभामा अब रहन दीजिय मणि की बात। किसी को दे गया होगा।

कृष्ण नही उसको खोजना हागा नही तो वड परिश्रम स जिस यान्व मघ को मैंन सगठित किया था, वह छिन्न भिन्न हो जायगा लेकिन मैं ऐसा नही होन दूगा। मैं मणि का पता लगाऊगा। तुम्हारी शका ठीक है। भया की भी शका ठीक ही है। आखिर वह मणि कहाँ गयी। कहाँ गयी ? (वातावरण मे 'कहाँ गयी मणि, कहाँ गयी मणि' क स्वर गूजते हैं। फिर अन्तराल सगीत उभरता है फिर अनक मदोन्मत्त कण्ठ उभरते हैं)

प० यादव मैं विश्वास क साथ कहता हू मणि कृष्ण न ही ली है। वह महाधूत है।

० यादवी (व्यग्य से) नही-नही। कृष्ण चोर नही है। मणि उसन

छिपा भी है। जनम का छलिया है। गोपियों के कपड़े तक उसने छिपा लिये थे।

दू० यादव — और माखन किसने चुराया था?

दू० यादवी — वह माखनचोर कोई और था। यह तो मणि चोर है।

प० यादवी — और हृदयचोर भी। (अट्टहास ध्वनि गूँजती है)

दू० यादव — वह बहुत कुछ हो सकता है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं हो जाता कि वह हमारा अपमान करे।

प० यादव — हाँ, उसने मणि को छिपाकर हमारा अपमान किया है।

दू० यादव — हम अपमान का प्रतिशोध लेंगे।

प० यादव — हम उसे पदच्युत कर देंगे।

प० यादवी — (हँसकर) तुम कुछ नहीं कर सकते। उसके सामने आते ही तुम उसे प्रणाम करोगे।

दू० यादवी — और फिर वह मुस्कराकर तुम्हारा कुशल समाचार पूछेगा और फिर कोई यादवी उससे विवाह कर लेगी। (फिर अट्टहास उठता है)

प० यादव — (क्रुद्ध होकर) बन्द करो यह अनर्गल प्रलाप! कृष्ण को इस बार पदच्युत होना ही होगा नहीं तो उसे बताना होगा कि मणि कहाँ है।

प० यादवी — लेकिन पूछेगा कौन? उसके आने का समाचार पाते ही महावीर कृतवर्मा घर छोड़कर भाग गये। महामति अक्रूर कहाँ गये कोई नहीं जानता। शतधन्वा का वध हो चुका है। ऐसी स्थिति में उसे पदच्युत करने की बात कहते हो।

प० यादव — हम अभी जनसभा आमन्त्रित करने की माँग करते हैं। वहीं इस प्रश्न का निर्णय होगा। (तेजी से जाने की पदचाप, यादवियों के हँसने का स्वर)

प० यादवी — जाइये कीजिये प्रबन्ध।

दू० यादवी — लेकिन सखी इनकी बात भी ठीक है। कृष्ण कितने ही चतुर हों वीर हों मणि कहाँ गयी इसका पता तो लगाना ही चाहिए। देवी सत्यभामा स्वयं बहुत चिन्तित हैं। वह

कृष्ण पर सन्देह भी करती हू और करना चाहती भी नही।

प० यादवी — सचमुच यह समस्या है तो जटिल। आखिर वह सुन्दर मणि कहाँ गयी। आओ माता देवकी की ओर चलें। अरे वह देखो देवी सत्यभामा भी उधर ही जा रही है। (रथ के जाने का स्वर उठता है और फिर दूर से पदचाप पास आती है)

सत्यभामा — आर्या की जय हो। मैं आपके चरणों में प्रणाम करती हू।

देवकी — अपने पति की प्रिया हो। आओ सत्यभामा। सुना है कि तुम बहुत उदास हो।

सत्यभामा — आर्या सचमुच मैं बहुत दुःखी हू। मेरे पिता की मणि को लेकर यदुकुल बहुत उत्तेजित हो उठा है। सब आर्यपुत्र पर शका करते हैं कि उन्होंने मणि छिपा ली है और आर्यपुत्र कहते हैं कि शतधन्वा के पास मणि नही थी। नही थी तो कहाँ गयी।

देवकी — यह तो मैं भी नही समझ पाती। लेकिन, इतना अवश्य जानती हू कि कृष्ण झूठ नही बोल सकता।

सत्यभामा — लेकिन मैं हर किसी का मुह नही पकड़ सकती। हर व्यक्ति उन पर कटाक्ष करता है। मैं यह नहीं सह सकती। इसलिए और नही सह सकती कि मैं सत्राजित की पुत्री हू और उन्होंने एक बार आपके पुत्र पर झूठमूठ सन्देह किया था।

देवकी — तुम्हारे मन की जो अवस्था है उसे मैं समझ सकती हूँ। लेकिन तुमको कृष्ण पर विश्वास करना चाहिए। वह पता लगाने के लिए कुछ न उठा रखेगा।

सत्यभामा — लेकिन कहीं पता लगाते लगाते यादव-संघ बल परीक्षा के लिए आतुर न हो जाय। विलासिता विवेक को नष्ट कर देती है।

देवकी — यही कृष्ण भी कहता है। वह अभी आने वाला है।

सत्यभामा — क्या वह यहा आ रहे हैं?

देवकी — हाँ, वह इसी सम्बन्ध में सलाह करने आ रहा है। वह स्वय

ही गृह कलह से बहुत डरता है इसलिए वह अवश्य कोई न कोई रास्ता निकाल लेगा। जब सब हार जाते हैं तब वह किसी न किसी तरह सफल हो ही जाता है। बचपन से ही संकटों में पला है। उसने क्या नहीं सहा ! पर हर संकट उसकी प्रतिभा के लिए चुनौती बनकर आता है। और वह उस चुनौती को अपनी सफलता का साधन बना लेता है।

सत्यभामा यही विश्वास तो मुझे अब तक जीवित रखे हुए है नहीं तो पौर जनों के व्यंग्य बाण मुझे कभी का नष्ट कर देते। अच्छा मैं चलती हूँ। इस समय उनके सामने जाना ठीक नहीं होगा। मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

देवकी चिंतामुक्त होकर जाओ। लेकिन नहीं, तुम अभी पास के कक्ष में ठहरो। (जाने की पदचाप उभरती है। क्षणिक विराम के बाद फिर किसी के आने की पदचाप उभरती है)

कृष्ण प्रणाम करता हूँ माँ। कैसी हो ?

देवकी अच्छी हूँ। तू बता न क्या किया ?

कृष्ण अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ ?

देवकी कुछ तो करना ही होगा। सत्यभामा बहुत दुखी है और बलराम अभी तक नहीं लौटा।

कृष्ण इसी का तो मुझे दुख है मां। भैया भी मुझ पर विश्वास नहीं करते लेकिन मुझे सूचना मिली है कि बहुत शीघ्र लौट रहे हैं आज या कल यहाँ पहुँच जायेंगे। पर उनके साथ साथ चाचा अक्रूर भी लौट आते तो बहुत अच्छा होता।

देवकी अक्रूर का इससे क्या सम्बन्ध है ?

कृष्ण सम्बन्ध है मां और उसी की चर्चा करने मैं तुम्हारे पास आया हूँ।

देवकी (चकित होकर) तू क्या कहना चाहता है ?

कृष्ण मुझे सन्देह है कि मणि चाचा के पास है।

देवकी लेकिन इस सन्देह का आधार क्या है ? लोग तो यही कहते

हैं कि मणि तेरे पास है।

कृष्ण लोगों की बात मैं नहीं जानता लेकिन मेरे सन्देह का आधार है। मेरे आने का समाचार पाकर सेनापति कृतवर्मा घर छोडकर चले गये थे। मैंने पता लगा लिया कि मणि उनके पास नहीं थी। हो भी नहीं सकती थी। वह हमारे विरोधी हैं और मेरी मान्यता है कि वह मणि हमारे किसी हितैषी के पास है। चाचा अक्रूर से बढकर हमारा और कोई हितैषी नहीं है।

देवकी हाँ कृष्ण। यादव संघ में हमारा सबसे बडा हितैषी वही है लेकिन तू जानता है वह कहाँ है।

कृष्ण जानता हूँ वह प्रयाग में तीर्थवास कर रहे हैं। कई बार सन्देशा भेज चुका, लेकिन वह आते ही नहीं।

देवकी उसे आना होगा। तू रथ तैयार करने की आज्ञा दे। मैं उसे लेने जाऊँगी।

कृष्ण नहीं माँ तुम्हें नहीं जाना होगा। तुम्हारा सन्देशा ही काफी होगा।

देवकी तो फिर तू मेरी ओर से सन्देशा भिजवा दे कि वह दिन नहीं भूली हूँ जब तुम मेरे बलराम और कृष्ण को वृन्दावन से ले आये थे। कंस के कोप से मेरी रक्षा की थी। उसी दिन की याद दिलाकर मैं कहती हूँ कि एक बार फिर मेरे राम और कृष्ण की रक्षा के लिए तुम्हें द्वारका आना होगा। उन्हें कलंक से मुक्त करना होगा। यादव संघ को गृहयुद्ध से बचाना होगा।

कृष्ण ठीक है माँ मैं अभी सात्यकि को भेजता हूँ। यह सन्देशा पाकर चाचा नहीं रुक सकेंगे। और उनके आने पर सब समस्या सुलझ जायगी। अच्छा मैं चलूँ प्रणाम करता हूँ।

देवकी यशस्वी हो। (जाने की पदचाप फिर किसी के आने की पदचाप)

सत्यभामा अब मुझे भी जाने की आज्ञा दीजिये। वह निश्चय ही मेरी

ओर गय हुगि ।

दवकी लकिन तुमन सुन लिया न अब चिता की कोई आवश्यकता नहीं ।

सत्यभामा मैंन सब कुछ सुन लिया । मुझे लगता है कि समस्या सचमुच ही सुलझ जायगी । अच्छा प्रणाम करती हूँ ।

दवकी अपन पति की प्रिया हो । **(जाने की पदचाप उभरती है । क्षणिक विराम के बाद देवकी स्वत बोलने लगती है)**

देवकी (स्वगत) कितना सरल और साथ ही कितना प्रतिभाशाली । बडा ही कठिन हो जाता है इसको पहचानना । इसी क कारण तो आज यादव सघ इतना शक्तिशाली हो उठा है, लेकिन शक्ति और विलासिता दोनो एक साथ नही रह सकत । इस विलासिता न यादवा की बुद्धि हर ली है । सब एक दूसर पर शका करत हैं । बलराम तक कृष्ण पर शका करता है । वह बलराम जो प्रतिक्षण कृष्ण पर प्राण न्योछावर करन क लिए तयार रहता है । दोनो की राह कभी एकदम भिन्न हो जाती है लेकिन प्रेम म कभी अतर नही होता । बडे स बडा मतभेद होन पर भी बलराम कृष्ण क रास्त मे नही आता उसी की बात चलन दता है । कितना बडप्पन है इस बलराम मे । इसीलिए मै साचती हू अब सब ठीक हा जायगा बस अक्रूर क आने की दर है ।

अतराल सगीत दमामे पर चोट पडती है । उद-घोषक का स्वर पास आता है ।

उदघोषक सुनें सुने सब यादववीर सुनें । भोज अधक और वष्णि सभी वीर सुनें । कल यादवसघ की जनसभा का आयोजन किया गया है । महावीर बलराम महामति अक्रूर और सेनापति कृतवर्मा आदि सभी यादव नेता यात्रा से लौट आय हैं । मणि का लेकर जो उत्तेजना यादवसघ मे उभर आयी है उसी पर विचार करने क लिए इस सभा का आयाजन किया गया है । मणि के मिलन की पूण आशा है । सुनें

सुनें यादवसंघ के सभी वीर सुनें। भोज अंधक और वृष्णि सभी सुनें कल जन सभा का आयोजन में उनकी उपस्थिति अनिवार्य है। सुनें सुनें भोज अंधक और वृष्णि सभी यादव वीर सुनें। (**धीरे धीरे स्वर दूर हटता जाता है और यादवों की गोष्ठी का कोलाहल उठता है**)

प० यादव तो कल जनसभा का अधिवेशन होगा।

दू० यादव और उस जनसभा में महामति अक्रूर उपस्थित रहेंगे।

ती० यादव और सुनते हैं मणि भी मिल जायेगी।

प० यादव मिलेगी क्या नहीं। मणि कृष्ण के पास है।

दू० यादव यह तुम कैसे कह सकते हो? मणि उसके पास होती तो अब तक क्या छिपाता?

ती० यादव मुझे तो ऐसा लगता है कि मणि अक्रूर के पास है।

प० यादव नहीं महामति अक्रूर ऐसा नहीं कर सकते। मणि कृष्ण के पास है। वह किसी और प्रिया को प्रसन्न करना चाहता है। (हँसी)

ती० यादव नहीं मणि अक्रूर के पास है।

प० यादव (तीव्र होकर) तुम झूठ बोलते हो। मणि कृष्ण के पास है।

दू० यादव शान्त शान्त मणि किसके पास है कल पता लग जायेगा। तब तक विराम संधि कर लेनी चाहिए। आओ अन्य सब लोगों को इसकी सूचना दें। (**अन्तराल संगीत, इसके बाद जनसभा का कोलाहल उठता है**)

प० यादव देखो देखो सभी लोग आ गये हैं। उधर महावीर बलराम हैं। अभी तक उनके मस्तक के बल नहीं खुले। लेकिन मुख पर वैसा ही तेज है। मानो अभी युद्ध के लिए ललकार उठेंगे।

दू० यादव और यह महामति अक्रूर संघ के नेता के पास ऊँचे आसन पर ऐसे बैठे हैं जैसे इन्द्र के पास बृहस्पति बैठे हों। मुख पर कभी गम्भीरता है लेकिन नयनों से स्नेह छलका पड़ता है।

ती० यादव और उस कृष्ण को देखो, वह जो यादवों का नेता है संघ

से बाहर भी जिसकी पूजा होती है उस कृष्ण को देखो। सभी यादव उसकी ओर देख रहे हैं। उसका शान्त, गम्भीर मुख अद्भुत रूप से आकर्षक लग रहा है। उसकी बलिष्ठ मांसल भुजाएँ केयूरों के बंधन में कसकर कैसी सुडौल हो उठी हैं। उसके विशाल वक्षस्थल पर स्वर्णहार और पुष्प मालाएँ सुशोभित हो रही हैं। उसने अपने उत्तरीय को ढीला कर लिया है। सुनो सुनो वह कुछ कह रहा है। उसकी वाणी गम्भीर किन्तु प्रखर है।

कृष्ण यादव वीरो। आप जानते हैं कि इधर सत्राजित की स्यमन्तक मणि को लेकर मध्य में कितना वमनस्य बढ़ गया है। अनेक वीरों का विश्वास है कि मणि मैंने ली है। परन्तु मणि मेरे पास नहीं है। लेकिन प्रश्न यह है कि वह मणि है कहाँ ? मणि शतधन्वा के पास थी। और उसका वध मैंने किया तब मणि मैंने नहीं ली तो किसने ली ? शंका का यह कारण काफी सबल है। लेकिन आप यह क्यों भूल जाते हैं कि जब तक मैं शतधन्वा के पास पहुँचा तब तक वह अनेक यादव वीरों से मिल चुका था। सेनापति कृतवर्मा से उसने शरण मांगी थी। महामति अक्रूर से भी उसने शरण मांगी थी। दूसरे अनेक वीरों से भी उसने शरण माँगी होगी। वह किसी को भी मणि दे सकता था और मैं कहता हूँ कि उसने दी है। (सभा में शोर होता है) शान्त रहिए। मैं जानता हूँ उसने मणि किसे दी है। आज उस व्यक्ति को मैंने पा लिया है। कहूँगा कृपा कर वह व्यक्ति स्वयं चलकर मेरे पास आ गया है। (सभा में फिर शोर उठता है)

प० यादव कौन है वह व्यक्ति ?

दू० यादव उसका नाम बताइए।

कई स्वर हाँ हाँ उसका नाम बताइए।

कृष्ण शान्त यादववीरो शान्त। (मुड़कर) चाचा अक्रूर मैं जानता हूँ मणि आपके पास है। यह भी जानता हूँ कि आपने उसे

चुराया नही है। शतधन्वा स्वय उस आपके पास डालकर चला गया था। वह जानता था कि यह मणि यादवसघ म गृह कलह का कारण हो सकती है। उसी गहयुद्ध स यादव-सघ की रक्षा करने क लिए आप उस लकर तीर्थ करन चले गय। लकिन अब मरी प्राथना है कि मरा कलक दूर करने क लिए उस मणि को सघ क सामन उपस्थित कर दीजिय।

गहन स नाटा। कुछ लोग फुसफुसात हैं।

प० यादव   उसकी बात ठीक है। मणि अक्रूर क पास है। वह दखो उन्हान उस परम ददीप्यमान वस्तु को निकालकर वदी पर रख दिया है। जन सभा जस आलोकित हो उठी है।

दू० यादव   लकिन सबक मस्तक लज्जा स झुक गय है। हम सभी न कृष्ण पर सन्दह किया था।

ती० यादव   महावीर बलराम की ओर दखो वह कृष्ण की ओर कस दख रह हैं। मानो क्षमा माँग रह हो। अहा उन्हाने आखे मूद ली। उनस बहता हुआ जल उनके मुख की लज्जा को जस धो रहा हो।

प० यादव   सुनो सुनो महामति अक्रूर कुछ कह रह हैं।

अक्रूर   यादववीरो यह सच है कि जब शतधन्वा भाग थ तो इस मणि को मरे पास फक गय थ। उस समय यादवसघ म एक भयकर सघप पदा हाने की आशका थी। सत्राजित की मत्यु म मरा भी हाथ समझा जाता था। ऐसी अवस्था म द्वारका म मरा रहना गहयुद्ध का कारण हो सकता था। इसीलिए मैं चला गया था। अब तीर्थाटन करक लौटा हूँ। मणि जन सभा क सामन है। (मुडकर) कृष्ण इस मणि की मुझे तनिक भी चाह नही। अधिकार स वह आपकी है। आप जो चाह करें। इसक कारण आपको जो कष्ट हुआ उसक लिए मैं खद ही प्रकट कर सकता हू। मरा और कोई उद्दश्य नही था।

कृष्ण   महामति अक्रूर, आपन जो कुछ कहा वह ठीक ही है।

आपने जो कुछ किया, वह भी संघ की रक्षा के लिए ही किया लेकिन इस मणि की मुझे भी कोई आवश्यकता नहीं। (सहसा सभा मे फिर शोर उठता है)

प० यादव *क्या कहा कृष्ण मणि नही चाहते। फिर इसका अधिकारी कौन है?*

दू० यादव न्याय के अनुसार मणि पर अधिकार संघपति उग्रसेन का है।

ती० यादव लेकिन संघ की एक शाखा के नायक कृष्ण के पिता वसुदेव हैं। उनका भी मणि पर अधिकार है। अधिकार बड़े भाई बलराम का भी हो सकता है।

प० यादव *सुनो भाई मणि अत्यन्त सुन्दर है और हम सबमे सुन्दर हैं* प्रद्युम्न। सुन्दर वस्तु सुन्दर मनुष्य को ही मिलनी चाहिए।

दू० यादव इस दृष्टि से तो वह सुकुमार को मिलनी चाहिए। वह सुन्दर होने के साथ साथ सुकुमार भी है।

ती० यादव मेरी राय मे तो सुन्दर वस्तु वीर पुरुष को मिलनी चाहिए। सात्यकि परम वीर है और कृष्ण का सखा भी।

प० यादव इस समय तो सबसे सुन्दर और सच्चे वीर कृष्ण ही हैं। देखो वह फिर कुछ कहने के लिए खड़े हो गये।

कृष्ण यादवसंघ के सभासदो भोज अंधक और वृष्णि वीरो आप मुझसे सहमत होंगे कि यह मणि योग्यतम व्यक्ति को ही मिलनी चाहिए। यादवसंघ मे योग्यतम व्यक्ति कौन है? यह आप जानते ही होंगे। (सभा मे तीव्र कोलाहल उठता है) शान्त शान्त! आप वे दिन नहीं भूले होंगे जब यादवसंघ पर विपत्तियों के बादल मँडरा रहे थे। हमारा ऐश्वर्य हमारी सम्पन्नता और शक्ति सब नष्ट हो चुके थे, हमारा पौरुष बेकार था। हमारी बुद्धि कुण्ठित थी संघ महानाश की ओर अग्रसर हो रहा था और मामा कंस यदुकुल का काल बन चुके थे। ऐसे समय मे केवल एक वीर पुरुष था जिसने उसके अत्याचार के विरुद्ध अपनी एकाकी *आवाज बुलंद की। साम-दाम, दण्ड भेद से उससे लोहा*

लिया। आर यादवसघ को तब तक जीवित रखा जब तक वह स्वय जाकर भैया बलराम और मुझे व दावन स नही ल आय। वह वीर और विज्ञ पुरुष आज आपके सामन उपस्थित है। (क्षणिक विराम, गहन स नाटा और पृष्ठ-भूमि मे सगीत) आप सब उ है जानते है। वह महात्मा अक्रूर है। मैं उ हे प्रणाम करता हू। वह इस रत्न को ग्रहण करे।

सहसा स नाटा भग हो जाता है। एक क्षण मे सब सामूहिक स्वर मे पुकार उठते हैं।

सामू० स्वर अदभुत यही ठीक है यही उचित है। यही कृष्ण की विशेषता है। इसी क कारण सघ के बाहर भी उसकी पूजा होती है। (धीरे से फुसफुसाते हैं) कृष्ण की जय हो। यादवसघ का वास्तविक सघपति कृष्ण ही है। कृष्ण की जय हो।

समाप्ति सूचक सगीत।

राखी और कगन

पात्र

मानसिंह — नागौर का राजा
पन्ना — मानसिंह की बडी बेटी
कमला — मानसिंह की छोटी बेटी
उम्मदसिंह — अरिकाण्डा का राजकुमार
सरदार — नागौर का एक सरदार
देवल — दासी

(रगमच पर एक पहाडी दुग के राजमहल के भीतरी भाग के एक प्रकोष्ठ का एक दृश्य। पर्दा उठने पर दो राजपूत बालायें वहाँ बैठी दिखाई देती हैं। बडी राजकुमारी पन्ना अपूर्व सुन्दरी है। उसके रक्तिम गौर मुख पर गम्भीरता बडी प्रिय लगती है। उसके नयनो की बरौनियाँ तनी हुई हैं। चिबुक दृढ है और अधर कुछ वक्र। छोटी राजकुमारी कमला के रूप पर अभी शैशव की छाया है। चचलता अधिक है। बार बार आचल को ऐंठती है और इधर उधर देखती है। सहसा बाहर की ओर देखकर कहती है)

कमला — जीजी पिताजी आ रहे है।

पन्ना — देख रही हूँ। बहुत गम्भीर जान पडते हैं।

कमला — गम्भीर होने का कारण है जीजी भैया अभी तक दक्खिन से नही लौटे।

पन्ना — वे अभी कैसे लौट सकते है। गये दिन ही कितने हुए है।

कमला — पर जीजी वे नही लौटे तो दुर्ग की रक्षा कौन करेगा? रक्षा नही हुई तो गुजरात का बादशाह उस पर अधिकार

कर लगा।

पन्ना (बढ़ता से) ऐसी बात मुह स मत निकाल कमला दुग पर गुजरात क बादशाह का अधिकार नहीं हो सकता। याद रख, तू राजपूतनी है और

कमला (सहसा) और राजपूतनी क्या होती है यह म खूब जानती हू। पर

पन्ना पर की चिन्ता पिताजी पर छोड द। उन्हान और उनके सरदारा न दुग की रक्षा क लिए क्या निणय किया है यह जान बिना हम आग साचन का कोई अधिकार नहीं।

कमला लो व पिताजी आ गय। मैं उनस ही पूछती हू कि उन्हान क्या निणय किया है। (कमला आगे बढती है। पन्ना भी उठती है। राजा मानसिंह वहाँ प्रवेश करते हैं। आयु ढल चली है। मुख पर विषाद की रेखायें झलक आई हैं। लेकिन पगडी म राजचिह्न का प्रतीक रत्न चमक रहा है)

कमला (स्नेहपूर्वक) पिताजी आपन क्या फैसला किया?

राजा मौन रहते हैं।

पन्ना पिताजी हम डर क कारण नहीं बल्कि आपका निणय जानने के लिए व्याकुल है।

कमला पिताजी क्या मया लौट आयगे? क्या दुग की रक्षा हो सकगी?

राजा फिर भी मौन रहते हैं।

पन्ना पिताजी आप क्या सोच रह हैं? क्या आपको हम पर विश्वास नहीं है?

कमला मालूम होता है पिताजी अब दुग के बचन की कोई आशा नहीं है।

राजा फिर भी मौन रहते हैं।

पन्ना (आगे बढ़कर) पिताजी आप बोलत क्या नहीं? आपक चुप रहन का क्या कारण है? क्या आप हम पर विश्वास नहीं करत? क्या आप समझत है कि हम म इतना साहस

नती है कि हम बुरी बात सुन सकें। पिताजी, हम राजपूत की बेटी है। हम राजपूतनी हैं। (बोलते-बोलते आवेश में आ जाती है। राजा व्यग्र होकर सिर हिलाता है)

मानसिंह पन्ना, बेटी पन्ना।

पन्ना पिताजी।

राजा फिर मौन हो जाते हैं।

पन्ना आप फिर चुप हो गये। आपकी सभा ने क्या फैसला किया? दुर्ग की रक्षा की क्या व्यवस्था की गई?

मानसिंह (निःश्वास लेकर) दुर्ग की रक्षा तो अब केवल दुर्गा ही कर सकती है।

कमला (स्तम्भित होकर) यानी दुर्ग की रक्षा नहीं हो सकती?

मानसिंह नहीं।

कमला भैया दक्खिन से नहीं लौट सकते?

मानसिंह नहीं। वह समय पर नहीं लौट सकता। और दुर्ग में जो व्यक्ति बचे हैं वे देर तक शत्रु का सामना नहीं कर सकते। बहुत जल्दी हम सबको मौत से जूझना होगा।

पन्ना राजपूत और राजपूतनियाँ मरने से नहीं डरते पिताजी।

मानसिंह जानता हूं बेटी। इसीलिए हमने फैसला किया है कि जितने पुरुष हैं वे दुर्ग की रक्षा करते हुए मर मिटें और जितनी नारियां हैं वे

कमला (एकदम) वे क्या करें?

मानसिंह (गम्भीर होकर) जौहर।

पन्ना जौहर।

कमला जौहर तो जौहर होगा।

पन्ना एक राजपूतनी के लिए जौहर से बड़ा सौभाग्य और कुछ नहीं होता।

कमला जौहर का अर्थ है मृत्यु। मृत्यु को तुम सौभाग्य कहती हो जीजी?

पन्ना (दृढ़ स्वर) हाँ कमला इस प्रकार की मृत्यु सौभाग्य ही

है। दुश्मन के हाथ में पकड़ने से यह कहीं अच्छा है कि हम स्वयं ही अपने प्राणों का अन्त कर डालें। अन्त करने के दो ही मार्ग हैं। दुश्मन से लड़ते हुए मौत को गले लगायें या फिर जौहर करके अपने को अमर कर दें।

कमला (निडर) और कोई रास्ता नहीं है जीजी!

पन्ना और कोई रास्ता नहीं? मैं समझी नहीं कि तुम्हारा मतलब क्या है?

कमला मेरा मतलब यह है जीजी कि क्या मरने के पहले और कुछ नहीं हो सकता?

मानसिंह नहीं, अब और कुछ नहीं हो सकता।

पन्ना (सहसा) ठहरिये पिताजी, कमला का मतलब समझती हूं। कोई और रास्ता ढूंढा जा सकता है।

मानसिंह (चकित होकर) कोई और रास्ता ढूंढा जा सकता है।

कमला हां पिताजी मेरा मन कहता है कि कोई और रास्ता हो सकता है।

मानसिंह वह कौन सा रास्ता है?

पन्ना मैं कुछ देर सोचना चाहती हूं।

मानसिंह अब सोचने का समय नहीं है। दुश्मन की असंख्य सेना हमें घेरती चली आ रही है और दुर्ग में केवल मुट्ठी भर सैनिक शेष हैं। हम अधिक देर तक मुकाबला नहीं कर सकते।

पन्ना नहीं कर सकते तो हम जौहर तो कर सकेंगे। हम उससे बचना नहीं चाहेंगे। आप अपनी तैयारी करते रहिए।

मानसिंह यही सुनने आया था बेटी। मुझे तुम पर विश्वास है और गर्व भी। अच्छा मैं जाता हूं। तुम्हारी राह देखूंगा।

जाता है और दोनों बहनें एक दूसरे की ओर देखती हैं।

पन्ना कमला मैं तुम्हारा मतलब ठीक-ठीक नहीं समझी। क्या तुम यह कहना तो नहीं चाहती कि हम किसी से मांगें?

कमना हाँ जीजी सहायता माँगना पाप नहीं है।

पन्ना बेशक नहीं है पर कोई उसका पात्र तो हो? कोई इस योग्य तो हो कि सहायता कर सके।

कमला राजपूताने में ऐसे वीरों की कमी नहीं है।

पन्ना राजपूताने में वीरों की कमी नहीं है, लेकिन

कमला लेकिन?

पन्ना (सहसा) नहीं नहीं कमला मैं अपने देश की बुराई नहीं कर सकूँगी। राजपूताना वीरों की भूमि है। पर मनुष्यता केवल वीरता पर ही निर्भर नहीं करती। उसे कुछ और भी चाहिए।

कमला उस कुछ और को मैं खूब समझती हूँ। और यह भी समझती हूँ कि हमारे समीप ही एक ऐसा राजपूत रहता है, जो केवल वीर ही नहीं है कुछ और भी है। (मुस्कराती है)

पन्ना कमला।

कमला मैं जानती हूँ जीजी। आप उसे पहचानती हैं। उन पहाड़ियों के उस पार।

पन्ना (फुसफुसाकर) उन पहाड़ियों के उस पार उस पार क्या है कमला?

कमला (शरारत से) उस पार अरिकाण्डा का दुर्ग है और उस दुर्ग मे रहता है राजकुमार उम्मेदसिंह।

पन्ना (काँपकर) राजकुमार उम्मेदसिंह। (क्षणिक सन्नाटा) कमला तुम्हारा मतलब है कि राजकुमार उम्मेदसिंह हमारी मदद कर सकेगा?

कमला तुम चाहोगी तो क्यों नहीं कर सकेगा?

पन्ना मैं चाहूँगी?

दासी का प्रवेश।

दासी राजकुमारी कमला आपको महाराज बुला रहे है।

कमला मुझे बुला रहे है। चल मैं अभी आती हूँ। (पन्ना से) जीजी मैं अभी आती हूँ। (तेजी से चली जाती है)

दासी वहीं खड़ी रहती है।

पन्ना स्वन तुझे याद है कि दो वर्ष पहले राजकुमार उम्मेदसिंह हमारे मेहमान बने थे।

दासी अग्निकाण्डा का राजकुमार। हाँ राजकुमारी जी। मुझे मालूम है। लेकिन आज आपको उनकी याद कैसे आई? वह तो

पन्ना मुझे मालूम है। वह हमारे कुल का शत्रु है। पिताजी उससे सहायता माँगने की अपेक्षा मर जाना अच्छा समझेंगे।

दासी क्या? क्या आप राजकुमार उम्मेदसिंह से सहायता माँगने की बात सोच रही हैं? यह कैसे हो सकता है राजकुमारी जी?

पन्ना यही तो मैं भी कहती हूं लेकिन समता का विचार है कि

दासी समझी। छोटी राजकुमारी का मतलब है कि

पन्ना वह तो मैं भी समझती हूँ। लेकिन वह इस वंश का कट्टर दुश्मन है। वह नहीं आयेगा। नहीं आयेगा।

दासी हाँ वह नहीं आयेगा। लेकिन (क्षणिक विराम) आप चाहें तो आ भी सकता है।

पन्ना (हतप्रभ-सी) मैं चाहूं तब?

दासी हाँ आप चाहें तब। आप सब कुछ समझती हैं। अच्छा मैं जाती हूँ। जौहर के लिए प्रबन्ध करना है।

जाती है।

पन्ना दवन (देखकर) चली गई। (स्वगत) मैं चाहूँ तो। लेकिन मैं कैसे चाह सकती हूँ। वह तो हमारे कुल का घोर शत्रु है। आह! यह कैसी विडम्बना है। इतना सुन्दर इतना वीर राजकुमार और ऐसी शत्रुता। सचमुच तब वह मुझे कितना अच्छा लगता था। कितना अच्छा! और वह भी तो मुझे देखते रहना चाहता था। मैं उसे बुलाऊँ तो वह अवश्य आएगा। पर बुलाऊँ कैसे? क्या प्रेम की दुहाई देकर बुलाऊँ? प्रेम। और उसने प्रेम को ठुकरा दिया तो? नहीं,

नही एक राजपूत किसी राजपूत बाला के प्रेम को नहीं ठुकरा सकता। नहीं ठुकरा सकता (क्षणिक मौन) ठीक है, नही ठुकरा सकता। पर इसमे पिताजी का अपमान तो होगा ही। पिताजी का अपमान होगा, शत्रुता बढेगी, तो तो क्या करूँ? क्या करूँ? कैसे बुलाऊँ? (क्षणिक मौन) समझ गयी। एक और रास्ता है। मैं उसे राखी भेज सकती हूँ। हाँ हाँ मै उसे राखी भेजूगी। राखी पाते ही वह दौड़ा आयगा। वह मेरा भाइ बनेगा। और पिताजी को एक और बेटा मिलेगा। वह बेटे से शत्रुता न रख सकेंगे। पर पर मेरे प्रेम का क्या होगा? जिसकी कल्पना मुझे जीवन दे रही है जो मेरे सपनो का सम्बल है जो मेरे अरमानो का आधार है उसका क्या होगा? नही नहीं मैं उसे राखी नहीं भेजूगी। नही भेज सकूगी। होने दो साका। उठने दो जौहर की ज्वाला।

कमला का प्रवेश।

कमला जीजा।

पन्ना (कांपकर) कमला। (क्षणिक मौन। दोनों एक दूसरे को देखती रहती हैं। फिर पन्ना स्वस्थ होकर बोलती है) कमला, तू ठीक कहती थी। मुझे वह रास्ता सूझ गया है। अगर वह सफल हो गया तो हम भया के आने तक दुश्मन को रोक सकते है।

कमला सच! क्या रास्ता है वह?

पन्ना अभी बताती हूँ। पहले पिताजी से पूछ लू। तू यहा ठहर अभी आई। (तेजी से चली जाती है। एक क्षण मौन रहकर कमला बोल उठती है)

कमला मुझे मालूम है वह रास्ता। जीजी राजकुमार से प्रेम करती हैं। मैं जानती हूँ एक दिन उसका प्रेम सन्देश पाकर वह राजकुमार घोडे पर चढकर आता और तलवार की छाया मे वधू हरण करके ले जाता। राजपूत अक्सर इसी तरह

विवाह करते हैं। लेकिन ऐसा लगता है जीजी उतने से ही सन्तुष्ट नहीं है। वह केवल दुर्ग की रक्षा ही नहीं करना चाहती पुश्तैनी शत्रुता को मिटा देना चाहती है। और उसके लिए अपने प्रेम का बलिदान करने को तैयार है। प्रेम और कर्तव्य में संघर्ष छिड़ा है। तभी वे इतनी व्यग्र हैं। वे प्रियतम को शायद अपना भाई बनाना चाहती हैं। वह राखी भेजना चाहती है। वह अपने अरमानों को अपने पैरों से कुचल रही है। अपनी कामनाओं का गला अपने हाथों से घोट रही हैं। (एकदम बाहर देखकर) अरे वह तो इधर ही आ रही है। बड़ी प्रसन्न दिखाई देती है। पिताजी भी साथ हैं। इधर छिपकर उनकी बात सुनूं।

कमला अन्दर की ओर जाती है। राजकुमारी पन्ना और राजा मानसिंह आते हैं।

पन्ना — पिता जी पहाड़ियों के उस पार अग्निकाण्डा का दुर्ग है।

मानसिंह — (चौंककर) है पर उससे तुम्हें क्या ?

पन्ना — (पूर्ववत) और वहाँ के राजकुमार का नाम उम्मेदसिंह है।

मानसिंह — मैं जानता हूं। पर इन बातों से तेरा क्या मतलब है ?

पन्ना — (पूर्ववत) क्या कभी अग्निकाण्डा के राजकुमार ने आपका अपमान किया है ?

मानसिंह — अग्निकाण्डा के राजकुमार ने मेरा अपमान किया है ? नहीं तो तुमसे किसने कहा ?

पन्ना — किसी ने नहीं। मैं अपने आप ही पूछ रही हूँ। (क्षणिक **विराम**) उसने कभी आपके सरदार या किसी प्रजाजन का अपमान किया है ?

मानसिंह — नहीं बेटी उसने ऐसी कोई बात नहीं की।

पन्ना — तो फिर पिताजी उसे आप अपना शत्रु क्यों मानते हैं ?

मानसिंह — मैं उसे अपना शत्रु क्या मानता हूं ? क्या ? बात यह है बेटी मेरे राज्य की सीमा पर कुछ ऐसी भूमि पड़ी है जिस पर हम दोनों दावा करते आये हैं। वैसे वह धरती का

पांच है पर बाहरी शत्रु के सामने हम एक सौ पांच हैं। आज क्या हम लोग बाहरी शत्रु के सामने नहीं खड़े हैं? क्या उससे लड़ने के लिए हम एक नहीं हो सकते?

मानसिंह लेकिन पन्ना यह भीख मांगने का प्रश्न है। वह मेरी सहायता करने नहीं आ रहा मैं उससे प्रार्थना करने जा रहा हूँ।

पन्ना प्रार्थना मैं कर रही हूं आप नहीं।

मानसिंह लेकिन तू और मैं अलग तो नहीं हैं।

पन्ना जानती हूँ पिताजी परन्तु यहाँ अपने को अलग करने का मेरा तात्पर्य इतना ही है कि मैं नारी हूं और नारी की प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए राजपूत किसी बात की चिन्ता नहीं करता। (मानसिंह मौन रहता है) क्या मैं सच नहीं कह रही हूं पिताजी? (मानसिंह फिर भी मौन रहता है) पिताजी आप बोलते क्या नहीं? आपको राजकुमार से कोई शिकायत नहीं है। उसने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा। वह वीर है। एक बार आपके साथ मिलकर डाकुओं से लड़ चुका है।

मानसिंह (फुसफुसाकर) हाँ एक बार वह मेरे साथ डाकुओं से लड़ चुका है। लेकिन तब उसके पिता जीवित थे। मेरी शत्रुता उससे नहीं उसके पिता से थी।

पन्ना और आज उसमें है। ठीक है, वह रहे। मैं उसे समाप्त करने के लिए नहीं कहती। गुजरात के बादशाह के लौट जाने पर आप तलवार द्वारा उसका निर्णय कर सकते हैं पर जब तक शत्रु हमारी भूमि पर उपस्थित है तब तक नागौर और अविखण्डा एक है।

मानसिंह लेकिन लेकिन।

पन्ना लेकिन की बात छोड़िए पिताजी। समान शत्रु के सामने सच्चे राजपूतों ने अपनी आपसी शत्रुता को सदा भुलाया है। आप दोनों सच्चे राजपूत हैं।

आयगा और दुग की रक्षा हागी और और जीजी भाई
व रूप म राजकुमार का स्वागत करगी। भाई नहो नही
यह कस हा सकता है ? यह नही होगा। (फुसफुसाकर)
लकिन कैसे नहो होगा ? इसका और उपाय ही क्या है ?
उपाय ? (सहसा) हा हाँ एक उपाय है। एक उपाय है।
(तेजी से भाग जाती है)

दूसरा दृश्य

(दुग म महल का बाहरी प्रकोष्ठ। राजपूत सनिक इधर उधर आते जाते हैं। पष्ठभूमि मे युद्ध क दमाम बजते हैं। शोर दूर से पास और पास से दूर होता है। जिस समय पर्दा उठता है राजा मानसिह एक राजपूत सरदार के साथ तेजी से बातें करते हुए प्रवेश करत हैं।)

सरदार महाराज, मैंन सब बाता का ठीक ठीक पना लगा निया है। वह अरिकाण्डा के गजनुमार उम्मन्सिह ही ह। घमासान युद्ध क बाद उसन शत्रु के तोपखाने पर अधिकार कर लिया है।

मानसिह यानी तुम कहना चाहत हा कि जो तापखाना थोडी दर पहल गुजरात क नवाब की फौज पर गान वरमा रहा था वह गुजरात का ही था।

सरदार जी हाँ वह उन्हा का था। उन्ही की लाठी उन्हा क सिर अब गुजरात क नवाब की जीतन की काइ आशा नही है। वह बराबर पीछे हट रह है। कुछ ही क्षण म उस घुटने टक दन हाग।

मानसिह गुजरात के नवाब को घुटन टक न्न हाग तुम सच वह रह हो ?

सरदार प्रत्यक्ष को प्रमाण का जरूरत नही हाती महाराज। वह

मानसिंह   वह तो राजपूतों का पचरंगा है। तो   तो क्या हम पराजित हुए?

पन्ना   नहीं पिताजी   उधर नहीं, इस ओर देखिए। क्या यह अरिकाण्डा का झण्डा नहीं है?

मानसिंह   हाँ बेटी वह तो सचमुच अरिकाण्डा का झण्डा है। तो राजपूत हारे नहीं है।

पन्ना   जिसके हाथ में मेरी राखी बँधी हो   उसकी पराजय नहीं हो सकती। वह देखो वह दल किस तरह शत्रुओं को चीरता हुआ दुर्ग की ओर बढ़ा आ रहा है।

युद्धघोष पास आता है।

मानसिंह   लो उसने शत्रु की पहली रक्षा पंक्ति को तोड़ डाला।

पन्ना   और दूसरी पंक्ति पर राजपूतों ने पीछे से पत्थर गिराने शुरू कर दिये हैं। पिताजी उधर देखिये वे कैसे भाग रहे हैं। और इधर यह कौन है?

मानसिंह   यह यह तो राजकुमार दिखाई देता है।

पन्ना   अरिकाण्डा का राजकुमार?

मानसिंह   वह इधर आ रहा है और शत्रु कैसे भाग रहा है। पन्ना राजकुमार की जीत हुई। शत्रु हार गया। दुर्ग बच गया। यह सब तेरे कारण हुआ बेटी।

जय जयकार का शब्द पास आता है।

पन्ना   पिताजी राजकुमार इधर ही आ रहे हैं। आओ आगे बढ़कर उनका स्वागत करें। अरे यह कमला उनके साथ कहाँ से आ गई?

मानसिंह   कमला वह तो जौहर की तयारी कर रही थी। वह बाहर कैसे निकल गई?

पन्ना   कमला बड़ी चपल है पिताजी। किसी दिन नाम करेगी। लो वे तो आ गये।

युद्धवेश में राजकुमार उम्मेदसिंह का प्रवेश। वीरता मानो साकार हो उठी है। कमला उसके

साथ है। वह भी सैनिक के वेष में है। राजकुमार सीधा मानसिंह की ओर बढ़ता है।

उम्मेदसिंह — महाराज मानसिंह राजकुमार उम्मेदसिंह आपको प्रणाम करता है। (मानसिंह आगे बढ़कर उसे छाती से चिपका लेते हैं)

मानसिंह — राजकुमार उम्मेदसिंह की जय।

कमला — (जोर से) भाई उम्मेदसिंह की जय।

पन्ना सहसा बोलते बोलते रुक जाती है। दृष्टि मिलती है। एकटक देखकर वह सहसा दृष्टि घुमा लेती है।

कमला — भैया आपने राजकुमारी की राखी स्वीकार करके हम की रक्षा के लिए जो कुछ किया, उसको हम कभी नहीं भूल सकते।

उम्मेदसिंह — राजकुमारी आपने शत्रु को भाई बनने का जो सम्मान दिया उसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगा।

मानसिंह — शत्रु नहीं राजकुमार तुम शत्रु नहीं हो। तुमसे बढ़कर आज मेरा कोई मित्र नहीं है। मैं अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु भी तुम्हें भेंट कर सकता हूँ। मांगो क्या माँगते हो? (राजकुमार मौन रहता है) माँगो बेटा, राजपाट दुर्ग कुछ भी माँगो।

उम्मेदसिंह — नहीं महाराज मैं राजपाट नहीं चाहता। मैं वही चाहता हूँ जो मेरा है। मैं उसी रत्न को चाहता हूँ।

मानसिंह — रत्न तुम मेरे मुकुट के रत्न को चाहते हो? तो मैं रत्न और मुकुट दोनों देता हूँ।

उम्मेदसिंह — नहीं महाराज मैं यह रत्न नहीं चाहता। मैं राजपूताने का अमूल्य रत्न चाहता हूँ।

मानसिंह — राजपूताने का अमूल्य रत्न? मैं समझा नहीं।

उम्मेदसिंह — मेरा मतलब राजकुमारी पन्ना से है महाराज।

मानसिंह — (चकित) राजकुमारी पन्ना।

पन्ना (चकित) मैं ! राजकुमार मुझे मांगते हैं मुझे ! नहीं नहीं।

मानसिंह यह कैसे हो सकता है बेटा ? उसने तुम्हें राखी भेजी है। वह तो

उम्मेदसिंह आप कहना चाहते हैं मुझे राजकुमारी पन्ना ने राखी भेजी है ?

मानसिंह हाँ वह उसी की सूझ थी।

उम्मेदसिंह सूझ किसी की भी हो महाराज लेकिन राखी मुझे राजकुमारी कमला ने भेजी थी ?

मानसिंह कमला ने राखी भेजी थी।

पन्ना कमला ने (चौंककर) नहीं नहीं यह झूठ है। राखी मैंने भेजी थी।

कमला जीजी यह गलती मुझसे हुई है। तुम्हारी छोटी बहन हूँ मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हारी राखी रख अपनी राखी भेज दी थी।

पन्ना पर क्यों ? क्यों तुमने ऐसा किया ?

कमला क्योंकि मैं जानती थी कि राजकुमारी पन्ना राजकुमार उम्मेदसिंह से प्रेम करती है। (कहकर भाग जाती है)

पन्ना (कांपकर) कमला।

पीछे पीछे भागती है। राजा मानसिंह सहसा अट्टहास कर उठते हैं।

मानसिंह समझा। अपनी बेटियों को आज समझा। आओ राजकुमार आओ तुम सचमुच उस रत्न के अधिकारी हो। मैं सहर्ष वह रत्न तुम्हें सौंप दूंगा।

राजा मानसिंह राजकुमार उम्मेदसिंह को हाथ से पकड़कर उधर ही चले जाते हैं जिधर राजकुमारियाँ गई हैं।

पर्दा गिरता है।

दीवान हरदौल

पात्र

प्रतीकराय
जुझारसिंह
दासी
सैनिक
पार्वती

(प्रारम्भिक सगीत के बाद प्राय एक क्षण तक किसी परेशान व्यक्ति के पदचाप उठते रहते हैं। उसके बाद दूसरे व्यक्ति के पदचाप पास आकर रुक जाते हैं।)

प्रतीकराय महाराज की जय हो। महाराज ने मुझे याद किया ?

जुझारसिंह हाँ।

प्रतीकराय महाराज का सेवक उपस्थित है क्या आज्ञा है ?

जुझारसिंह प्रतीक तुम जानते हो कि तुम हमारे विश्वासपात्र सेवक हो और आरछा के एक प्रमुख सरदार हो।

प्रतीकराय मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ महाराज। यदि प्राण देकर भी इस सौभाग्य की रक्षा कर सकूँ तो मुझे बहुत खुशी होगी।

जुझारसिंह हम जानते हैं प्रतीकराय। लेकिन सच बताओ तुम्हारे गुप्तचरों ने जो कुछ बताया है क्या वह सत्य हो सकता है ? (प्रतीकराय मौन रहता है और सगीत उभरता है) जवाब दो प्रतीकराय हम तुम्हारे मुह से सुनना चाहते हैं।

प्रतीकराय महाराज

जुझारसिंह प्रतीकराय तुम्हार मान का हम क्या अथ समझ ? क्या यह सब सच है ? क्या तुम जानत हा कि हम किस सीमा तक जा सकत है ? लकिन प्रतीकराय हम कुछ कर बठ इसस पहल हम प्रमाण चाहत ह ।

प्रतीकराय महाराज क्षमा कर यह मरा दुभाग्य है । लकिन मैं क्या करू आप मुझ अपना विश्वासपात्र मानत है इसीलिए मैं विवश हू । मुझे स्वय विश्वास नही हुआ था लकिन जब गुप्तचरा न मुझे बताया कि

जुझारसिंह प्रतीकराय तुम झूठ बोलत हो । तुम्ह हिदायत खाँ न यह कहा है ।

प्रतीकराय महाराज झूठ बोलकर मैं अपन प्राण सकट म नही डाल सकता । मैं जानता हू कि इसका क्या अथ है ? मैं जानता हू कि आपको कितनी वदना हा रही है । जब हिदायत खाँ न मुझस यह कहा था तो म भी काप उठा था । लकिन गुप्तचरो न इसकी ताईद की । महाराज राजनीति बडी हरजाइ हाती है और राजसत्ता का मन सवग्रासी होता है । मनुष्य अधा हा जाता है । उसकी बुद्धि भ्रष्ट हा जाती है ।

जुझारसिंह प्रतीकराय हम तुम्हारा उपदश नही सुनना चाहत प्रमाण चाहत ह ।

प्रतीकराय क्या आप समझत हैं महाराज कि आपका यह विश्वासपात्र सवक बिना किसी प्रमाण क आपकी सवा म यह सब कुछ निवेदन करन का साहस कर सकता था ? महाराज मैं यह कसे सह सकता था कि आप मातभूमि क यश और वभव को चार चाद लगान क लिए प्राणा का सकट म डाल राजधानी छाडकर चौरागढ म रह और आपक पीछे दीवानजू राजमाता क साथ राजमहल म अकल

जुझारसिंह (चीखकर)—चुप रहा तुम जानत हा कि तुम क्या कह रह हा ? तुम्हारा इतना साहस ?

प्रतीकराय महाराज शात हा । आपका उद्विग्न हाना स्वाभाविक है ।

मैंने भी गुप्तचरों को बाहर निकलवा दिया था। लेकिन जब राजमहल की दासी ने

जुझारसिंह राजमहल की दासी ! तो वह भी इस षडयन्त्र में शामिल है। जो बात हरदौल नहीं जानता है, तुम्हारे गुप्तचर जानते हैं, राजमहल की दासी जानती है, वह हम नहीं जानते ? हम कैसे महाराज हैं ? (एकदम चौंककर) क्या कहा, उस दुष्टा ने ?

प्रतीकराय उसने जब मुझे वह प्रेम कहानी सुनाई तब मेरा मस्तिष्क लज्जा से झुक गया। मैं अपनी मातृभूमि का एक छोटा सा सेवक हूँ। मातृभूमि की यशोगाथा गाना मेरा काम है इसीलिए उसके उज्ज्वल चरित्र पर जब

जुझारसिंह बन्द करो यह बकवास। जुझारसिंह के रहते मातृभूमि के उज्ज्वल चरित्र पर कलंक लगाने की बात कहने वाला हमारा शत्रु है। प्रतीकराय एक बार और सोच लो। अगर दासी ने तुम्हारा समर्थन नहीं किया तो

प्रतीकराय तो मेरा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा, यह मैं जानता हूँ महाराज। और महाराज भी यह जानते होंगे कि प्रतीकराय ने मातृभूमि के लिए प्राणों का मोह करना नहीं सीखा है। दासी बाहरी कक्ष में उपस्थित है। (ताली बजाता है। दूसरे ही क्षण धीमी पदचाप पास आती है)

दासी महाराज की जय हो। ओरछे की जय जयकार गूँजती रहे।

जुझारसिंह सच बता तूने अन्तःपुर में क्या देखा ?

दासी (कांपती हुई)—महाराज जू महाराज जू महाराज जू

जुझारसिंह (कड़ककर)—महाराज जू महाराज जू की महारानी बन्द कर और शीघ्र बता कि क्या कहना है ?

दासी महाराज जू मुझे डर लगता है। पर क्या करूँ मैंने आपका नमक खाया है। मैं झूठ नहीं बोलूँगी। मैंने कई बार दीवान जू को राजमाता के साथ

जुझारसिंह (कड़ककर)—नमकहराम जानती है कि तू क्या कह रही है ?

दासी मैं सच कह रही हूं महाराज ।

जुझारसिंह (पूर्ववत)—तू जानती है किसके सामने बोल रही है ?

दासी ओरछा के प्रतापी नरेश अपने अन्नदाता के सामने ।

जुझारसिंह (सहसा शांत होकर)—तू सच कहती है ?

दासी आपके सामने झूठ बोलकर मैं अपने जान क्या दूंगी अन्नदाता ? राजमाता दीवान जू का प्रेम पाकर

जुझारसिंह (फिर कड़ककर)—बदतमीज उस बात को बार बार दुहराने की धृष्टता मत कर (सहसा शांत होकर) मैं एक बार फिर पूछता हूँ क्या यह सच है ? (दासी मौन रहती है) प्रतीकराय हम अब भी विश्वास नहीं होता । हम जानना चाहते हैं कि क्या यह सब सच है ? (प्रतीकराय भी मौन रहता है) तुम बोलते क्यों नहीं ? (कड़ककर) हम कहते हैं तुम बोलते क्यों नहीं ?

प्रतीकराय महाराज आप हमें क्षमा कर दें। यार उस बात को भूल जायें बस आप चारागढ़ न जाकर यहीं रहें मन कुछ ठीक हो जाएगा।

जुझारसिंह (कड़ककर)—उपदेश बन्द करो प्रतीकराय। तुम कहना चाहते हो कि जो कुछ हो चुका है उसे हम भूल सकेंगे। तुम हम नहीं जानते। हमारी आन को नहीं जानते। (संगीत। एक क्षण पदचाप उठते हैं रुकते हैं) क्या यह सब सच है ? तो क्या वह भाई जो हम पिता के समान मानता रहा हमारे लिए नाग बन गया है। (क्रुद्ध होकर) लेकिन वह नहीं जानता कि जुझारसिंह के लिए नागों का फन कुचलना बाएं हाथ का खेल है। उसे इस विश्वासघात का बदला चुकाना होगा। उसे अपने इस कुकर्म के लिए अपने प्राण देने होंगे।

प्रतीकराय महाराज क्षमा करें, क्षमा करें दीवान जू को बुलाकर

समझा न।

जुझारसिंह तुम जा सकते हो प्रतीकराय। (चीखकर) जाओ हम तुम्हें आज की रात देते हैं। इसके पहले कि हम तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दें तुम ओरछा की सीमा से बाहर हो जाओ। जाओ।

प्रतीकराय महाराज क्षमा करें। मैं जाता हूँ जा रहा हूँ।

तेजी से जाने की पदचाप।

जुझारसिंह तुम ठहरो दासी।

दासी महाराज की जय हो। अन्नदाता क्षमा करें।

जुझारसिंह महारानी इस समय कहाँ हैं? (पूजा की घंटियों और शंख का स्वर पृष्ठभूमि में उभरता है)

दासी अन्नदाता पूजा समाप्त होने वाली है। वह शायद इधर ही आयेंगी।

जुझारसिंह जाओ उनसे कहो कि हम उनकी राह देख रहे हैं।

दासी जो आज्ञा महाराज।

जुझारसिंह ठहरो। तुमने अभी जो कुछ कहा था, क्या वह सच है?

दासी अन्नदाता बार बार यह बात कहते मुझे लज्जा आती है। राजमाता मेरे लिए माँ से बढ़कर है।

जुझारसिंह तुम जा सकती हो।

दासी अन्नदाता की जय हो।

जुझारसिंह ठहरो।

दासी अन्नदाता।

जुझारसिंह तुम्हें महारानी के पास जाने की जरूरत नहीं है।

दासी अन्नदाता।

जुझारसिंह (ताली बजाकर)—कोई है?

सैनिक के आने की पदचाप।

सैनिक आज्ञा अन्नदाता।

जुझारसिंह इस दासी को ले जाओ और कारागार में डाल दो। और देखो प्रतीकराय अभी यहीं होंगे तुम्हें ध्यान रखना होगा

कि वह ओरछा छोडकर न चले जाए।

सनिक जो आज्ञा महाराज।

सैनिक और दासी के जाने के पदचाप उठते हैं। पष्ठभूमि मे सगीत उभरता है। फिर पदचाप स्पष्ट होती है जसे महाराज तेजी से इधर उधर टहल रहे हो।

जुझारसिंह क्या यह सच हो सकता है ? क्या यह सम्भव हो सकता है ? हरदौल कितना सरल कितना विनम्र कितना तजस्वी और कितना स्नेही है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह मर साथ विश्वासघात करेगा। और महारानी ता जैसे सौन्दयशील, और विनय की प्रतिमा हैं। उनके रोम रोम मे जस पति प्रेम की धारा प्रवाहित होती रहती है। वह ऐसा कम कर सकती है ? नही नही यह सब शहशाह का षडयन्त्र है। वह हमे बरबाद कर दना चाहत है। उन्हान हिदायत खाँ का लालच दकर इस काम क लिए नियुक्त किया है। प्रतीकराय उसी के षडयन्त्र का शिरार है। राजसत्ता का मद किसी को भी पागल बना सकता है और वह ता हरदौल स ईर्ष्या करता है। नही ता नहीं तो। आह ! प्रतीकराय दुष्ट तरा इतना साहस तरी इतनी धृष्टता कि कि ओह ! (सगीत तेज होकर धीमा होता है) परन्तु प्रश्न यह है कि दासी न जो कुछ दखा वह भी क्या झूठ हो सकता है ? चौरागढ म हिदायत खाँ न मुझस यही कहा था। तब मैं समझा था कि बादशाह की चाल है। पर प्रतीकराय यह दासी क्या ये सब एक ही षडयन्त्र के मोहरे ह। सब झूठ है ? गलत है। बुन्दलखण्ड का नष्ट करने का षडयन्त्र है। (सगीत उभरता है) पर हरदौल सुन्दर है, तेजस्वी है। ओरछा की गली गली म उसकी वीरता की कहानिया कही जाती हैं। और महारानी ? यौवन का वसन्त जैसे उनके शरीर म ठहर गया है। सौन्दय का तज

यौवन का भक्ति की उपासना करता है। और तजस्वी यौवन सच्चा रूप का वरण करता है। यहा आकर्षण प्रेम है। यही मिलन है। (एकदम उद्विग्न होकर) नहीं-नहीं, यह पाप है। यह रूप किसी और का प्राप्य है। यह यौवन किसी और का भाग्य है। इन दोनों का मिलन विश्वासघात है। और विश्वासघात से बढ़कर (रानी के आने की पदचाप पास आती है। जुझारसिंह चौंकते हैं) कौन है? आह! महारानी आ रही है। वही रूप, वही उत्फुल्लता, वही सरल सहज सौम्य गति। प्रवीणराय तू झूठा है, तू विश्वास घाती है। तू महाराज और हिम्मत खाँ के षड्यन्त्र का शिकार है। (पदचाप पास आकर रुक जाती है)

पार्वती — महाशक्तिशाली ओरछेश की जय हो। दासी महाराज के चरणों में प्रणाम करती है। महाराज कुशल से हैं न? महाराज की यशपताका गगन में ऊँची और ऊँची उड़ रही है न। (जुझारसिंह मौन रहते हैं) महाराज मौन हैं। समझी। अन्तःपुर में आकर महाराज महाराज नहीं रहना चाहते। क्षमा करें स्वामी। मेरे देवता मेरे प्रियतम आखिर चौरागढ़ ने आपको दासी की सुध लेने की छुट्टी दे ही दी। राजकाज तो जड़ है। वह क्या जाने, किसी के हृदय पर क्या बीतती है। बसन्त की उस मादक ऋतु में जब तुम छोड़कर चले गये थे तब से

जुझारसिंह — (व्यंग्य से)—देखता हूँ इस बार मेरे पीछे महारानी ने अभिनय करना खूब सीख लिया है। क्या मैं जान सकता हूँ कि वह कौन सौभाग्यशाली शिक्षक है, जिसने महारानी को इस कला में दक्ष कर दिया है।

पार्वती — (मुसकराकर)—आप उसे नहीं जानते?

जुझारसिंह — जानता तो पूछता ही क्या?

पार्वती — ठीक है स्वामी। आदमी सारे विश्व को जानने का दावा करता है लेकिन वह अपने को ही नहीं जानता। प्रियतम,

मैंन जो कुछ मीखा है आपस ही सीखा है। मर गुरु मेर शिक्षक सब कुछ आप ही हैं।

जुझारसिंह महारानी आपके शिक्षक न आपको यह भी बताया होगा कि कैसा भी अभिनय हो एक बिन्दु पर आकर वह व्यर्थ हो रहता है। किसी न मुख वचन की एक सीमा होती है।

पार्वती (चकित होकर)—समझी नहीं आपने यह क्या कहा?

जुझारसिंह वही जो सत्य है। जो तुम सुनना चाहती थीं।

पार्वती जो मैं सुनना चाहती थी। (सहसा) मैं तो आपकी वाणी सुनना चाहती हूं। आप मेरे प्रियतम, मेरे स्वामी मेरे देवता आपकी चरण धूलि मेरा गौरव है। पर तु जान पड़ता है आप कुछ अप्रसन्न हैं। क्या दासी से कुछ भूल हो गई है?

जुझारसिंह हाँ भूल हुई है। पर तुमसे नहीं मुझसे। मैंने काँच के टुकड़े को भूल से रत्न समझ लिया था।

पार्वती (ठगी-सी)—यह आप कैसी पहेली बुझा रहे हैं? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।

जुझारसिंह हृदय में पाप छिपाकर जो बाहर प्रेम प्रकट करना जानते हैं वे समझकर भी अन समझ बने रहते हैं। पर महारानी, तुम अब मुझे अधिक धोखा नहीं दे सकती। तुम्हारी प्रेम-लीला मुझे मालूम हो गई है।

पार्वती (भयंकर वेग से काँपकर)—स्वामी। आपने अभी क्या कहा? क्या कहा आपने?

जुझारसिंह मैंने कहा महारानी की प्रेम लीला बहुत छिपाने पर भी प्रकट हो गई है।

पार्वती (पागल सी)—मेरी प्रेम लीला प्रकट हो गई है। यह कैसी भाषा है महाराज? वह अप्रकट कब थी? मेरी प्रेम लीला आप पर प्रकट न होगी तो किस पर होगी?

जुझारसिंह (सहसा उबलकर)—बन्द करो यह बकवास। बताओ, मेरे पीछे तुम किसके साथ प्रेम के खेल खेलती रही?

पार्वती (पूर्ववत)—किसके साथ प्रेम के स्वप्न देखती रही हूँ? किसके साथ, स्वामी?

जुझारसिंह यह भी मुझे ही बताना होगा?

पार्वती रहने दो स्वामी। आपको भ्रम हो गया है।

जुझारसिंह स्वप्निल तो मैं भी जागता रहता हूँ। बोलो कौन है वह भाग्यशाली?

पार्वती यह तो आप ही हैं महाराज। आप ही मेरे सर्वस्व मेरे प्राण हैं। मैं आपकी चरणदासी हूँ। एक हिन्दू नारी हूँ। हिन्दू नारी स्वप्न में भी पर पुरुष की कल्पना नहीं कर सकती।

जुझारसिंह क्या जागते में कर सकती है? जिस समय मैं इस राज्य की रक्षा के लिए चारों ओर संघर्ष कर रहा था, उस समय तुम हरदौल के साथ (तीव्र संगीत के साथ महारानी चीख उठती है)

पार्वती (चीखकर)—स्वामी! (एक क्षण संगीत उभरता रहता है) स्वामी, यह क्या हुआ? यह क्या कह दिया आपने? यह विचार आपके मन में आया ही कैसे? कैसे? कैसे? नहीं-नहीं आपने यह सब कुछ नहीं कहा। यह मेरा भ्रम है। कोरा भ्रम। कहिए, कहिए स्वामी यह भ्रम है।

जुझारसिंह भ्रम नहीं महारानी यह सत्य है। उतना ही सत्य, जितना कि तुम मेरे सामने खड़ी काँप रही हो।

पार्वती नहीं नहीं यह सत्य नहीं है यह सत्य हो ही नहीं सकता। मैं आपकी हूँ। आपकी थी और आपकी ही रहूँगी। आप सन्देह न करें। और यदि करना ही चाहते हैं तो मुझ पर कर लें। परन्तु ईश्वर के लिए दीवानजी को कलंक न लगाएँ। उन्हें मैं अपना पुत्र समझती हूँ। वह मुझे अपनी माँ मानते हैं।

जुझारसिंह अब तक मैं भी ऐसा ही समझता था पर आज पता लगा कि वह भ्रम था। सत्य कुछ और है।

पार्वती नहीं महाराज सत्य वही है और जो कुछ है वह झूठ है।

मैं सब कुछ समझती हूँ यह सब हमारे शत्रुओं की चाल है। उन शत्रुओं की जो हमारे मित्र बने हुए हैं। जिन्होंने आपकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर राज्य हथियाने का प्रयत्न किया था। लेकिन तेजस्वी दीवान जू ने

जुझारसिंह (व्यंग्य से)—तेजस्वी दीवान जू

पार्वती महाराज दीवान जू तेजस्वी ही नहीं उदार, धर्मात्मा और आपको प्रेम करने वाले भी हैं। वह स्वप्न में भी पाप के मार्ग पर पैर नहीं रख सकते। वह मुझे माँ कहते हैं। भला कोई माँ के साथ

जुझारसिंह मीठी मीठी बात करके मेरा हृदय पिघलाने की चेष्टा मत करो महारानी। तुम जानती हो कि वह पुष्प सा कोमल होकर भी पत्थर सा कठोर है।

पार्वती जानती हूँ महाराज यह भी जानती हूँ कि पत्थर के बीच से होकर ही गंगा की निर्मल धारा फूटती है। वह पापियों को भी उबार लेती है। दीवान जू तो पुण्यों से और आपके प्राणप्रिय है। आप उन पर शंका कर ही नहीं सकते।

जुझारसिंह फिर वही शब्दों का मायाजाल वही पाप पुण्य की दुहाई। मैं कहता हूँ कि अगर तुम सचमुच सती हो तो तुम्हें प्रमाण देना होगा।

पार्वती आपको मेरे सतीत्व पर शंका है?

जुझारसिंह हाँ है।

पार्वती आप प्रमाण चाहते हैं?

जुझारसिंह हाँ चाहता हूँ।

पार्वती (सहसा दृढ़ होकर)—तो मैं तैयार हूँ महाराज। आप परीक्षा ले सकते हैं। मेरा हृदय टूट चुका है। मैं अब और जीना नहीं चाहती। पर तु मरने से पूर्व आपकी शंका को निर्मूल कर देना चाहती हूँ। बताइए मैं क्या करूँ? प्राणों का बलिदान करके भी यदि मैं दीवान हरदौल को निर्दोष प्रमाणित कर सकूँ तो वह मेरा सौभाग्य ही होगा।

जुझारसिंह लेकिन मैं महारानी क प्राण नही चाहता।

पावती और क्या चाहत हैं?

जुझारसिंह महारानी को किसी के प्राण लेन हाग।

पावती (कांपकर)—मुझे किसी के प्राण लेन हागे? किसके?

जुझारसिंह हरदौल क।

पावती (हतप्रभ)—मुझे हरदौल क प्राण लन हागे। नही नही, आपन यह नहा कहा। यह नही कहा।

जुझारसिंह मैंन यही कहा। तुम्ह आज दीवान हरदौल का राजमहल म भाजन क लिए निमन्त्रित करना होगा। और अपन हाथा से विष दना होगा। मेरा यह अटल निश्चय है। यह मरा आना है।

पावती (अत्य त व्यथित होकर)—महारान महाराज आप फिर सोचिए। आप यह कैसी आना द रह है। आप अपन ही हाथा स अपना सवनाश क्या कर रह हैं?

जुझारसिंह (व्यग्य से)—तुम्ह दुख होता है?

पावती हा होता है। हरदौल जस धमात्मा और वीर पुरुष के उठ जान म बुन्लखण्ड का गौरव लुट जाएगा। ओरछा क उज्ज्वल यश पर कलक रखा खिच जाएगी।

जुझारसिंह खिच जाएगी या घुल जाएगी।

पावती निश्चय ही खिच जाएगी। और ऐसी खिचेगी कि फिर कभी मिटाए न मिटगी। यही नही, अयाय को सीमा टूट जाएगी। कुल म फट पड जाएगी। आपके शत्रु देश का सव नाश कर देंगे। इसलिए मैं फिर प्राथना करती हूँ कि आप मुझे विष खान की आना दें और हरदौल को जीवित रहने दें।

जुझारसिंह नहा हरदौल को मरना हागा। और तुम्हार हाथ स विष मिला भाजन खाकर मरना हागा।

पावती महाराज हरदौल मर बट के समान है।

जुझारसिंह और धम की रक्षा क लिए मां बेटे का बलिदान भी कर

सकती है।

पार्वती (सहमकर)—आपकी यही इच्छा है ?

जुझारसिंह हाँ।

पार्वती सुना करती थी कि हिंसक पशु अपनी सन्तान को खा जाते हैं पर आज मनुष्य को अपनी सन्तान को खाते देखूँगी। (सहसा तीव्र होकर) महाराज आपने अपने हृदय में झूठे संशय को स्थान देकर मुझ पर झूठा लांछन लगाया है। प्रकृति का नियम पलट देने पर बाध्य किया है। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मैं इसे सहन करूँगी। आप एक पुत्र को विष देने के लिए कहते हैं, सैकड़ों पुत्रों का बलिदान कर देने में भी मैं नहीं हिचकूँगी। लेकिन कहे देती हूँ यह महानाश की भूमिका है।

जुझारसिंह मुझे नाश और निर्माण की कोई चिन्ता नहीं। मैं अपनी आज्ञा का पालन चाहता हूँ।

पार्वती आपकी आज्ञा का पालन होगा। लेकिन उससे पहले मैं कहती हूँ कि आप यहाँ से चले जाएँ। मेरे हृदय में प्रतिहिंसा की आग भड़क रही है। आज एक माँ कृत्या बनकर पुत्र की हत्या करने जा रही है। नक्षत्र दिशाएँ लोकपाल साक्षी रहें मैं कहीं ऐसा कार्य न कर बैठूँ जो नारी की मर्यादा के प्रतिकूल हो। इसलिए प्रार्थना करती हूँ कि आप यहाँ से चले जाइए चले जाइए। नहीं तो ऐसा दावानल भड़केगा कि मैं आपकी रक्षा नहीं कर सकूँगी। जाइए, मेरी ओर ऐसे क्या देख रहे हैं जाइए।

स्वर उत्तरोत्तर तीव्र होता है। काँपता हुआ संगीत उभरता है। फिर गहन वेदनामय संगीत उठता है और एक शान्त स्नेहपूर्ण स्वर पास आता है।

हरदौल माँ तुम कहाँ हो माँ ?

पार्वती यह रही हरदौल। यहाँ आ जाओ। भोजन तैयार है।

हरदौल और मुझे भी बड़ी तेज भूख लग रही है। भैया के आने

खुशी म आपन तो मालूम होता है नाना प्रकार के व्यंजन बनाय हैं ? उनकी गन्ध स ही मैं तृप्त हो उठा हू । परतु भया नही दिखायी दत ? वह कहाँ है ?

पावती म कहा आया हू कि व इस समय बहुत व्यस्त हैं। भोजन क लिए नही आ सकेंगे।

हरदौल क्या माँ किस काम म व्यस्त है ?

पावती मैं नही जानती।

हरदौल आप नही जानती ? कुशल तो है ? भैया मुझस कही अप्रसन्न तो नही हैं ?

पावती नहीं नहीं अप्रसन्न क्या होग ? तरे मन म ऐसा विचार क्या उठा ?

हरदौल माँ आपकी आवाज काप रही है ?

पावती (और भी कांपकर)—नही तो नही नहा। मैं तो ठीक हू।

हरदौल मा का हृदय बेट स नही छिप सकता। बताओ माँ, क्या बात है ?

पावती तू भोजन करेगा या नही ?

हरदौल नहीं। जब तक आप अपन मन की बात नही बताएगी, म एक ग्रास भी नहीं तोडूँगा। मैं देख रहा हू, हवा कुछ बदली हुई है। आपकी आखा म रक्त उभर रहा है। आपको पीडा हो और मैं भोजन करूँ यह कस हो सकता है ? (महारानी मौन रहती है। सगीत उभरता है) बोलो न मा यह मौन तो और भी भय पैदा करन वाला है। (महा रानी को सहसा कण्ठावरोध हो आता है। प्रयत्न करने पर भी सुबकी निकल जाती है) आप रोन लगी ! क्या हुआ मा ? क्या बात है ? क्या आप मुझे इस योग्य नहीं समझती कि म आपकी बात सुन सकू ? बोलो मा ?

पावती (रुँधा स्वर)—तू मुझे माँ मत कह हरदौल।

हरदौल माँ न कहूँ। माँ को माँ ही कहा जा सकता है। आप मरी माँ हैं और मैं सदा आपको माँ ही कहता रहा हू।

पावती पर अब माँ माँ नहीं रही है। वह हत्यारिन बन गयी है।

तीव्र संगीत उभरता है।

हरनील (हतप्रभ)—क्या ? हत्यारिन ? किसकी हत्यारिन ?

पावती तुम्हारी।

हरदान मेरी ? समझा नहीं माँ। खुलकर कहो। क्या तुम्हें अपने बेटे पर विश्वास नहीं है।

पावती है। तभी तो तुम्हें विष देने जा रही हूँ।

संगीत उभरता रहता है।

हरनील मुझे विष देने जा रही हो ? क्या ?

पावती क्योंकि महाराज को मेरे सतीत्व पर शंका है। वह बहुत हैं

हरदान (गम्भीर स्वर)—अब आगे एक शब्द कहने की आवश्यकता नहीं है। मैं सब समझ गया हूँ। आखिर हिदायत खाँ और प्रवीरराय महाराज को बहकाने में सफल हो ही गये। शहशाह की जीत हुई। क्या तुम्हारे सतीत्व की परीक्षा लेना चाहते हैं ?

पावती काश ! इससे पहले भूकम्प आ जाता प्रलय हो जाती।

हरनील आपको मैंने माँ कहा है और मैं यह नहीं देख सकता कि मेरी माँ कायर हो। माँ के सतीत्व की रक्षा के लिए एक तो क्या लक्ष लक्ष पुत्रों का बलिदान किया जा सकता है। आपके सतीत्व की रक्षा का अर्थ है राजकुल के मान की रक्षा मातृभूमि के गौरव की रक्षा माँ के वात्सल्य की रक्षा। और सबसे बढ़कर पुत्र के कर्तव्य की रक्षा।

पावती (विह्वल होकर)—हरनील मेरे बेटे।

हरनील (प्रसन्न होकर)—माँ तुम निश्शंक होकर भोजन परोसो। वीरों के जीवन में ऐसे अवसर बार बार नहीं आते। वे भाग्यशाली हैं जिन्हें माँ के लिए प्राण देने का अवसर मिलता है। जल्दी करो माँ जल्दी करो। कहीं यह शुभ मुहूर्त टल न जाय। और महाराज को यह सोचने का

सर मिटे कि

पार्वती नहीं मैं यह अवसर नहीं दूँगी।

हरदौल तो अपने आँसू पोंछ लो। परीक्षा की इस वेला में आँसू बहाना पाप है।

पार्वती (दृढ़ होकर)—नहीं मैं रोऊँगी नहीं। तुम्हारे जैसा पुत्र पाकर मैं कैसे रो सकती हूँ? थाल परसा हुआ है। लो खाना प्रारम्भ करो। लेकिन ठहरो। मैं भी अपना थाल परस लूँ।

हरदौल तब तो माँ बदनामी सत्य हो जायगी।

पार्वती (काँपकर)—सत्य हो जायगी? ठीक है हरदौल! ठीक है।

हरदौल (खाता हुआ) कितना स्वादिष्ट भोजन है माँ! प्रत्येक ग्रास आपके वात्सल्य से सराबोर है। यह कन्द की कचोड़ी और दो माँ। और खीर भी दो। दो न, दो न! (गहन संगीत उभरता रहता है)

पार्वती हरदौल तुमने मुझे माँ से भी बड़ा बना दिया।

हरदौल (धीमा स्वर)—माँ आशीर्वाद दो कि मेरा मार्ग निष्कंटक हो। मैं सीधा बैकुण्ठ जाऊँ।

पार्वती हरदौल, एक बार समुद्र मन्थन के अवसर पर शंकर ने विष पीकर संसार की रक्षा की थी। आज तुमने विष पीकर मातृत्व की रक्षा की है। तुमने विष नहीं पिया नारी का कलंक पिया है। (संगीत गहन होता हुआ तीव्र होता है। और उसके बीच में से हरदौल का स्वर इस प्रकार उठता है मानो बहुत दूर से आ रहा हो)

हरदौल नमो वासुदेवाय नमो वासुदेवाय।

पार्वती (स्वर में स्वर मिलाकर)—नमो वासुदेवाय नमो वासुदेवाय।

यह स्वर धीरे धीरे गम्भीर होता है फिर सामूहिक होता है मानो चारों ओर से नमो वासुदेवाय नमो वासुदेवाय की पुकार उठ रही हो। एक क्षण बाद

जुझारसिंह का कांपता हुआ स्वर पास आता है।

जुझारसिंह नहीं प्रतीकराय ऐसा नहीं हो सकता। मैंने गलती की है। मैं अपनी आज्ञा वापस लूंगा। महारानी, महारानी। तुम कहां हो? जहां भी हो सुनो, मैं अपनी आज्ञा वापस लेता हूं। तुम हरदौल को विष मत दो। मैं अपने दण्ड पर फिर से विचार करूंगा। मुझे लगता है जैसे मैंने गलती की है। हम कोई ऐसा काम नहीं करना चाहते जिसके कारण हमारे न्याय पर शंका की जाय। हम उस पर फिर विचार करेंगे। (सहसा धीमा स्वर होता है) पर क्या सचमुच मैंने गलती की है? शायद शायद। (पृष्ठभूमि में रुदन का स्वर उठता है, जो प्रतिफल पास आता है) पर यह कैसा स्वर है? राजमहल में कोई रो रहा है? और यह तो महारानी का स्वर है। (संगीत) तो क्या हमारी आज्ञा का पालन हो गया? (सहसा विह्वल होकर) महारानी तुम जरा भी देर नहीं कर सकीं? कभी-कभी आज्ञापालन में देर कर देना अच्छा होता है। पर तुम तो महारानी थीं ओरछा की महारानी! तुम आज्ञापालन में देर कैसे कर सकती थीं? तुमने ठीक ही किया। शायद मैंने भी ठीक ही किया। शायद ठीक ही किया (सहसा चौंककर) कोई है? (सैनिक के आने की पदचाप)

सैनिक अन्नदाता की जय हो।

जुझारसिंह देखो प्रतीकराय बाहर है। उन्हें इसी क्षण यहां आने के लिए कहो।

सैनिक जो आज्ञा। (जाता है)

जुझारसिंह हरदौल चला गया। क्या उसका जाना ठीक नहीं हुआ? क्या हमने गलती की है? ऐसा लगता है कि हमने गलती की है। ईश्वर हमें क्षमा करे। यह सब शहजादे का षड्यन्त्र है। उनकी आज्ञा पाकर ही हिदायत खां ने प्रतीकराय को बहकाया है।

प्रतीकराय के आने की पदचाप।

प्रतीकराय महाराज की जय हो।

जुझारसिंह प्रतीकराय आखिर तुम्हारा मनचाहा हो ही गया। तुमने हरदौल को मरवा डाला। अब तैयार हो जाओ, तुम्हारी हत्या मैं करूँगा।

प्रतीकराय महाराज कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं। लेकिन दीवान जू को मैंने नहीं मरवाया। उन्हें आपने मरवाया है। आप चाहते थे

जुझारसिंह (चौंककर)—प्रतीकराय, तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो ?

प्रतीकराय मैं वही कह रहा हूँ जो सच है। आप यदि नहीं चाहते तो हजार हिदायतें या चाहते हजार प्रतीकराय चाहते, दीवान जू की हत्या नहीं की जाती। लेकिन आप चाहते थे कि दीवान जू आपके रास्ते से हट जाएँ आपको उनसे ईर्ष्या थी। आप उनके तेज से पराभूत थे।

जुझारसिंह (काँपकर)—चुप रहो प्रतीकराय चुप रहो शैतान के अवतार। मैं अभी तेरा सिर काट डालूँगा। मैं अभी तुझे

प्रतीकराय मेरे साथ आप कुछ भी कर सकते हैं, परन्तु अपने मन के साथ क्या करेंगे। मैं आपके मन का प्रतिरूप हूँ।

गहन संगीत उभरता है, जो धीरे धीरे पास आते हुए पृष्ठभूमि के शोर में घुल जाता है।

जुझारसिंह यह कैसा शोर है ?

प्रतीकराय यह आपकी प्रजा का क्रन्दन है महाराज। दीवान जू की मृत्यु से ओरछा का प्रत्येक व्यक्ति दुखी है। उनमें से बहुत से दीवान जू के साथ स्वर्ग जाने के लिए विष खा खाकर आत्महत्या कर रहे हैं।

जुझारसिंह आत्महत्या कर रहे हैं ? विद्रोह नहीं कर रहे ? तुम सच कह रहे हो ?

प्रतीकराय हाँ महाराज।

जुझारसिंह तब कोई डर नहीं। हमने गलती नहीं की। आत्म बलिदान के नाम पर आत्महत्या करने वालो से हमें कोई भय नहीं। जो विद्रोह नहीं कर सकता वह प्रतिकार भी नहीं ले सकता। लेकिन प्रतीकराय, हम अब ओरछा में नहीं रह सकते। हम इसी क्षण चौरागढ जायेंगे। यहा शासन तुम्हें देखना होगा। यह भार तुम्हारे कन्धो पर है। (चीखकर) जाओ इससे पहले कि हम तुम्हारा सिर काट डालें तुम यहा की व्यवस्था करो। गाव गाव में हरदौल के चबूतरे बनवा दो जहा जाकर हमारी प्रजा अपनी पीडा का आसुओ की राह बहा सके। (अट्टहास) लेकिन हम यहा नहीं रह सकते। हम जा रहे है! जा रहे है!

दूर होते स्वर और प्रतीकराय का अट्टहास जो अन्त मे अन्तराल सगीत मे समाप्त हो जाता है।

मर्यादा की सीमा

पात्र

शकुन्त	दक्षिणापथ का एक राजा
राम	अयोध्या नरेश
हनुमान	वानर जाति के एक महावीर
विश्वामित्र	ब्रह्मर्षि राम के गुरु
नारद	सुपरिचित देवर्षि
अजना	महावीर हनुमान की माता

(लका विजय के कई वर्ष बाद। मच पर वन प्रान्त का दृश्य। केवल एक मकान का मुख्य द्वार दिखाई देता है। आस पास पुष्पवाटिका है। दूर से आकर एक पथ वहा समाप्त होता है। पर्दा उठने पर हवा मे पत्र पुष्प उडते हैं। एक ओर एक शिलाखण्ड पर महावीर हनुमान ध्यानमग्न बैठे हैं। विशाल शरीर विशाल नेत्र, भरा हुआ मुख और ताम्र वर्ण। अगद से दबी मासल भुजाए वीरता की प्रतीक हैं। उत्तरीय लापरवाही से कन्धे पर पडा है। एक क्षण बाद एक नारी का स्वर पास आता है। पीछे पीछे नारी प्रवेश करती है। आयु उतार पर है परन्तु गठन अपूर्व है। रूप मे गरिमा है। बालो का जूडा कसकर बाधा है। वक्ष कचुकी से कसा है और नीचे धोती का फेंटा लगाया हुआ है। यह देवी अजना है।)

अजना — हनुमान बेटा हनुमान। (हनुमान मानो नहीं सुनते) हनुमान क्या सोच रहा है बेटा ?

हनुमान — (चौंककर) कौन ? आह मा। क्या बात है ?

अजना — यही तो मैं भी पूछती हू कि क्या बात है ? हर समय एकात मे बैठकर तू क्या सोचा करता है ?

हनुमान कुछ नहीं कुछ भी तो नहीं।

अंजना माँ से रहस्य रखना चाहता है। मैं जानती हूँ, यहाँ तेरा जी नहीं लगता।

हनुमान (क्षमा के भाव से हँसकर) क्या बताऊँ माँ बस समझ लो, कुछ कुछ नहीं लगता।

अंजना कुछ कुछ क्या, बिलकुल नहीं लगता। हर वक्त अनमना रहता है खोया खोया सा। मेरी आवाज भी तुझ तक नहीं पहुँच पाती। सच बता, क्या राम की इतनी याद आती है ?

हनुमान (सहसा) राम की याद। तुमने ठीक समझा मां। पर माँ, तुम्हें यह कैसे पता लगा कि मुझे श्री राम की याद आ रही है।

अंजना मैं तेरी माँ हूँ न, और माँ के हृदय की प्रत्येक धड़कन में उसके बेटे की श्वास बोलती है। पर मैं पूछती हूँ तुझे उनके पास से आए हुए अभी दिन ही कितने हुए है? क्या तुझे मेरे पास रहना बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

हनुमान (व्यस्त होकर) नहीं नहीं माँ यह बात नहीं। तुमने गलत समझा। जब मैं श्री राम के पास होता हूँ तो मुझे तुम्हारी याद आती है। सच कहता हूँ बहुत याद आती है। न जाने कैसे तुम्हारी तरह वे भी मेरे मन की बात जान लेते हैं। और फिर मुझसे कहते हैं कि हनुमान माँ के पास नहीं जाओगे।

अंजना राम ऐसा कहते हैं ? राम बहुत अच्छे हैं। सच बहुत अच्छे हैं। वे ही तो पहले आर्य नरेश हैं, जिन्होंने दूसरी जातियों के प्रेम को जीता है जिन्होंने अपने को बड़ा नहीं समझा।

हनुमान और इसीलिए वे सबसे बड़े बन गये हैं।

अंजना जो दूसरे को छोटा नहीं समझता वही सबसे बड़ा है। पर अब तू अंदर चल। सूरज कितना चढ़ आया है। भोजन का समय है। तू तैयार हो, मैं अभी आती हूँ।

हनुमान (उठता है) अच्छा माँ। (मकान के अन्दर जाते जाते) जल्दी आता माँ।

अजना (वाटिका की ओर जाते हुए) अभी आयी।

दोनों जाते हैं। एक क्षण बाद एक व्यक्ति भागता हुआ यहाँ आता है। उसके कानों में कुण्डल, गले में मोतियों की माला, वक्षस्थल पर जाकट जैसा वस्त्र है। अधोवस्त्र करधनी से वेष्ठित है। उत्तरीय हवा में उड़ता है। बाल पीछे की ओर मुड़े हैं। मुख पर भय का पीलापन है। पुकारता हुआ आता है।

शकुन्त (भयातुर) माता जी, माता जी।

अजना (वाटिका से बाहर आकर) कौन? आह! आप हैं राजा शकुन्त! आप इतने घबरा क्यों रहे हैं?

शकुन्त माँ मेरी रक्षा करो मैं आपकी शरण में हूँ।

अजना मैं आपकी रक्षा करूँ! समझी नहीं, बात क्या है?

शकुन्त बात यह है माँ कुछ दिन पूर्व मैं ऋषियों के आश्रम में उनकी पूजा करने गया था।

अजना तो फिर?

शकुन्त वहाँ मैं प्रमादवश महर्षि विश्वामित्र को प्रणाम करना भूल गया। सुना है इस बात पर क्रुद्ध होकर वह अपने एक क्षत्रिय शिष्य के पास पहुँचे। आज वह क्षत्रिय वीर मुझे मारने के लिए यहाँ आ रहा है। उसने प्रतिज्ञा की है कि आज संध्या तक वह जीवित या मृत मुझे विश्वामित्र के चरणों में डाल देगा। माताजी, अब आप ही मेरी रक्षा कीजिए। आपके पुत्र महावीर हनुमान आजकल यहीं पर हैं?

अजना हाँ वह यहीं पर हैं। और वह तुम्हारी रक्षा करेगा। शरणागत की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। मैं अभी उसे पुकारती हूँ। (पुकारकर) हनुमान बेटा, हनुमान।

हनुमान (अन्दर से) आता हूँ माँ। (आकर) क्या है माँ। तुमने इतनी देर कर दी। मुझे भूख लगी है। (शकुन्त को देख कर) आप राजा शकुन्त यहाँ? प्रणाम करता हूँ।

अंजना बेटा! ये हमारी शरण में आये हैं। ऋषि विश्वामित्र की इन पर कोप दृष्टि है। उनके किसी क्षत्रिय शिष्य ने आज सन्ध्या तक इन्हें जीवित या मृत पकड़ने की प्रतिज्ञा की है। तुझे इनकी रक्षा करनी होगी।

हनुमान माँ जो शरण में आता है उसकी सदा रक्षा की जाती है। तुम्हारी आज्ञा का पालन होगा।

अंजना तुमसे यही आशा थी बेटा। अब इनका जीवन तुम्हारे हाथ में सुरक्षित है।

हनुमान हाँ, माँ मेरे प्राण नष्ट करके ही कोई इनकी ओर अंगुली उठा सकेगा। आओ राजा अन्दर आ जाओ।

शकुन्त धन्य हो महावीर हनुमान! आपने अपने अनुरूप ही कार्य किया है।

दोनों अन्दर जाते हैं। माँ भी पीछे पीछे मुड़ती है कि तभी देवर्षि नारद की वीणा की ध्वनि पास आती है। वह ठिठक जाती है। एक क्षण बाद ही वे मंच पर प्रवेश करते हैं। काषाय वस्त्र, सिर पर जटा और हाथों में वीणा।

नारद नारायण नारायण। भज मन नारायण भज मन नारायण। नारायण भज मन मूढमते।

अंजना आपको प्रणाम करती हूँ देवर्षि।

नारद आयुष्मान भव देवी। सब कुशल मंगल है?

अंजना आपकी कृपा से सब मंगल ही है देवर्षि।

नारद सुना है देवी आपके घर राजा शकुन्त ने शरण ली है?

अंजना हाँ देवर्षि। कोई क्षत्रिय राजा उसे मार डालना चाहता है। बेचारा महर्षि विश्वामित्र को प्रणाम करना भूल गया था। भूल तो हरेक से हो जाती है।

नारद — हाँ देवी भूल इनसे हो जाती है। ऐसी साधारण बात के लिए इतनी भयंकर प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिए।

अंजना — इसलिए क्योंकि मेरे बेटे ने भी प्रतिज्ञा की है कि उसके जीते जी कोई व्यक्ति शकुन्त की परछाईं भी नहीं पा सकेगा।

नारद — (हँसकर) देवी! आपके पुत्र महावीर हनुमान को कौन नहीं जानता? लंकायुद्ध के समय उनकी वीरता को देखकर देवताओं ने उन पर फूल बरसाये थे। परन्तु स्वामी शकुन्त का खण्डन की प्रतिज्ञा जिस क्षत्रिय वीर ने की है वह है

अंजना — वह कौन है? आप मौन क्यों हो गये। कहिये न वह कौन है?

नारद — वह है अयोध्या नरेश राम।

अंजना — (हठात काँपकर) राम।

नारद — हाँ देवी। महर्षि विश्वामित्र के परम शिष्य महात्मा राम ने ही अपने गुरु का अपमान करने वाले राजा शकुन्त का आज शाम तक जीवित या मृत खण्डन की प्रतिज्ञा की है। वे इधर ही आ रहे हैं सावधान। नारायण नारायण।

नारद गाते गाते मंच से बाहर चले जाते हैं। अंजना तब तक हतप्रभ स्तब्ध खड़ी रहती है।

अंजना — राम आ रहे हैं। राम शकुन्त का खण्डन करने आ रहे हैं और हनुमान? नहीं, नहीं नहीं। (तेजी से पुकारती है) हनुमान, हनुमान।

हनुमान — (अन्दर से) आता हूँ माँ। (बाहर आकर) क्या बात है माँ? तुम अन्दर क्यों नहीं आती? क्या वह क्षत्रिय वीर आ गया है?

अंजना — आने ही वाला है। मैं पूछती हूँ कि क्या तू हर अवस्था में राजा शकुन्त की रक्षा करेगा?

हनुमान — निश्चय ही करूँगा। पर तुझे यह शंका किसलिए हुई? क्या तू मुझ पर विश्वास नहीं करता? क्या

अंजना — (एकदम) नहीं, नहीं, यह बात नहीं है।

हनुमान तो फिर क्या बात है ?

अजना सोचती हू, शायद उस क्षत्रिय वीर को देखकर तू अपने वचन से फिर न जाय।

हनुमान (ठगा सा) मैं वचन से फिर जाऊँ ? तुम क्या कहना चाह रही हो ? स्पष्ट क्या नहीं कहती ?

अजना तो सुनो वह क्षत्रिय वीर तुम्हारा आराध्य है।

हनुमान मेरे आराध्य केवल श्रीराम हैं।

अजना और जिस क्षत्रिय वीर ने राजा शत्रुघ्न को जीवित या मत आज सध्या तक पकडने की प्रतिज्ञा की है वह स्वय *महात्मा राम ही हैं।*

हनुमान (हठात कांपकर) नहीं नहीं।

अजना चौंको मत हनुमान। यह सत्य है।

हनुमान तुमने मुझे पहले क्या नहीं बताया ?

अजना इसलिए मैं स्वय नहीं जानती थी। अभी अभी देवर्षि नारद मुझे बताकर गये हैं।

हनुमान (खोया खोया सा) तो महात्मा राम राजा शत्रुघ्न को पकडने आ रहे हैं। राम जो मेरे आराध्य हैं, वे मेरे घर आ रहे हैं। मेरे घर। लेकिन मैं क्या करूँ माँ, मेरी कुछ समझ मे नहीं आता।

अजना मेरी भी कुछ समझ मे नहीं आता।

हनुमान मा मैं अभी उनका स्मरण कर रहा था। उनके पास जाने की सोच रहा था। लेकिन अब वे स्वय हमारे घर आ रहे हैं। पर किस रूप मे ? आह कैसी विडम्बना है।

अजना हाँ हनुमान यह विडम्बना ही है। महात्मा राम हमारे घर आ रहे हैं। लेकिन हमारी मर्यादा भग करने की प्रतिज्ञा लेकर आ रहे हैं। हमारे शत्रु होकर आ रहे हैं।

हनुमान (हठात चिल्लाकर) नहीं-नहीं मा। महात्मा राम हमारे शत्रु नहीं हो सकते।

अजना (दढ होकर) मैं जानती हू हनुमान पर इस समय वे ।न

के रूप में ही इधर आ रहे हैं। जो हमारी मर्यादा को चुनौती देता है वह हमारा शत्रु ही हो सकता है मित्र नहीं। क्या मैं गलत कह रही हूँ? तू बोलता क्यों नहीं? क्या तूने राजा शकुन्त की रक्षा का वचन नहीं दिया?

हनुमान दिया है माँ।

अंजना और जो उस वचन की रक्षा करने में बाधक बनता है वह क्या तेरा शत्रु नहीं होगा?

हनुमान निश्चय ही होगा माँ।

अंजना तूने शकुन्त की प्राण रक्षा की प्रतिज्ञा की है। राम उसी प्रतिज्ञा को भंग करवाने के लिए आ रहे हैं।

हनुमान (दृढ़ स्वर में) माँ मेरी प्रतिज्ञा कोई भंग नहीं कर सकता। अयोध्या नरेश महात्मा राम भी नहीं। मेरे रहते राजा शकुन्त की ओर उंगली उठाने वाला इस संसार में अभी पैदा नहीं हुआ है। तुम निश्चिन्त रहो माँ यदि महात्मा राम मुझे चुनौती देंगे तो मैं उनसे भी युद्ध करूंगा।

अंजना (उद्वेग से) तू महात्मा राम से युद्ध करेगा? सच हनुमान, तू कर सकेगा?

हनुमान माँ मैंने प्रतिज्ञा की है। उसको पूरा करने के लिए जो कुछ भी होगा करूंगा।

अंजना महात्मा राम को अपने सामने देखकर तेरी भावुकता तो नहीं जाग उठेगी?

हनुमान कर्तव्य का पालन करते करते प्राण दे देना सबसे उदात्त भावुकता है माँ।

अंजना तब मेरी लाज मेरे कुल की प्रतिष्ठा तेरे हाथों में सुरक्षित है हनुमान। मुझे तुम पर गर्व है। (आगे बढ़कर हनुमान का माथा चूमती है। हनुमान माँ के चरण छूते हैं। उसी क्षण वह वन प्रान्त एक स्वर घोष से कांपता है)

स्वर घोष इस वन प्रान्त के निवासी सुनें। कान देकर सुनें। अयोध्या के राजा महात्मा राम इस प्रदेश के राजा शकुन्त को

पकड़ने के लिए आ रहे हैं। उन्हें पता लगा है कि यहां किसी व्यक्ति ने राजा की शरण ली है। महात्मा राम चाहते हैं कि जिस किसी ने भी ऐसा किया हो वह शीघ्र ही राजा शकुन्तल को उनके हवाले कर दे और उनकी क्रोधाग्नि से बच जाय। नहीं तो उनका कहना है कि वे बाण जिनसे उन्होंने दण्डकारण्य के राक्षसों का सर्वनाश किया था और लंका नरेश रावण और उसकी अन्य सेना का वध किया था अभी तक उनके पास सुरक्षित हैं।

दोनों शान्त मन से उस घोषणा को सुनते हैं। मां सप्रश्न हनुमान की ओर देखती है। हनुमान उत्तेजित स्वर में बोल उठते हैं।

हनुमान — मनुष्य के द्वारा निर्मित मनुष्य की यन्त्र शक्ति मनुष्य की उन्मत्त भावना पर कभी विजय नहीं पा सकती। कभी नहीं मां। कर्तव्य पर प्राण दे देना, मैंने उन्हीं मर्यादा पुरुषोत्तम राम से सीखा है। जाओ मां तुम अन्दर जाओ। यहां मैं हूं। मैं उनसे निपट लूंगा।

अंजना — अच्छा बेटा जाती हूं। मेरा आशीर्वाद है। तेरी जय हो। (अन्दर जाने को मुड़ती है। तभी चेहरे के भाव पलटते हैं। फुसफुसाती है) यह मैंने क्या किया? यह सब क्या हो रहा है। मेरा आशीर्वाद व्यर्थ नहीं जा सकता। वह सत्य पर आधारित है। (चली जाती है। हनुमान क्षण भर मार्ग की ओर देखते हैं)

हनुमान — क्या से क्या हो गया? सोचा न था। क्या सचमुच मुझे महात्मा राम से युद्ध करना पड़ेगा? महात्मा राम से जो मेरे आराध्य हैं? लेकिन मेरा कर्तव्य मेरी मर्यादा। (सहसा सामने देखकर) वह कौन आ रहा है? ओह मर्यादा पुरुषोत्तम महात्मा राम! प्रणाम करता हूं महात्मा राम आपका आशीर्वाद चाहता हूं। (हाथ जोड़कर उसी दिशा में प्रणाम करता है। उसी क्षण राम मंच पर

म ।

हनुमान (बात काटकर) महात्मन आप मेरी तुच्छ सेवाओं का आदर करते हैं यही तो आपका बड़प्पन है।

राम पर हनुमान तुम नहीं समझते हनुमान तुम क्या कह रहे हो? नहीं नहीं तुम मेरे सर्वप्रिय बंधु हो। सहायक हो। तुम मेरे मार्ग में बाधा नहीं बन सकते। मैं कहता हूँ जल्दी मे राजा शत्रुघ्न को मेरे हवाले कर दो।

हनुमान (गम्भीर स्वर में) महात्मा राम हनुमान ने अपने विरोधी से आदेश लेना नहीं सीखा है। सीखा है उसका मान भंग करना। विरोधी का आदेश कायर माना करते हैं। संसार जानता है और उससे भी अधिक जानते हैं आप कि हनुमान कायर नहीं हो सकता।

राम यह तो ठीक है। पर क्या मैं तुम्हारा विरोधी हूँ? शत्रु हूँ?

हनुमान हाँ महात्मन दुर्भाग्य से इस समय यही सत्य है। आप मेरे स्वामी नहीं शत्रु हैं। इस समय आप मेरी मर्यादा पर प्रहार करने आए हैं मर्यादा पुरुषोत्तम। इस समय आप मुझे वह काम करने के लिए कह रहे हैं जो मुझे मेरी माँ को और मेरे कुल को कलंकित करने वाला है। जो व्यक्ति मुझसे ऐसा काम करवाना चाहता है वह मेरा शत्रु नहीं तो और क्या है?

राम (तिलमिलाकर) हनुमान तुम मर्यादा से बढ़ रहे हो?

हनुमान मेरी मर्यादा क्या है यह मैंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम से सीखा है।

राम (कांपकर) हनुमान हनुमान।

हनुमान कहिये।

राम हनुमान तुम मेरे प्रिय हो।

हनुमान महात्मा राम का प्रिय होना मेरा सौभाग्य है। उसी प्रेम ने मेरे विवेक को शुद्धबुद्ध किया है उसी के कारण आज मैं अपना कर्तव्यपालन करने के लिए कटिबद्ध हो सका हूँ।

मर रहत आप आज मेर शरणागत राजा शत्रु त को हाथ लगाना तो दूर उसकी परछाइ तक नही छू सकत।

राम (सहसा क्रुद्ध होकर) तो यह बात है हनुमान ! तुम राम की शक्ति को चुनौती द रह हो ? जानत हो, मैंन इक्कीस बार धरती को क्षत्रिय विहीन करन वाल परशुराम का मान भग किया है। स्वय विधाता न जिन्ह वर दिया था, व रावण और कुम्भकर्ण मेरे ही बाणो स मार गय थ। सोन की लका को जीतन वाला मैं अयोध्या का राजा राम हू। दण्डकारण्य को मैंने ही शत्रुओ स मुक्त किया है। तुम आज माग म बाधा न रह हो। मैं तुम्ह क्षमा नही कर सकता। तुम्हारा काल आ पहुँचा है। मैं तुम्ह युद्ध क लिए लल कारता हूँ।

हनुमान मैं प्रस्तुत हू। शत्रु की चुनौती पाकर मैंन चुप रहना नही सीखा है। परन्तु उससे पहले मैं महात्मा राम के चरणो म प्रणाम करता हू।

राम (झिझकते हैं) मेरा आशीर्वाद है। लकिन हनुमान आज मैं तुम्हारा मान भग करन के लिए आया हू। और तुम जानत हो मैंन हारना नही सीखा है।

हनुमान दखा जाएगा। बाण चलाइय।

दोनो वीर आमने सामन आकर युद्ध प्रारम्भ करते हैं। राम क धनुष से बाण कालनाग की तरह छूटते हैं महावीर हनुमान बडी फुर्ती से उन्ह अपनी गदा पर रोक लेते हैं। युद्ध का घोष सुनकर स्त्री पुरुष इकट्ठे होन लगते हैं)

राम (बाण छोडकर) लो सम्भलो हनुमान, इस बार तुम गय।

हनुमान (अट्टहास कर) म नही तुम्हार बाण गय राम। तूणीर म कुछ और शेष हो तो उन्ह भी निकालो।

राम (बाण निकालत हुए) हनुमान ! बढ बढकर बातें मत करो मैं तुम पर दया नही करूगा। लो (बाण छोडते हैं। हनुमान

रोक लेते हैं।)

हनुमान — शत्रु से दया की आशा करना मैं संसार का सबसे घृणित पाप समझता हूँ। ऐसा कहकर आपने मेरा अपमान किया है और जो मेरा अपमान करता है उसका एक ही दण्ड है—मृत्यु। सम्भलो, अब मेरी बारी आयी है।

हनुमान गदा लेकर सिंहनाद करते हुए झपटते हैं। दिशाएँ काँपती हैं। दर्शक नेत्र मूँद लेते हैं, लेकिन राम बाण छोड़कर गदा की चोट बचा जाते हैं।

राम — (हँसकर) तुम अपना वार चूक गए हनुमान। तुमने अब तक राक्षसों को मारा है। आर्यों से तुम्हारा पाला नहीं पड़ा है। ठहरो।

हनुमान गदा लेकर आगे बढ़ते हैं। युद्ध घोर होता है।

हनुमान — हनुमान ने ठहरना नहीं सीखा राम। राक्षस हो या आर्य, देवता हो या वानर हनुमान के सब शत्रु बराबर हैं। (अट्टहास करके) शत्रु को पराजित करना ही उसका लक्ष्य है।

युद्ध तीव्र होता है। कई क्षण दोनों एक दूसरे को पराजित करने का प्रयत्न करते हैं। पर राम सारी शक्ति लगाकर हनुमान को द्वार से नहीं हटा पाते।

राम — अब मैं और नहीं सह सकता। सम्भलो नारायण अस्त्र आता है।

हनुमान — (राम बाण निकालें, इससे पूर्व ही हनुमान झपटते हैं) सम्भलो राम वह देखो सूर्य अस्त हो चला है और इसी के साथ अस्त हो चला है आपका भाग्य। लो।

हनुमान भीषण वेग से गदा लेकर राम के मस्तक पर प्रहार करते हैं। राम धनुष टंकारते हैं पर तीर लक्ष्य से चूक जाता है। गदा मस्तक पर गिरती है और राम पृथ्वी पर।

राम (कराहकर) आह (राम के गिरते ही दर्शक भय से चिल्ला उठते हैं। अजना और शकुन्त बाहर आते हैं। हनुमान दौड़कर राम को सम्भालते हैं)

प० दर्शक महात्मा राम गिर गये।

दू० दर्शक महात्मा राम पराजित हो गये।

अजना (हर्ष से) मर्यादा पुरुषोत्तम महात्मा राम को राम के परम भक्त हनुमान ने पराजित कर दिया (धीमे से) यह राम की ही जय है।

शकुन्त यह क्या हुआ? महात्मा राम महावीर हनुमान से पराजित हो गये।

राम हां मैं पराजित हो गया। महावीर हनुमान तुम जीत गये।

हनुमान महात्मा राम, मेरी जीत आपकी जीत है। शरणागत राजा शकुन्त की रक्षा करने के लिए आपसे युद्ध करके मैंने आपकी ही मर्यादा की रक्षा की है मर्यादा पुरुषोत्तम। यह आपके ही आशीर्वाद का परिणाम है। (मुड़कर राजा शकुन्त से) राजा शकुन्त इधर आओ ये हैं मेरे स्वामी महात्मा राम। इनके चरण पकड़ो जो इनके चरणों में स्थान पा जाता है वह अजय है।

शकुन्त (प्रणाम करके) महात्मा राम दक्षिणापथ का राजा शकुन्त, मैं आपको बार बार प्रणाम करता हूं। आप मुझ पर प्रसन्न हों। मेरे कारण आपको अपने परम प्रिय भक्त से लड़ना पड़ा। मैं आपसे बार बार क्षमा मांगता हूं।

राम राजा शकुन्त महावीर हनुमान जिसको अभय दे चुके हैं उसको मैं भी दण्ड नहीं दे सकता।

अजना इसी बीच में राम के घाव पर औषधि लगाती है और उसी क्षण क्रोध से कांपते हुए महर्षि विश्वामित्र मंच पर प्रवेश करते हैं।

विश्वामित्र कहां है राम। संध्या हो गयी है और वह अभी तक नराधम शकुन्त को नहीं पकड़ सका है। सुना है इधर कहीं हनुमान

की माता अजना ने राजा को शरण दी है। (देखकर) यह यहां भीड़ कैसी है? और यह कौन वीर है जिसके घावों पर औषधि लगायी जा रही है। (आगे बढ़कर) और यह तो महात्मा राम हैं! राम! यह क्या हुआ?

राम — ब्रह्मर्षि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर सका। शकुन्त के रक्षक स्वयं महावीर हनुमान हैं। उन्होंने मुझे पराजित कर दिया है। मैं अब उन्हें अभय दे चुका हूं। शकुन्त इधर आओ।

विश्वामित्र — क्या शकुन्त भी यहां उपस्थित है और तुम उसे अभय दे चुके हो? नहीं।

हनुमान — ब्रह्मर्षि महात्मा राम का परम भक्त मैं हनुमान आपको प्रणाम करता हूं। आप प्रसन्न हों। महात्मा राम ने मुझे ही राजा शकुन्त को अभय प्रदान किया है। (शकुन्त से) राजा शकुन्त ब्रह्मर्षि विश्वामित्र महात्मा राम के वन्दनीय हैं। आगे बढ़कर इनसे अपने अपराध की क्षमा मांग लो।

शकुन्त — ब्रह्मर्षि मैं आपका अपराधी राजा शकुन्त आपके चरणों में उपस्थित हूं। अनजान में हुए अपने इस अपराध के लिए क्षमा चाहता हूं।

विश्वामित्र — क्षमा! तुम क्षमा चाहते हो। तुम्हारे कारण ही राम को हनुमान से लड़ना पड़ा और राम हार गए। यह सब क्या हुआ? (मुड़कर) राम।

राम — ब्रह्मर्षि, आज्ञा। (विश्वामित्र मौन रहते हैं)

हनुमान — आप क्या सोचने लगे ब्रह्मर्षि?

विश्वामित्र — ठहरो! राम।

राम — क्या बात है ब्रह्मर्षि। आप उद्विग्न क्या है? राजा शकुन्त नहीं अब मैं आपका अपराधी हूं।

विश्वामित्र — हां तुम अपराधी हो।

शकुन्त — नहीं नहीं अपराधी मैं हूँ। मुझे दण्ड दीजिए। मेरा सिर

काट लीजिये।

हनुमान — ब्रह्मर्षि राजा शकुन्त अब आपकी शरण में हैं और शरणागत का सिर नहीं काटा जाता। उसे क्षमा ही किया जा सकता है।

विश्वामित्र — क्या यह क्षमा का पात्र है क्षमा करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है नरिन (भिभक्ते हैं)

हनुमान — आज्ञा ब्रह्मर्षि।

विश्वामित्र — आज्ञा नहीं महावीर। देखता हूँ मैं इस समय कोई आज्ञा नहीं दे सकता। तुम सबने मिलकर यह षडयन्त्र किया है। और मुझे केवल एक ही काम करने योग्य छोड़ा है

सहसा वीणा बजाते हुए ब्रह्मर्षि नारद का प्रवेश।

नारद — नारायण नारायण! अहा ब्रह्मर्षि विश्वामित्र हैं। प्रणाम करता हूं ब्रह्मर्षि। मर्यादा पुरुषोत्तम भी हैं। महावीर हनुमान भी हैं। राजा शकुन्त भी। जान पड़ता है ब्रह्मर्षि आपने सबको क्षमा कर दिया।

विश्वामित्र — मैं अब इसी योग्य रह गया हूँ कि इन सबको क्षमा कर दूं।

नारद — ब्रह्मर्षि यह कार्य आपके ही अनुरूप है। आपके कारण ही यह नाटक सुखान्त हुआ।

राम — जहां विवेक जागत रहता है जहां श्रद्धा के नेत्र खुले रहते हैं, वहां सुख ही बरसता है देवर्षि।

नारद — मैं तो ऐसा ही मानता हूं राम। देवी अंजना आपका क्या विचार है?

अंजना — मेरा विचार तो यह है ब्रह्मर्षि कि बड़ी देर से मैं जो आप महाभागों के लिए रूखा सूखा पकवान बना रही थी उसे ग्रहण करके आप इस नाटक के उपसंहार को भी सुखमय बना दीजिए।

सब हंस पड़ते हैं और पर्दा धीरे धीरे गिरता है।

देवताओ का प्यारा

पात्र

अशोक
महामा य
अटवीराज
गनी
शिविर -भिक्षा
कलिंग -ी राजकुमारी

(प्रारम्भिक सगीत जो शाति का द्योतक है उभरकर धीरे धीरे पष्ठभूमि मे जाता है और इसी प्रकार धीरे धीरे शिलालेख पढते हुए अशोक का स्वर उभरता है।)

अशोक दवताओ के प्रिय का मत है कि जो बुराइ कर उम भी यदि हो सके तो क्षमा किया जाए। जो वन निवासी देवताओ क प्रिय के विजित राज्य म है, उनको भी वह मनाता है और धम माग प' लाना चाहता है कि जिसस देवताओ क प्रिय को पछतावा न हो। उन्ह यह बता दिया गया है कि दवताओ क प्रिय क पछताव म कितनी शक्ति है जिसस व अपन दोषो पर लज्जित हो और नष्ट न हो। दवताओ का प्रिय सब जीवो म अहिंसा सयम समता और आनन्द का अभिलाषी है। जो धम विजय है उम ही दवताओ का प्रिय अच्छा समझता है। (सहसा स्वर धीमा हो उठता है जसे अपने आपसे ही बोलते हों) जो वन निवासी दवताओ के प्रिय के विजित राज्य म हैं उनको भी वह मनाता है और

धम माग पर लाना चाहता है कि जिनसे दबनाओ व प्रिय या पछतावा न हो (एकदम) महामात्य !

महामात्य आप देव ।

अशोक महामात्य ! क्या तुम समझते हो कि दक्षिण वनवासी फिर विद्रोह कर तो हम शस्त्र उठाने पड़ेंगे ?

महामात्य देव ! समाचार मिले हैं कि उन प्रदेशों में पूर्ण शान्ति है। युद्ध की कोई आशंका नहीं है जहाँ धम विजय होती है वहाँ युद्ध नष्ट हो जाता है।

अशोक (प्रस न स्वर) ठीक कहते हो महामात्य ! चाहता तो मैं उन्हें नष्ट कर सकता था पर नष्ट करना तो कोई वीरता नहीं है। वीरता है किसी को अपना बनाने में। युद्ध शत्रु पैदा करते हैं और धम मित्रता। इसीलिए मैंने उन्हें धम माग पर लाने की चेष्टा की है। विद्रोह कर देने पर भी मैंने क्षमा कर दिया। तुम्हें याद है वह क्षण जब तुम बन्दी बना कर उन्हें मेरे पास ले आये थे।

सहसा तीव्र संगीत उभरता है। उसी के साथ घटना चक्र भूतकाल में पहुँच जाता है। तेजी से किसी के पदचाप उठते हुए पास आते हैं।

महामात्य सम्राट की जय हो। विद्रोही अटवीराज बन्दी बना लिये गये हैं।

अशोक इसका अर्थ है कि उन्होंने हमारा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।

महामात्य जी हाँ सम्राट ! उन्होंने आपका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।

अशोक (किंचित गम्भीर) हूँ तो वे अत्याचार के माग को नहीं छोड़ना चाहते। (सहसा) महामात्य ! मैं उनसे इसी समय मिलना चाहूंगा।

महामात्य जो आज्ञा सम्राट। मैं उन्हें अभी लेकर आता हूँ। वे बाहर ही उपस्थित हैं।

पदचाप दूर होते जाते हैं। अशोक का धीमा धीमा स्वर उभरता है।

अशोक (स्वगत) क्या अटवीराज सचमुच मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेंगे? क्या मुझे फिर युद्ध करना होगा? क्या एक बार फिर युद्ध घोषा में शांति की हत्या होगी? एक बार फिर शस्त्रों की झंकार घायलों की चीत्कार, अनाथों और विधवाओं के हाहाकार से धरती कांपेगी? नहीं यह नहीं होगा। उस दृश्य की अब फिर से पुनरावृत्ति नहीं होगी।

(पदचाप उठते हुए पास आते हैं)

महामात्य सम्राट की जय हो बन्दी अटवीराज उपस्थित हैं।

अशोक देख रहा हूँ लेकिन महामात्य इन्हें जंजीरों से क्यों बांधा गया है?

महामात्य क्योंकि इन्होंने सम्राट के विरुद्ध युद्ध घोषणा की है। क्योंकि ये सम्राट के धर्म राज्य में विद्रोह की आग भड़काना चाहते हैं।

अशोक (मुसकराकर) हमारे धर्म राज्य में विद्रोह की आग कोई नहीं भड़का सकता। इन्हें मुक्त कर दो महामात्य।

महामात्य सम्राट

अशोक मैंने कहा न पहले इन्हें मुक्त कर दो। हम सब मनुष्यों को अपना पुत्र समझते हैं। पिता पुत्र को जंजीरों में बंधा नहीं देख सकता।

महामात्य जो आज्ञा सम्राट। **(जंजीरों के खुलने का स्वर उभरता है)**

अशोक अब ठीक हुआ। आप लोग यहां आकर बैठ सकते हैं। हाँ हाँ यहां आ जाइए। सोच क्या रहे हैं?

अटवीराज मैं कुछ नहीं सोचता परंतु

अशोक कहो रुक क्यों गये? तुम्हें क्या कहना है? तुम विद्रोह क्यों करते हो? अशांति क्यों फैलाते हो? हमारे विरुद्ध युद्ध घोषणा क्यों की है? बोलो?

अटवीराज — हमने कोई युद्ध घोषणा नहीं की। हम न विद्रोही हैं और न अशांति फैलानेवाले। हम अपनी स्वतन्त्रता चाहते हैं।

अशोक — (व्यग्य से हँसकर) स्वतन्त्रता। क्या तुम स्वतन्त्रता का अर्थ जानते हो? तुम्हारे लिए स्वतन्त्रता का अर्थ है विद्रोह और अत्याचार। यही न? परन्तु अटवीराज स्वतन्त्रता का यह अर्थ नहीं है। तुम मेरे बन्दी हो। मैं चाहूँ तो इसी क्षण तुम्हें मृत्यु दण्ड दे सकता हूँ।

अटवीराज — तो फिर दे क्यों नहीं देते? तुम ऐसा करने के लिए स्वतन्त्र हो।

अशोक — निःसन्देह मैं स्वतन्त्र हूँ (दीर्घ निश्वास) परन्तु अटवीराज वह स्वतन्त्रता नहीं होगी। वह होगी क्रूरता, बर्बरता और घृणा। वह घृणा जो मनुष्य के रक्त में लय होकर पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। नहीं अटवीराज मैं ऐसी स्वतन्त्रता नहीं चाहता। मैं वह स्वतन्त्रता चाहता हूँ जो तुम्हें मेरे पास लाये। तुम्हें मेरा बनाए।

अटवीराज — यह सब निरा शब्दजाल है अशोक। स्पष्ट कहो क्या कहना चाहते हो?

अशोक — यही कि तुम स्वतन्त्र हो।

अटवीराज — (किंचित हतप्रभ) मैं स्वतन्त्र हूँ। नहीं नहीं, मैं यह भाषा नहीं समझता। मुझे इसमें किसी षडयन्त्र की गन्ध आती है।

अशोक — षडयन्त्र करने वाले को हर कहीं षडयन्त्र की गन्ध आती रहती है लेकिन अटवीराज मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सत्य है सहज सत्य। तुम मुक्त हो। मैं तुम्हें धर्म मार्ग पर लाना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करूंगा। तुम्हारे सारे अपराध क्षमा कर दूंगा।

अटवीराज — परन्तु यदि मैं क्षमा न चाहूँ तो?

अशोक — मैं समझता हूँ कि तुम जानते हो, मेरे पछतावे में कितनी शक्ति है। मुझे पछताने का अवसर देकर अपने को नष्ट न

करो। अपने दोषों पर लज्जित होना सीखो।

अटवीराज (तीव्र होकर) दोष दोष मेरा दोष क्या है?

अशोक उत्तेजित मत हो अटवीराज। जो काय क्रूरता बबरता और घृणा का कारण होते है उन्हे दोष ही कहा जा सकता है। युद्ध दोष है। इस एक शब्द मे क्रूरता, बबरता और घृणा सभी समाहित है। क्या तुम युद्ध चाहते हो?

अटवीराज एक पराजित व्यक्ति भी क्या कुछ चाह सकता है?

अशोक मैं पराजय के उसी दोष को धो देना चाहता हूँ। मैं तुम्हे धम माग पर लाना चाहता हू।

अटवीराज (हतप्रभ सा) मेरी तो कुछ समझ म नही आता। यह सब क्या है? तुम मेरे दोष क्या धो देना चाहते हो? कहीं मैं स्वप्न तो नही देख रहा?

अशोक यह स्वप्न नही अटवीराज! यथाथ है। मैंने तुम्हे क्षमा कर दिया, परन्तु डरो नही, मैं प्रतिदान लिए बिना क्षमा करना नही चाहूँगा।

अटवीराज मै तो आपका बन्दी हूँ। मैं क्या प्रतिदान दे सकता हूँ?

अशोक मैंने कहा न तुम अब बन्दी नही हो। पूण स्वतन्त्र हो। जो कुछ मैं चाहता हूँ वह देने म भी पूण स्वतन्त्र हो। मैं तुमसे केवल यही चाहता हूँ कि मुझे शक्ति के प्रयोग का अवसर न दो। प्रेम करने का अवसर दो। शान्ति के माग को स्वीकार करो।

अटवीराज (हतप्रभ सा) महाराज, मैंने यह नही सोचा था।

अशोक अब सोच सकते हो। मैं इतना ही चाहता हू कि अब फिर धरती माता अपनी सन्तान का रक्त पीने के लिए विवश न हो। अब फिर घायलों की चीत्कार से आकाश न कांपे। अब फिर विधवाओं और अनाथों के क्रन्दन म शान्ति की हत्या न हो। अटवीराज! क्या तुम मेरी इतनी प्रार्थना स्वीकार करोगे? क्या तुम मेरे मित्र बनोगे?

दो क्षण तक पृष्ठभूमि मे संगीत उभरता है।

अटवीराज (सहसा टूट जाता है) क्षमा कर दें महाराज ! हमने आपको गलत समझा। हमें आपका प्रस्ताव स्वीकार है। दबनाओं के प्यार महाराज ! हम सब आपके चरणों में बैठकर क्षमा और प्रेम का पाठ पढ़ेंगे। आपकी जय हो। (फिर तीव्र संगीत उभरता है और घटनाचक्र वर्तमान में लौट आता है। क्षणिक मौन के बाद अशोक का गंभीर स्वर फिर उभरता है)

अशोक अटवीराज ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। रक्त रंजित इतिहास अपने को दोहराने से बच गया। आज भी जब मुझे कलिंग युद्ध की याद आ जाती है तो मैं सहसा विश्वास नहीं कर पाता। कैसी रोमांचक घटना थी वह! कैसी लोमहर्षक। एक साथ कितनी क्षुद्र कितनी महान!

महामात्य नि सन्देह सम्राट ! एक साथ क्षुद्र और महान। एक साथ पतित और पावन। एक साथ पराजय और जय। ऐसा लगता है कि मानो मनुष्य के उस घृणित अध पतन में से ही मानवता का जयघोष उठ रहा हो।

अशोक हां महामात्य ! तुमने ठीक समझा। मनुष्य के उस घृणित अध पतन में से ही मानवता का जयघोष उठा था। क्या कोई विश्वास करेगा कि कलिंग विजय के ठीक बाद जबकि दूसरे राजा विश्वराज स्थापित करने का स्वप्न देखते मैंने दूसरे ही प्रकार की विदेश नीति अपना ली थी। मैंने दिग्विजय का मार्ग छोड़ दिया था।

महामात्य परन्तु धर्म विजय का नहीं छोड़ा था। सम्राट, यदि आप क्षमा और शान्ति की नीति को न अपनाते तो समस्त जन पद हमारे विरुद्ध उठ खड़े होते।

अशोक और यदि भयंकर हत्याकांड के बाद जो युद्ध का एक दूसरा नाम है मैं उनको पराजित करने में समर्थ हो जाता तो क्या वे मर हो पाते ?

महामात्य सम्राट ! दिग्विजय में शरीर दास बनता है पर मन शत्रु

हो जाता है। धर्म-विजय में शरीर स्वतन्त्र रहता है पर मन मित्र बन जाता है। विजित प्रदेश आपके अधीन होकर आपसे प्रेम न करते।

अशोक — यह सब कलिंग युद्ध का परिणाम है। उसी रक्तरंजित महाभयानक कलिंग युद्ध का। उसका वर्णन तुमने किसी शिलालेख में किया है न?

महामात्य — किया है देव। यह देखिए यह रहा।

अशोक — (पढ़ता है) अभिषेक होने के आठवें वर्ष देवताओं के प्रियदर्शी राजा ने कलिंग विजय किया। वहाँ से डेढ़ लाख मनुष्य बाहर ले जाए गये। एक लाख आहत हुए और उससे कहीं अधिक मरे। जहाँ लोगों का इस प्रकार वध, मरण और देशनिकाला हो, ऐसा जीतना न जीतने के बराबर है। (भावाकुल होकर) जहाँ लोगों का इस प्रकार वध, मरण और देशनिकाला हो, ऐसा जीतना न जीतने के बराबर है। (सहसा) महामात्य

महामात्य — आज्ञा सम्राट!

अशोक — जानते हो यह किसने कहा था?

महामात्य — सम्राट ये शब्द आपकी आज्ञा से लिखे गये हैं।

अशोक — नहीं महामात्य, ये शब्द मेरे नहीं हैं। ये शब्द कलिंग की राजकुमारी ने कहे थे। उस कलिंग की राजकुमारी ने जिसे मैंने नष्ट कर दिया था। जिसकी क्षत विक्षत आत्मा की पुकार से धरती और आकाश काँप उठे थे। उसी उजड़े वीरान कलिंग की राजकुमारी ने ये शब्द कहे थे। कितनी निर्भीक कितनी तेजस्विनी थी वह राजकुमारी। वेदना और पीड़ा की चरम सीमा ने जैसे उसकी आत्मा को एक अपूर्व शान्ति और एक अपूर्व तेज से भर दिया था। उसका वह रूप अब भी मेरे नेत्रों में अंकित है। जैसे वह इस क्षण भी मेरे सामने खड़ी है। इसी बीते क्षण तो वह घटना घटी थी। (तीव्र घोष के साथ घटनाचक्र भूतकाल में लौट

जाता है। एक क्षण के लिए युद्ध और पीडा का स्वर उभ रता है। फिर अनमना सा अशोक बोल उठता है)

अशोक उसने मेरा अपमान किया था प्रिय ! उसने मेरी आज्ञा नहीं मानी थी। उसने कहा था

रानी उसने क्या कहा था स्वामी ?

अशोक उसने कहा था, 'अशोक, जो कुछ तुम आज कर रहे हो एक दिन उसके लिए खून के आंसू बहाने होंगे। तुम्हारी अपनी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी। अपने ही हृदय की आग में तुम्हें जलना होगा। आज तुम जिन्हें मार रहे हो, उन्हीं के चरण चूमोगे।

रानी यह कहा था उसने। बडा धृष्ट था वह।

अशोक धृष्ट था तभी तो मैंने उसका सर काट लेने की आज्ञा दी थी। लेकिन प्रिय

रानी लेकिन क्या स्वामी ? आप बार बार ऐसे अनमने क्यों हो उठते हैं ?

अशोक नहीं तो ऐसा कुछ तो नहीं है। हां ऐसा लगता है ऐसा लगता है।

रानी कैसा लगता है ? आप बताते क्यों नहीं ? आपका मन कुछ जैसा न है। बताइए ना आपको कैसा लग रहा है ?

अशोक जैसे वह अब भी बोल रहा हो। मेरे मन में रह रहकर उसकी वाणी गूंज उठती है। जिन्हें तुम आज मार रहे हो एक दिन उन्हीं के चरण चूमोगे कैसी अशुभ भविष्यवाणी है। मैं उन्हीं के चरण चूमूंगा ?

रानी स्वामी एक सैनिक के शब्दों से इतना घबरा गये। युद्धभूमि में तो ऐसे न जाने कितने दृश्य दिखाई देते हैं।

अशोक (अनमना सा) पर प्रिय युद्ध होते क्यों हैं ?

रानी सम्राट मुझसे पूछते हैं ?

अशोक आप देवी व्यंग्य करती हैं।

रानी नहीं स्वामी मैं व्यंग्य नहीं करती। युद्ध शासन का आधार

शिला है। युद्ध की नींव पर ही राजनीति का भवन आकार लेता है। युद्ध वीर पुरुष का भूषण है और सम्राट् हैं वीर पुरुष। समूचे देश में आज उनकी जय जयकार होती है।

अशोक लेकिन मेरे अपने हृदय में एक ऐसी ज्वाला प्रज्ज्वलित हो रही है जो इस जय जयकार का उपहास करती हुई मुझसे कहती है—अशोक जो कुछ तुम आज कर रहे हो एक दिन उसके लिए खून के आंसू बहाने होंगे। तुम्हारी अपनी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी। अपने ही हृदय की आग में तुम्हें जलना होगा। तुम आज जिन्हें मार रहे हो एक दिन उन्हीं के चरण चूमोगे।

रानी सम्राट यह तो उस सैनिक ने कहा था न?

अशोक तुम भूल रही हो रानी वह सैनिक नहीं था। वह स्वयं मेरे अंतर का प्रतिरूप था। वह मैं ही था।

रानी क्षमा करें सम्राट अंतर की आवाज सुनने वाले कायर होते हैं।

अशोक अंतर की आवाज सुनने वाले कायर होते हैं? (सहसा) तो मैं कायर हूं? हां, मैं कायर हूं। तुम ठीक कहती हो प्रिये। मैं सचमुच कायर हूं।

रानी नहीं नहीं सम्राट! आप कायर नहीं हैं। आपने शक्तिशाली कलिंग का मान मर्दन किया है। उस कलिंग का जिसने महापराक्रमी नन्दों की शक्ति को चुनौती दी थी। जिसने स्वामी के पिता और पितामह के सामने झुकने से इन्कार कर दिया था।

अशोक जानता हूं देवी। कलिंग के पास असंख्य सेना थी। वह सब प्रकार से उन्नत देश था, पर उसकी यह शक्ति समृद्ध एक दिन मगध के लिए घातक बन सकती थी। उसके पराभव के बिना मौर्य साम्राज्य का एकीकरण असम्भव था। इसीलिए मुझे उसका मान मर्दन करना पड़ा लेकिन (दीर्घ निश्वास) लेकिन मैंने जो कुछ किया वह मुझे स्वयं अच्छा

रानी गायिका अभी आ रही है सम्राट।

अशोक गायिका नहीं प्रिय, कलिंग की राजकुमारी आ रही है।

रानी (चकित होकर) कलिंग की राजकुमारी आ रही है? यहाँ?

अशोक हाँ प्रिय! कलिंग की राजकुमारी बन्दिनी बना ली गई है। वास्तव में उसने स्वयं आत्मसमर्पण किया है। वह भिक्षुणी बन गई है। युद्धभूमि में घूम घूमकर घायलों की सेवा कर रही थी। हमारे सैनिकों ने जब उसे घेर लिया तो वह डरी नहीं। इसके विपरीत उसने हमारे सैनिकों से घायलों की सेवा करवाई।

रानी हूँ अवश्य यह कोई षडयंत्र है। राजकुमारी का इस प्रकार रणभूमि में आना कोई साधारण बात नहीं सम्राट। मैं नारी हूँ और नारी हृदय को समझती हूँ। वह प्रतिशोध चाहती है और जब नारी प्रतिशोध लेने की बात सोच लेती है तो उसे लेकर छोड़ती है। उसके प्राण आदर्श यहाँ तक कि उसका सतीत्व भी उसकी राह नहीं रोक सकता।

अशोक (हँसता है) राजकुलवालों की शब्दावली बहुत थोड़ी होती है प्रिय। शंका षडयन्त्र प्रतिशोध इनके अतिरिक्त उन्हें कुछ सूझता ही नहीं। अच्छा देखा जाएगा। इस समय तो वह आ रही है। वह आ गई। (पदचाप पास आकर रुक जाते हैं)

शि० रक्षिका सम्राट की जय हो। कलिंग की राजकुमारी उपस्थित है।

अशोक तो यह है कलिंग की राजकुमारी। अच्छा तुम बाहर ठहरो।

शि० रक्षिका जो आज्ञा देव! (पदचाप दूर जाते हैं)

अशोक तुम कलिंग की राजकुमारी हो?

राजकुमारी कभी थी। अब तो भिक्षुणी हूँ।

अशोक सुना है तुम बहुत निडर हो?

राजकुमारी डर उसे होना है जिसके पास कुछ हो। मैं राह की भिखारिन मैं क्या डरूँगी?

अशोक तुम गह की भिखारिन नही हो राजकुमारी। तुम्हार पास अब भी अपार सम्पत्ति है। तुम्हारा यह रूप यह यौवन।

राजकुमारी (हँसकर) माय सम्राट ! रूप और याउन सब मन क साथी होत है। मन भर जाता है ना व भी व्यतीत हो जात हैं।

अशाक उत्तर देने म चतुर हा। सच बताओ क्या तुम प्रतिशोध लन आइ हो ?

राजकुमारी किसका प्रतिशोध सम्राट ?

अशाक अपन परिवार और अपन दश का। लकिन तुम भूलती हो। तुम प्रतिशोध नही ले सकती। तुम मरो हत्या नही कर सकती

राजकुमारी मौय सम्राट ! हत्या करत करत तुम इसके अतिरिक्त कुछ नही साच सकत। आप उस बिल्ली की तरह हैं जो स्वप्न म भी छिछडे ही दखती है।

रानी बन्दिनी जबान सभालकर बाला। तुम भारत सम्राट स बातें कर रही हो।

राजकुमारी दवी, सत्य कहन के लिए कुछ नही साचा जा सकता।

रानी धृष्ट होने के साथ साथ घमण्डी भा हा पर याद रखो इस वाक्चातुय से तुम अपन उद्देश्य म सफल नही हो सकती।

राजकुमारी उद्देश्य वाकचातुय स नही कम चातुय मे सफल हात हैं देवी।

अशोक तो राजकुमारी यहा कम चातुरी दिखान आई हैं।

राजकुमारी मैं यहाँ आइ नही लाई गइ हूँ। मैं बन्दिनी हू।

अशोक बन्दिनी क साथ कैसा व्यवहार किया जाता है यह जानती हो ?

राजकुमारी जानती हूँ सम्राट। उनका सिर उडा दिया जाता है। कटार उठाइए, मैं तैयार हूँ। (क्षणिक सगीत उभरता है) उठाइए ना ?

अशोक तुम समयनी हो म तुम्हारी हत्या कर सकता हूँ। मैं एक नारी पर हाथ उठा सकता हूँ।

राजकुमारी (हँसकर) तो मौर्य सम्राट ढोंग रचना भी जानते हैं। नारी पर हाथ नहीं उठाएँगे पर वे जो लाखों पुरुष बन्दीगृह में पड़े हैं लाखों घायल अपने चीत्कार से धरती आकाश को कँपा रहे हैं लाखों माईं के लाल मृत्यु का ग्रास बनकर जगन्नियन्ता से न्याय माँगने गये हैं उनके क्या माताएं नहीं थीं? क्या वे सभी अविवाहित और निस्संतान थे?

अशोक (तिलमिलाकर) राजकुमारी राजकुमारी

राजकुमारी (पूर्ववत्) मैं पूछती हूँ क्या वे अनाथ और पीड़ित नारियाँ आज दर दर की भिखारिन बनकर मृत्यु से भी बुरी अवस्था को नहीं प्राप्त हो गई हैं? क्या यह सब नारी पर हाथ उठाना नहीं है?

अशोक बन्द करो राजकुमारी बन्द करो

राजकुमारी (पूर्ववत्) मेरे साथ आइए सम्राट कलिंग के हर गाँव और नगर में ऐसी असंख्य नारियाँ हैं जो न जीती हैं और न मरती हैं। न बोलती हैं न सुनती हैं। वे न देख पाती हैं और न उनमें अनुभव करने की शक्ति रह गई है। क्या ही अच्छा हो सम्राट यदि आप अपने सैनिकों को उनके सिर काटने की आज्ञा दे दें। यह सचमुच प्रति करुणा का प्रदर्शन होगा।

रानी (तीव्र होकर) सम्राट! आप राजकुमारी को इसी क्षण बन्दीगृह में भेज दीजिए।

राजकुमारी जाहे ना क्या आप समझती हैं मैं इस समय पितृगृह में हूँ?

अशोक ठहरो देवी ठहरो। मुझे कुछ नहीं सूझ रहा। मैं अत्यन्त उद्विग्न हो उठा हूँ। मुझे लग रहा है कि मैं जय जीतकर भी हार गया हूँ। जय

राजकुमारी जय मन मनुष्य का नहीं जीता लाश को जीता है। जय मैंने देश को नहीं जीता श्मशान को जीता है।

अशोक (काँपकर) राजकुमारी तुम क्या कह रही हो? मैंने मनुष्य को नहीं लाश को जीता है। देश को नहीं श्मशान को

जीता है ।

राजकुमारी — हाँ मौर्य सम्राट । आपने शव और श्मशान पर विजय पाई है मनुष्य पर नहीं । जहाँ लोगों का इस प्रकार वध मरण और दर्शनिकाना हो ऐसा जीतना न जीतने के बराबर है ।

अशोक — (घबराता हुआ) जहाँ लोगों का इस प्रकार वध मरण और दर्शनिकाना हो ऐसा जीतना न जीतने के बराबर है । (एकदम) राजकुमारी क्या तुम जीत का कोई और मार्ग जानती हो ?

रानी — सम्राट आप इस समय अस्वस्थ हैं । आप आराम कीजिए । राजकुमारी से कल भी बातें की जा सकती हैं ।

अशोक — ठहरो रानी । राजकुमारी की बातों में मुझे आराम मिलता है । मुझे लगता है जैसे मेरी आशंकाएं मिट रही हैं । जैसे मेरे थके हुए मन को कोई सहला रहा है । तुम चिंता मत करो । तुम्हारे पति का कल्याण ही होगा । हाँ राजकुमारी तुमने क्या कहा था भला ? जहाँ इस प्रकार वध मरण और देशनिकाला हो वह जीतना न जीतने के बराबर है, पर तुम जीत का कोई और मार्ग सुझा सकती हो ?

राजकुमारी — मुझसे पूछते हो सम्राट ? मैं आपके शत्रु की कन्या हूं ।

अशोक — कभी थी । अब नहीं हो । चाहो तब भी नहीं हो सकती । मैं भी ऐसी स्थिति चाहता हूँ कि चाहूँ तब भी किसी का शत्रु न बन सकूं ।

राजकुमारी — सम्राट कहीं सचमुच ही अस्वस्थ तो नहीं हैं ?

अशोक — कुछ क्षण पहले अवश्य था पर अब नहीं हूँ । अब तो मैं एक ऐसे मुख्य प्रदेश में पहुँचता जा रहा हूँ जहाँ न घृणा है न द्वेष न लालसा है न मृत्यु न ज्वाला न श्मशान । राजकुमारी क्या सचमुच कोई ऐसा प्रदेश है ?

राजकुमारी — सम्राट मैं नहीं जानती कि ऐसा प्रदेश है या नहीं । पर आप चाहें तो इसी देश को अपने सपनों का देश बना सकते हैं ।

अशाक वह कैसे ?

राजकुमारी भगवान बुद्ध क पावन म `श का सुनकर।

अशोक मैंन कइ वार उस सुना ह पर कभी ठीक-ठीक समय नहीं पाया। आज लगता है जस उसका काई अथ है। कलिंग की उठन वाली पुकार न मुझे अशान्त बना रखा है। स्वप्न मे, जागति म म सदा एक भयकर चीत्कार, एक हृदय विदारक हाहाकार सुनता रहता हूँ। मैं अब तक जीत के भ्रम म था लेकिन तुमन मरा भ्रम दूर कर दिया। तुमन अभी तो कहा है—जहा इस प्रकार वध, मरण और `शनिकाला हा वह जीतना न जीतन के बराबर है। तुम मरी गुरु हा। मुझे दीक्षा दो। मैंन तुम्हार परिवार और तुम्हार दश की हत्या की है। मुझे क्षमा करो।

राजकुमारी सम्राट शान्त हो। जा हत्या कर सकता है, वह जावन भी द सकता है। आओ मरे साथ मर स्वर म स्वर मिलाकर कहा—

बुद्ध शरणम गच्छामि, सघम शरणम गच्छामि। धम्म शरणम गच्छामि

अशाक (दोहराता है) बुद्ध शरणम गच्छामि सघम शरणम गच्छामि धम्म शरणम गच्छामि। (नि श्वास) कितनी शान्ति है। इस मन्त्र म। इसको समयन का प्रयत्न करूँगा। (तीव्र सगीत के साथ घटनाचक्र वतमान मे लौटता है)

अशोक (जसे जागता है) अ नत इस मन्त्र म ही मुझे मुक्ति मिली। बिलकुल कल की सी बात लगती है परन्तु कितने वष बीत गय, कितन।

महामात्य जावन का बदलन वाली घटनाए कभी पुरानी नही हाती सम्राट। युग युगा तक तक ससार इस घटना का कत ती सी ही घटना समझता रहेगा।

अशोक और जब तक एसा हाता रहगा महामात्य तब तक काइ किसी का पराजित नही कर सकगा। न कोई विजित हागा

और न कोई जयी। इसीलिए हम देश भर में स्तम्भों और शिलाखण्डों पर अंकित करके यह सन्देश फैला देना चाहते हैं। हमारे अपने पुत्र पौत्रों को आदेश दिया है (गम्भीर स्वर में पढ़ता है) मेरे पुत्र और प्रपौत्र शस्त्रों द्वारा विजय करने का विचार न करें। उन्हें उदारता, सहिष्णुता तथा मृदुता में आनन्द मानना चाहिए। जो धर्म विजय है उसे देवताओं का प्रिय मुख्य विजय मानता है। सभी जगह देवताओं के प्रिय धर्मानुशासन का अनुरक्षण करते हैं। जहां देवताओं के प्रिय के दूत नहीं भी जाते, वे भी देवताओं के प्रिय के धर्मव्रत विधान और धर्मानुशासन को सुनकर धर्म का आचरण करते हैं और करेंगे और इस प्रकार सब जगह जो विजय प्राप्त हुई है वह प्रीति रसपूर्ण है। **(इसी के साथ साथ शान्त संगीत उभरता रहता है और फिर समाप्ति सूचक संगीत में लय हो जाता है।)**

मैं तुम्हें क्षमा करूँगा

पात्र

- गुप्त सम्राट भानुगुप्त बालादित्य
- राजमाता
- युवती भिक्षुणी सामा
- सनिक यशोधमन
- हूण सनापति
- सेनापति द्राण
- महामात्य
- हूण सम्राट मिहिरकुल
- कचुकी

सनिक नागरिक इत्यादि

पहला दृश्य

(मच पर गुप्त सम्राट के प्रासाद का एक प्रकोष्ठ। भानुगुप्त बालादित्य राजमाता से मत्रणा करते दिखाई देते हैं। सहसा उठकर टहलने लगते हैं और बोलते हैं।)

भानुगुप्त — मा वह सैनिक कहता है कि बस विद्रोह करने की देर है भारत के सभी वीर उस अत्याचारी हूण से लोहा लेने के लिए उठ खडे होग। क्या सच ऐसा होगा ? क्या जिस प्रकार परम भागवत आय स्कन्दगुप्त ने हूणो का नाश किया था उसी प्रकार मैं भी उन्हे एक बार फिर भारत की सीमा से खदेड दूगा ? क्या मैं विदेशियो स इस देश का उद्धार कर सकूगा ? क्या मुझमे गुप्तवश

झलक रहा है। सम्राट उसे प्रणाम करते हैं और वह आशीर्वाद देने के लिए हाथ उठाती है)

भानुगुप्त इधर आ जाइए आर्ये। आप गांधार से आ रही हैं न ?

सोमा हाँ सम्राट ! किसी दिन मैं गांधार के महाविहार की निवासिनी थी। आज वह विश्व प्रसिद्ध विहार खण्डहर बन चुका है। उसकी निवासिया के रुण्डमुण्ड हूणों की ठोकरों में लोट रहे हैं। नारियाँ उन चपटी नाकवाले राक्षसों की वासना को शांत करने का घृणित साधन बन चुकी हैं। परन्तु सम्राट मैं इतनी दूर से चलकर यह पूछने आई हूँ कि क्या भारत की सन्तान इतनी हीन वीर्य हो गई है कि वह नारी और धर्म की रक्षा भी नहीं कर सकती ? क्या ऐश्वर्य और विलास ने उन्हें बिलकुल ही अपंग बना दिया है ? क्या विद्या और कला संगीत और साहित्य की प्रगति का अर्थ मानवता का महानाश है ?

भानुगुप्त आर्ये इस प्रकार उत्तेजित न हों। यह सत्य है कि आपके साथ घोर अन्याय हुआ है। लेकिन क्या यह भी सत्य नहीं है कि मिहिरकुल का यह अत्याचार

सोमा (सहसा आवेश में आ जाती है) मिहिरकुल का यह अत्याचार अकारण नहीं है—यही कहना चाहते हैं न आप ? और शायद यह भी कि बौद्धों ने एक दिन मिहिरकुल को अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह करने को उकसाया था। फिर समय आने पर जब उसने विद्रोह का झंडा ऊँचा किया तो वे लोग अपने वायदे से मुकर गये। वह हार गया। आज उसी हार का वह बदला चुका रहा है।

भानुगुप्त आर्ये ठीक समझीं मैं यही कहना चाहता था। आज बौद्ध विहार हर कहीं षड्यन्त्रों के केन्द्र बने हुए हैं। इसीलिए उनका पतन हो रहा है लेकिन इसका यह

आशय नहीं है

सामा (पूर्ववत) इसका आशय स्पष्ट है। अब मुझे कुछ नहीं कहना है। जाती हूँ।

भानुगुप्त नहीं आर्ये, आप नहीं जाएगी। मैंने यह तो नहीं कहा

सामा (पूर्ववत) मुझे नहीं मालूम था कि प्रतापी गुप्तवंश के वंशज अब इस प्रकार सोचने लगे है। हिन्दू और बौद्ध दोनों को एक दृष्टि से देखने वाले सम्राटों पर भी विदेशियों का प्रभाव पड़ गया है।

भानुगुप्त आर्ये मेरी बातें सुनें।

राजमाता शान्त देवी शान्त। आपने संयम का व्रत लिया है।

मामा जिस देवी ने संयम का व्रत लिया था हूणों ने उसकी हत्या कर दी है। मैं प्रतिशोध की देवी हू। मैं साक्षात प्रतिशोध हू।

राजमाता आपकी व्यथा को समझती हूँ। नारी ही नारी की पीड़ा को नहीं पहचानगी तो कौन पहचानगा? परन्तु इस प्रकार भावाकुल होने से उससे मुक्ति नहीं मिल सकती है।

मोमा (सहसा शान्त होकर) आप ठीक कहती हैं राजमाता। मुझे अपनी ही पीड़ा से पराजित नहीं होना चाहिए। मैं मानती हू कि मैं अपनी व्यथा को पी नहीं सकी परन्तु राजमाता, पी लेती तो यहाँ तक आती कैसे? और अब आ गई हूँ तो ऐसा लगता है जैसे यह सब मेरा मोह था। मुझे अपनी शक्ति भर वहीं युद्ध करना चाहिए था। सम्राट क्षमा करें अभी भी देर नहीं हुई।

भानुगुप्त हाँ देवी! अभी भी देर नहीं हुई। आपको सचमुच युद्ध करना होगा परन्तु वहां नहीं यहीं करना होगा। इन प्रदेशों में जो मानवता सोई पड़ी है उसे ठोकर मारकर जगाना होगा। उन्हें बताना होगा कि दासता मौत है।

वालो कर सकोगी युद्ध ? जगा सकोगी इन प्रदशा को ?

सोमा — आप कहना चाहते हैं कि मैं गाँव-गाँव, कस्बे कस्बे घूम-घूमकर सबको अपनी व्यथा सुनाती फिरूँ ?

राजमाता — हा कर सकोगी एसा ? बन सकोगी मेरी विजय-यात्रा की सदेशवाहिका ? क्रोध प्रतिशोध की शक्ति नही है, शक्ति है कम।

सोमा — (विचारमग्न) सोचती थी अपनी व्यथा आपको सौपकर प्राणो का विसर्जन कर दूगी

भानुगुप्त — स्वार्थ यही स्वार्थ हम सबको खाये जा रहा है। आर्ये आप तो धर्म को जानती हैं—अपनी व्यथा किसी को नही सौंपनी चाहिए। उसमे जलो और फिर उसकी लपटो से जो प्रकाश फूटे, उसी से जग मे उजियारा होने दो।

सोमा — सम्राट, मेरा आना सफल हुआ। मैं अपने को भूल रही थी। आपने मुझे जगा दिया।

राजमाता — (हँसकर) बहुत जल्दी जाग गई। सच है व्यथा कलुष को धोकर चित्त को पारदर्शी बना देती है। जो कुछ शेष रह गया है, उसको वह सैनिक दूर कर देगा। वही सैनिक जिसने तुम्हारे बारे मे मुझे सब कुछ बताया है और भानु को विद्रोह की प्रेरणा दी है।

सोमा — आपका आशय सैनिक यशोधमन से है। हाँ, राजमाता मैं उसी की प्रेरणा से यहाँ आई हूँ। क्या वे यहाँ पहुँच गये हैं ?

राजमाता — हाँ वह कई दिन पूर्व यहाँ पहुँच गया था और मैंने उसे यहाँ रहने पर राजी कर लिया है। लो, वह इधर ही आ रहा है। (सैनिक यशोधमन का प्रवेश)

यशोधमन — सम्राट की जय हो। प्रणाम करता हूँ आर्ये। (देखकर) आप यहाँ पहुँच गई आर्ये ?

सोमा — कल्याण हो, तुम्हे देखकर प्रसन्नता हुई। हम लोग कल

ही यहा पहुँचे हैं।

भानुगुप्त सनिक मैंने तुम्हारी योजना पर विचार करने के पश्चात निश्चय किया है कि गुप्तवश की चलायमान होती हुई राजलक्ष्मी को स्थिर करने के लिए मैं फिर शस्त्र ग्रहण करूगा। मैं विद्रोह करूगा। हूण सम्राट के महानाश का पडयत्र रचूगा और गाधार के महाविहार की यह देवी मेरी विजय की मदश वाहिका बनकर गाव गाँव म अलख जगाती फिरेगी।

सामा हा सैनिक मैं वचन दे चुकी हू।

यशोधमन तब मिहिरकुल की पराजय निश्चित है। सम्राट मैं मालवा जाने की आज्ञा मागने आया हूँ। एक बार वहा के महाराज को टटोलना चाहता हू।

भानुगुप्त अभी जाना चाहते हो ?

यशाधमन हाँ सम्राट। अभी जाना चाहता हूँ। न जाने कौन से क्षण का प्रमाद हमारी पराजय का कारण बन जाए। आज्ञा दें सम्राट।

भानुगुप्त हमारी आज्ञा है सनिक ! तुम्हारे रहते पराजय अब हूणों पर ही कृपा कर सकती है।

यशाधमन सम्राट का उत्साह देखकर भविष्य पर विश्वास जमता है। प्रणाम करता हूँ सम्राट।

भानुगुप्त आओ सनिक। तुम्हारा मार्ग मगलमय हो और मा, आप भी इनको सादर अपने प्रासाद म ले जाएँ।

राजमाता आओ आर्ये चलें। (एक एक करके सब चले जाते हैं। सम्राट गभीर मुद्रा मे एक क्षण खडे रहते हैं। फिर बोल उठते हैं)

भानुगुप्त क्या यह सब सम्भव हो सकेगा ? क्या मैं मिहिरकुल की दासता से मुक्त हो सकूगा ? मुझे लगता है—हो सकूगा। मिहिरकुल का अत्याचार ही उसका काल बनेगा अवश्य बनेगा अवश्य मैं अब और उसका

माण्डलिक बनकर नही रहूगा ।

तेजी से अन्दर के प्रकोष्ठ मे चले जाते हैं और मच पर अधकार छाने लगता है। धीरे धीरे प्रकाश उभरता है। पूर्ण प्रकाश होने पर मच पर जन मार्ग का दृश्य। बहुत से नागरिक इकटठे हैं। एक ऊचे स्थान पर खडी हुई भिक्षुणी सोमा भाषण दे रही है।

सोमा नागरिको हूण आय परम्परा के शत्रु है। व भारतीय सस्कृति और सभ्यता के शत्रु है। क्या तुमन कभी सुना है कि आय सम्राटा न अलग अलग धर्मों म भेद किया है ? क्या देवानाम प्रिय सम्राट अशोक बौद्ध होत हुए भी वैष्णव धम क सरक्षक नही थ ? क्या परम भागवत आय समुद्रगुप्त परम वष्णव होत हुए भी बौद्धा स कम प्रेम करत थ ? क्या सहिष्णुता और समन्वय हमारी सस्कृति के मेरुदण्ड नही है ?

जनता 1 निश्चय ही हैं।

जनता 2 आय सम्राटा न कभी धम के नाम पर मनुष्य मनुष्य म भेद नही किया।

सोमा लेकिन मिहिरकुल करता है। वह अत्याचारी कभी बौद्ध था अब शव है। उसन विहारा की नीव खोद दी है। उसन तथागत की प्रतिमा को भ्रष्ट किया है। उसन गाधार और तक्षशिला क महाविहारो को नष्ट कर दिया है। उसने भिक्षुओ को तलवार के घाट उतार दिया है और भिक्षुणिया को लूट का माल समझकर उन पर अधिकार कर लिया है। हूण नारी को कवल एक निर्जीव पुतली समझत हैं। शराब की बोतल स अधिक उसका मूल्य उनकी दृष्टि मे नही है।

जनता 1 ऐसा ता कभी नही सुना था। यह ता सरासर जुल्म है।

जनता 2 हमारा राजा उन्ह निकाल क्या नही देता ?

सोमा	निकालना तो चाहता है पर निकाल नही सकता क्योकि यह काम केवल राजा के ही बस का नही है। सब मिल कर प्रयत्न करें तभी ऐसा हो सकता है पर यहाँ सब आपस म लडत रहत ह। सबके सब हूणा के माण्डलिक बनन म गौरव अनुभव करत ह।
जनता 1	नही नही उन्ह आपस म मिलना चाहिए।
जनता 2	उन्ह एक होकर हूणा को देश से निकाल देना चाहिए। (भीड उत्तेजित हो उठती है। उसी समय दो हूण सनिक मच पर प्रवेश करते हैं)
हूण सैनिक 1	यह कैसी भीड है ?
हूण सनिक 2	और यह भगवा वस्त्र पहने औरत कौन है ? यह कही बौद्ध भिक्षुणी तो नही है ?
हूण सैनिक 1	हाँ हा, यह बौद्ध भिक्षुणी है। यह जनता को हमारे विरुद्ध भडका रही है। पकड लो इसे। यह युवती है और सुन्दर भी। (जनता से) और तुम भागा यहा से। इस औरत को हम ले जायेंगे।
हूण सैनिक 2	और हाँ तुम्हारे पास जो कुछ सोना हो वह निकाल कर दते जाओ। अरे, बुत बन क्या खडे हो सुनते नही ?
सोमा	ये क्या सुनगे, तुम्हारी बाते तुम्हारा काल सुन रहा है।
हूण सैनिक 1	तुम्हारा इतना साहस औरत ? हम अभी कोडा से इन लोगा की खाल उधेडे देत ह और तुम्ह (हँसता है)
सोमा	राक्षसो तुम्हारे कोडे अब तुम पर ही पडग। तुम अब एक कदम भी आगे नही बढ सकते। सावधान नागरिको, देखते क्या हो आगे बढो।
हूण सैनिक 2	ये कुत्ते आगे बढेंगे ? एक एक का दाग दिया जायेगा। (सहसा नागरिक उत्तेजित हो उठते हैं और हमला बोल देते हैं)
नागरिक 1	क्या कहा कुत्ते ? हम कुत्ते हैं ?
नागरिक 2	भाइयो आओ इन्हें बता दें कि कुत्ते काटना

काटना भी जानते हैं। (हूण सैनिक घबराकर भागने लगते हैं)

हूण सैनिक 1 अरे अरे ये तो सचमुच ही हमला कर रहे हैं। ठहरो हम अभी और सैनिक लेकर आते हैं। (भाग जाते हैं)

जनता 1 अरे ये तो भाग गये। बस यही है इनकी वीरता?

जनता 2 इनकी वीरता कागजी है।

सामा लेकिन यही कागजी वीरता जब तुम आपस में लड़ते हो तो तुम्हारा काल बन जाती है। सोचो कैसे कायर तुम पर शासन करते हैं?

जनता 1 नहीं नहीं अब ऐसा नहीं होगा। अब हम उनका काल बन जायेंगे।

जनता 2 हम उन्हें देश से बाहर निकाल देंगे।

सामा यही हम सबको करना है लेकिन इसके लिए हमें गुप्त सम्राट बालादित्य की सहायता करनी होगी। उनकी सहायता से ही हम इन श्वेत भेड़ियों से मुक्ति पा सकेंगे।

जनता 1 हम सम्राट की सहायता कैसे कर सकते हैं?

सामा जैसे अब की है। हूणों से सहयोग न करना। उन्हें जैसे भी हो नष्ट करना।

जनता 2 हम तैयार हैं। हम ऐसा ही करेंगे?

जनता (एक साथ) हाँ, हम ऐसा ही करेंगे। हम सम्राट की सहायता करेंगे।

सामा तब हमारी जय निश्चित है। हमारी जय का अर्थ भारत माता की जय।

जनता भारत माता और गुप्त सम्राट की जय-जयकार करती हुई युवती के पीछे पीछे बाहर जाती है। पर्दा गिरता है।

दूसरा दृश्य

(मंच पर हूण सम्राट मिहिरकुल की छावनी का दृश्य। मिहिरकुल कुछ परेशान टहल रहा है। एक ओर सेनापति खड़े हैं। सहसा सेनापति के सामने रुककर मिहिरकुल कहता है।)

मिहिरकुल — मैं कहता हूँ सेनापति। इसमें जरूर कुछ राज है। भानुगुप्त बराबर पीछे हटता जा रहा है। लेकिन मैं पीछे हटने वाला नहीं हूँ। मैं समुद्र तक उसका पीछा करूँगा। हिमालय पर भी उसे नहीं छोड़ूँगा। आकाश पाताल, पूर्व पश्चिम, उत्तर दक्षिण कहीं भी जाय, मैं उसके पीछे जाऊँगा। लेकिन समझ में नहीं आ रहा वह पीछे क्या हट रहा है। हम आखिर कब तक इस तरह भागते रहना पड़ेगा?

सेनापति — मैं खुद नहीं समझ पा रहा जहाँपनाह लेकिन इतना विश्वास दिलाता हूँ कि हूण सेना का उत्साह कम नहीं हुआ है।

मिहिरकुल — मैं उत्साह की बात नहीं पूछता सेनापति। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या तुम्हें एरण की लड़ाई याद है? क्या तुमने बालादित्य के सेनापति गोपराज को लड़ते देखा था?

सेनापति — देखा था सम्राट। उसको लड़ते देखा था और फिर लड़ते लड़ते मरते भी देखा था।

मिहिरकुल — (तिलमिलाकर) काश, यह बालादित्य भी मर जाता। कमबख्त ने एक बार हमको स्वामी मानकर फिर बगावत की है। इसने राजा कब्जे किये हैं लेकिन वह लड़ता क्यों नहीं है? भागता क्यों जा रहा है? क्या हमको सीधी सीधी जमीन पर भगाये लिए जा रहा है? सेनापति तुम हमको क्यों नहीं बताते?

सेनापति — सम्राट हमको किस पर बताएँ? हम जितना आगे बढ़ते

हैं उससे कहीं अधिक वह बढ जाता है।

मिहिरकुल — क्या यह शर्म की बात नही है ? क्या हम उससे तेज नही भाग सकते ?

सेनापति — सम्राट यहाँ की जमीन बहुत खराब है।

मिहिरकुल — (तेज होकर) हम कुछ नही सुनना चाहते। तुमको शर्म आनी चाहिए। अगर तुम लडाई नही जीत सकते तो क्यो न तुम्हें मौत के घाट उतार दिया जाय।

सेनापति — (तलवार बजाकर) जहाँपनाह से किसने कहा कि मैं लडाई नही जीत सकता ?

मिहिरकुल — जीत सकते हो तो फिर आज बालादित्य जिन्दा क्यो है ? हम इस तरह भागना क्यो पड रहा है ? हम भागना नही चाहते हम युद्ध चाहते हैं। अभी यही। (सहसा दूर से शोर उठता हुआ पास आता है) यह कैसा शोर है ?

सेनापति — मैं अभी पता करता हूँ सम्राट। शायद बालादित्य की सेना पास आ गयी है।

मिहिरकुल — यानी बालादित्य लौट रहा है। (जोर से हसता है) तब ठीक है। हम उसी की जरूरत थी। जाओ देखते क्या हो ? घेर लो। पकड लो। उसे जिन्दा ही मेरे पास ले आओ। न आ सके तो सिर काटकर ले आओ। (शोर बहुत पास आ जाता है)

सेनापति — सचमुच सम्राट, यह बालादित्य के ही सैनिक है। ये लोग इधर ही आ रहे हैं। मैं अभी उन सबको रोकता हूँ। (सेनापति बाहर जाने को मुडता है कि तभी सेनापति द्रोणसिंह और यशोधर्मन तेजी से प्रवेश करते हैं। आय सनिक हूण सैनिकों को खदेड देते हैं)

यशोधर्मन — तो यहाँ छिपे बैठे है हूण सम्राट।

मिहिरकुल — सेनापति ये कैसे आये ? इन्हें यहाँ से निकालो। इन्हें मार डालो।

मैं तुम्हे क्षमा करूंगा

द्रोणसिंह — सावधान हूण। मरना तुम्हें है। तुम्हारा काल आ पहुँचा है।

हूण सेनापति — जबान सम्भालकर बोलो भगोडा। तुम लोग सैनिक नहीं चोर हो। चोरों की तरह भागते चले जा रहे हो।

यशोधमन — (हँसता है) ये बातें तुम्हारे मुँह से बहुत अच्छी लगती है हूण सेनापति। लेकिन अभी प्रमाणित हुआ जाता है कि कौन चोर है और कौन सैनिक। तलवार सम्भालो।

मिहिरकुल — सेनापति क्या देखते हो काट काटकर टुकड़े कर दो इस मुहजोर के।

द्रोणसिंह — (हँसकर) अरे हूण पहले अपनी तलवार तो निकाल।

सेनापति — सम्राट तुम जैसे चोरों से युद्ध नहीं किया करते। तुम्हारे लिए मैं काफी हूँ। ले वार सम्भाल। (तलवार लेकर द्रोणसिंह से युद्ध करता है। यशोधमन मिहिरकुल की ओर बढ़ता है)

यशोधमन — तो आइये सम्राट। मैं तो आपके योग्य हूँ। याद नहीं गत वार में भी दो दो हाथ किये थे अब यहाँ भी दो दो हाथ हो जायें। लीजिये वार सम्भालिए।

मिहिरकुल — तेरी इतनी धृष्टता। ठहर मैं अभी तेरे टुकड़े टुकड़े किये देता हूँ। कहाँ है वह बागी बालादित्य ?

यशोधमन — (लड़ते लड़ते) सम्राट बालादित्य वहीं है जहाँ उन्हें होना चाहिए।

मिहिरकुल — (लड़ते लड़ते) सम्राट ? हमारे रहते और कौन सम्राट हो सकता है ? वह मेरा माण्डलिक है। पहले तुमसे निपट लूँ तब उसे देखूंगा। (दोनों युद्ध करते हैं। बाहर से शोर पास आता है। "भागो" "भागो" की आवाज तेज होती है)

द्रोणसिंह — सुन रहे हो सेनापति तुम्हारी सेना भाग रही है।

हूण सेनापति — (लड़ते हुए) अभी देखता हूँ कौन भागता है।

द्रोणसिंह — देखना क्या है ? देख रहा हूँ। हूण भाग रहे

हूणा का धम है। ल सम्भल। (हूण सेनापति के हाथ से तलवार गिर जाती है और वह तेजी से बाहर की ओर भागता है। द्रोणसिंह हसता है) भाग गया। हा, हा हा।

यशोधमन — नहिन मैं सम्राट का भागने का कष्ट नहीं दूगा।

द्रोणसिंह — नही नही हें हम सही-सलामत अपने सम्राट के पास ले जायेंगे।

यशोधमन — (वार करके) लो सम्राट सम्भलो। तुम गये।

मिहिरकुल — (चीखकर) आह (गिर पडता है)

द्रोणसिंह — इतने जल्दी गिर पडे हूण सम्राट। (सनिकों से) सनिको हूण सम्राट को उठाकर पूरी प्रतिष्ठा के साथ मगध सम्राट के शिविर म ले चलो। इनके घावा की मरहम पट्टी तुर त होनी चाहिए।

सनिक मिहिरकुल को बन्दी बनाकर ले जाते हैं। बाहर तीव्र कोलाहल उठता रहता है। पर्दा गिरता है।

तीसरा दृश्य

(सम्राट बालादित्य के सनिक शिविर का दृश्य। सम्राट बालादित्य और महामात्य दोनो मत्रणा कर रहे हैं।)

भानुगुप्त — महामात्य! मेरा स्वप्न पूरा हो गया। परमभागवत आय चन्द्रगुप्त ने जिस प्रकार शको का नाश किया था जिस प्रकार आय स्कन्दगुप्त ने हूण सम्राट खिंगल का पराभव किया था उसी प्रकार मैंने भी मिहिरकुल की रीढ तोड दी। अब प्रश्न यह है कि उसके साथ क्या किया जाय। उसे सूली पर चढा दिया जाय या देश स

निकाल दिया जाय। मैं कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा। मैं

भिक्षुणी सोमा प्रवेश करती है।

सोमा सम्राट! क्या मैं आ सकती हूँ?

भानुगुप्त कौन? आर्ये। आओ देवी क्या आना है।

सोमा सम्राट मैं एकान्त में कुछ बातें करने आयी हूँ।

भानुगुप्त तो ऐसा ही हो। (महामात्य से) महामात्य आप कुछ क्षण के लिए बाहर के प्रकोष्ठ में ठहरें।

महामात्य सम्राट मैं राजमाता के पास जाता हूँ। उनसे भी इस बार में मंत्रणा करनी है। उनको लेकर ही लौटूंगा। (जाता है)

भानुगुप्त अब कहो देवी।

सोमा सम्राट! मैं आपको सावधान करने आयी हूँ।

भानुगुप्त समझा नहीं। इस विजय वेला में सावधानी की क्या आवश्यकता आ पड़ी?

सोमा सावधानी की आवश्यकता विजय के पश्चात् ही होती है सम्राट। आपने उस अत्याचारी हूण के बारे में क्या सोचा है?

भानुगुप्त मैं नहीं समझता कि ऐसे दुरात्मा को सूली से कम और क्या दण्ड दिया जा सकता है।

सोमा सम्राट ठीक समझते हैं। पर यदि आपको अपने निश्चय में परिवर्तन करना पड़े तो?

भानुगुप्त निश्चय में परिवर्तन? क्या कहती हो? कौन चाहता है इस निश्चय में परिवर्तन? तुम या सेनापति द्रोण या सैनिक यशोधर्मन?

सोमा हममें से कोई परिवर्तन नहीं चाहता। परिवर्तन चाहती है राजमाता।

भानुगुप्त राजमाता? नहीं देवी ऐसा नहीं हो सकता। जिस राजमाता ने आपको शरण दी जिस राजमाता ने मुझे

विद्रोह के लिए उकसाया, वही राजमाता उस अत्याचारी पर दया करने के लिए कहेगी ?

सोमा यही तो विडम्बना है सम्राट। आज सवेरे मिहिरकुल की पत्नी को मैंने राजमाता के शिविर में देखा था।

भानुगुप्त (हँसकर) वह तो मैं जानता हूं।

सोमा लेकिन क्या सम्राट ने मिहिरकुल की पत्नी को राजमाता के चरण पकड़कर अपने पति की भीख मांगते देखा है ? और देखा है क्रुद्ध राजमाता का हूण के अत्याचारों की याद दिलाकर उसे दुत्कारते।

भानुगुप्त मैंने यह सब नहीं देखा, लेकिन यदि आपने देखा है तो फिर आप कैसे कहती है ?

सोमा वही बताती हूँ सम्राट। जब राजमाता ने उस हूण नारी का इस प्रकार दुत्कारा तो वह मरी ओर देखकर लज्जा और व्यथा से धरती में गड़ गई। फिर चुपचाप उठी और लौट चली। पर द्वार पर पहुँचकर वह एक क्षण रुकी बोली— यह सब तो मैं जानती थी, जानती थी मुझे यहां आने का कोई अधिकार नहीं है। फिर भी मन नहीं माना। सोचा आय उदार होते हैं। आय नारी तो क्षमा का रूप है। इसी लालच में चली आई थी। गलती हुई जाती हूँ।' और वह चली गई। राजमाता ने कुछ उत्तर नहीं दिया। केवल जाते देखती रही और उनकी आँखों में जल उमड़ता रहा। (एकदम तेज होकर) आप इसका अर्थ जानते है ?

भानुगुप्त जानता हूँ देवी। आपके भय को समझ सकता हूँ। (तीव्र होकर) लेकिन विश्वास रखें मैं उसे क्षमा नहीं करूँगा। मैं उसे सूली पर चढ़ाऊंगा।

सोमा (हर्ष से) सम्राट मुझे आपसे यही आशा थी। लेकिन *आह वे लोग आ गये। (सेनापति द्रोण, महामात्य,* राजमाता और यशोधर्मन का प्रवेश। सब सम्राट का

अभिवादन करते हैं। सम्राट राजमाता को प्रणाम करते हैं)

भानुगुप्त पधारिये सब लोग इधर पधारिये। मा, आप इधर आ जाइए। (सब लोग बैठ जाते हैं) मैं आप लोगो की ही राह देख रहा था। आज मिहिरकुल के बारे मे निश्चय कर ही डालना है।

द्रोणसिंह हम लोग भी उसी की चर्चा करने आए है। मैं केन्द्र की शक्ति को दृढ करने के पक्ष मे हू कि मानवता राज नीति मे दखल न दे।

महामात्य सम्राट राजनीति हम लोगो का शस्त्र है धर्म नही। धर्म है केवल मानवता।

यशोधर्मन (आवेश) यदि हमारा धर्म मानवता है तो हम भगवे वस्त्र पहनकर किसी विहार मे तप करना चाहिए।

भानुगुप्त सैनिक, भगवे वस्त्र पहनना राजनीति से भागना नही है। आचार्य चाणक्य ने भगवे वस्त्र पहनकर ही साम्राज्य की स्थापना की थी।

राजमाता लेकिन इस पर भी क्या आर्य चन्द्रगुप्त के वश मे राज लक्ष्मी स्थिर रह सकी? हम राजनीति और मानवता को अलग अलग क्या समझें? मेरे विचार मे तो मिहिर-कुल को क्षमा कर देना ही उचित होगा। (सब चकित होकर राजमाता की ओर देखते हैं)

सोमा नही, नही राजमाता नही।

द्रोणसिंह मैं इस प्रस्ताव का समर्थन नही करूंगा।

यशोधर्मन मैं भी नही करूंगा। सम्राट, नही उस जालिम हत्यारे को क्षमा नही किया जा सकता।

भानुगुप्त ठहरो सैनिक ठहरो। माँ यह तुम क्या कहती हो? मैं मिहिरकुल को क्षमा कर दू? उस मिहिरकुल को, जिसके अत्याचार से आज भी धरती कांपती है? जिसने मानवता को कलंकित करने मे कुछ भी नही उठा रखा।

उसी घणित व्यक्ति को आप क्षमा करने को कहती हैं। क्या आखिर क्या?

राजमाता
: क्योंकि राजनीति और मानवता दोनों ही दृष्टियों में यह न्यायसंगत है।

महामात्य
: हाँ सम्राट, राजमाता ठीक कहती है। मिहिरकुल को क्षमा करने में ही राजनीति का कल्याण है और मानवता धन्य होती है। आज गुप्त सम्राट के पास वह शक्ति कहाँ है जो उनके पूर्वजों के पास थी? कहाँ हैं वे साधन जो तमाम अन्तर्वेद को संगठित रख सकें? कहाँ है वह एकता और सद्भाव जो एक केन्द्रीय सत्ता को बना सके? पंचनद प्रदेश अब भी हूणों के हाथ में है। मालव और सौराष्ट्र की स्थिति अब भी डाँवाडोल है। वाकाटक साम्राज्य और कादम्ब राज्य शत्रु न होकर भी मित्र नहीं हैं।

यशोधमन
: ठीक है महामात्य! लेकिन मैं पूछता हूँ कि क्या इसी लिए ही हाथ में आये इस प्रबल शत्रु का बीज नाश नहीं कर देना चाहिए।

महामात्य
: मिहिरकुल को सूली पर चढ़ाने से उसका नाश नहीं होगा सैनिक।

सोमा
: (व्यंग्य) तो किस तरह होगा, महामात्य? क्षमा कर देने से?

महामात्य
: हाँ देवी। क्षमा करके उसे पंचनद प्रदेश भेज देने से।

द्रोण
: महामात्य, क्या आप कहना चाहते हैं कि वह वहाँ से आक्रमण नहीं करेगा?

यशोधमन
: क्या नहीं करेगा। वह अवश्य करेगा। वह कहे तब भी मैं उसका विश्वास नहीं कर सकता।

महामात्य
: विश्वास तो तुम मालव राज्य का भी नहीं कर सकते।

यशोधमन
: हाँ, अभी तो नहीं कर सकता परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है

भानुगुप्त उस अथ की बात हम अभी रहने द। पर तु मुझे लगता है जैसे वर्तमान परिस्थितिया म महामात्य का मन्तव्य विचारणीय है। पचनद प्रदेश पर उसके छोटे भाइ का अधिकार है। यदि उसे वहा जान दिया जाए तो निश्चय ही दोनो भाई लड मरेंगे।

सोमा और यदि उसे सूली पर चढा दिया जाए तो ?

महामात्य तो हम तुरन्त ही उस प्रदेश से एक और आक्रमण के लिए तयार रहना चाहिए और दुर्भाग्य म हम तयार नही है। (एक क्षण सब मौन रहते हैं)

सोमा सम्राट, मैं राजनीति नही जानती। मैं यह भी नही कहती कि महामात्य की बात म सार नही है परन्तु इसके साथ यह भी सत्य है कि मिहिरकुल इस पराजय को भूलेगा नही। वह प्रतिशोध लेगा। उसको क्षमा करके आप अपने नाश का बीज बो रहे हैं। यह क्षमा वीरता की नही, कायरता की प्रतीक है।

भानुगुप्त राजनीति म वीरता और कायरता का अथ करना बहुत सरल नही होता देवी। कूटनीति की चालें कायरता प्रतीत हो सकती हैं और विशुद्ध वीरता अ धकूप म डाल सकती है। इसलिए मैं चाहूँगा कि आप अभी थोडा सयम रखें। महामात्य मिहिरकुल को उपस्थित किया जाए।

महामात्य अभी लीजिए वह बाहर के प्रकोष्ठ म ठहरा है। (जाता है)

भानुगुप्त आर्ये मिहिरकुल आने वाला है। उसका भाग्य निर्णय करते समय मुझे आपकी आवश्यकता होगी। आपकी ओर देखकर ही मैं उसके साथ न्याय कर सकूगा।

सोमा सम्राट आप मुझे सदा निरस्त्र कर देते हैं। (इसी क्षण महामात्य के साथ हूण सम्राट मिहिरकुल प्रवेश करता है)

महामात्य — व सामने सम्राट बालादित्य हैं। उन्ह प्रणाम करो।

मिहिरकुल — कौन? प्रणाम का कोई मूल्य नही होता महामात्य। भाग्य का खेल है। कल तुम्हार सम्राट मर अधीन थ आज म उनका कैदी हू। क्या पता कल क्या हो?

भानुगुप्त — इतना समझकर भी तुम प्रजा पर राक्षसा को लजान वाले अत्याचार करत रह हो।

मिहिरकुल — अत्याचार की बात मैं नही जानता। उन्होन मर साथ विश्वासघात किया है और उसका दण्ड जो भी दिया जाए वह थोडा ही है।

भानुगुप्त — मिहिरकुल इधर देखो उस युवती को। इसन तुम्हार साथ क्या विश्वासघात किया था? इस जसी साध्वी नारियो पर तुमन जो भीषण अत्याचार किय, उन्होन तुम्हार साथ कौन सा विश्वासघात किया था? उन मासूम बच्चो न और अशक्त वद्धो न

मिहिरकुल — भावनाओ और आवेगो म बह जाना हूणो ने नही सीखा। शासन शक्ति स होता है। प्रेम की दुहाई ढोगी दिया करते है। मेरा व्रत बौद्ध धम का उन्मूलन है। मुझे उसे पूरा करना है, साधना की चिन्ता नही करनी है।

भानुगुप्त — तो मैं भी साधना की चिन्ता नही करूँगा। मैं तुमस प्रतिशोध लूगा। मैं तुम्ह सूली पर चढाऊगा। (सभा मे आश्चय की ध्वनि। मिहिरकुल कांपता है) क्या काप उठे हूण?

मिहिरकुल — हाँ स्वीकार करूँगा मैं काप उठा था। लेकिन यह मात्र क्षणिक दुबलता है। मैं सूली पर चढूगा। वह मेरे लिए गौरव का क्षण होगा।

भानुगुप्त — लेकिन हूण सरदार गौरव के इसी क्षण से मुक्ति पान के लिए तुम्हारी पत्नी मरी माँ के पास गई थी।

मिहिरकुल — वह नारी की बाते है। नारी दुबल होती है।

राजमाता मिहिरकुल क्या तुमको जन्म देने वाली तेरी माँ भी दुबल थी?

मिहिरकुल राजमाता नारी की दुबलता ही उसे माँ बनाती है। क्या मैंने कुछ गलत कहा सम्राट? मैं मौत को स्पष्ट देख रहा हूँ।

भानुगुप्त (कड़ककर) तुम्हे मौत नहीं मिलेगी।

मिहिरकुल (काँपकर) क्या?

भानुगुप्त हा मैं तुझ जैसे अत्याचारी को शहीद नहीं बनने दूगा। मैं तुझे कुत्ते की मौत मरने का अवसर दूगा। मैं तुम्हे क्षमा करूँगा। (आश्चर्य की ध्वनि) महामात्य ले जाओ इसे और पहुँचा दो पचनद प्रदेश की सीमा में।

मिहिरकुल नहीं जानता कि आप मुझे क्षमा कर रहे हैं या दण्ड दे रहे हैं? पर मैं इसे स्वीकार करने को विवश हूँ।

जाता है। सब स्तम्भित से देखते रहते हैं। पर्दा गिरता है।

प्रतिशोध

पात्र

अतीला
सरदार
इल्डिका
लडका
(बहुत स सरदार आदि)

(मंच पर प्राचीन काल की युद्धभूमि का प्रतीकात्मक दृश्य। हूण सम्राट अतीला का कम्प। ऐश्वय विलास और भयानकता उसकी विशेषता है। पर्दा उठने पर मंच पर अतीला प्रवेश करता है। आयु लगभग 30 वष। देखने मे भयङ्कर रूप से आततायी, फुर्तीला और दृढ। चलने पर जसे धरती काँपती है। छोटी छोटी काली आँखो से जसे रक्त टपकता है। आवाज तीखी और भारी। नाक चपटी। वह अट्टहास करता हुआ प्रवेश करता है। उसके पीछे पाँच छ सरदार हैं। वसे ही खूखार और भयानक।)

अतीला क्या कहा तुमने ? कितने कैदी हैं इस कैम्प म ?

सरदार आलीजाह ! यही कोई 20 हजार हैं।

अतीला 20 हजार ? कितना वक्त लगता है उनका सिर काटने मे ? (एकदम) हम समझते हैं, बहुत सा को तो जिन्दा ही गाड देना ठीक होगा।

सरदार आलीजाह बजा फरमाते है। एसा ही किया जाएगा। और अगर जहाँपनाह पसन्द करें तो कैम्प म आग लगा दी जाए।

अतीला तुम्हारा मतलब है सबको जिन्दा जला दिया जाए। हा

कर सकते हो। जहा जहा से हम गुजरते हैं वहा वहा घास कभी नही उगनी चाहिए। जला दो सबको। डुबो दो सबको नदी मे। कोई बचन न पाय। चारो ओर हमारे घुडसवार तैनात रह। जो भागन की कोशिश करे, उस तलवार के घाट उतार दिया जाए।

सरदार ऐसा ही होगा आलीजाह।

अतीला और देखो ऐसा करन से पहले सबको नगा कर लिया जाए।

सरदार जो हुक्म जहापनाह।

अतीला (अट्टहास करता है) और देखो आस पास के शहरो मे आग लगा दो। सब कीमती सामान लूट लो। सब मर्दों को मार डालो लकिन औरतो को मत मारना।

सरदार ऐसा ही किया गया है जहापनाह। सब औरतें जिन्दा ह। और आलीजाह उनम एक बला की खूबसूरत नौजवान औरत है। उसका मुकाबला करन वाली आज तक कोई दूसरी औरत पैदा नहीं हुई। वह यहा आती ही होगी। (चीख की आवाज पास आती है) जहांपनाह वह आ गई है आप उसे देखिए। (उसी समय एक युवती चीखते हुए मच पर प्रवेश करती है। उसका लिबास फट गया है और उसके भीतर से उसकी कुदन सी देह चमकती है। उसकी लम्बी लम्बी सुनहरी जुल्फें बार बार मुख पर छितरा जाती हैं और उनके बीच उसके नील नयन मानो जल प्लावित गगन मे जाज्वल्यमान पिण्ड की तरह चमकते हैं। उसका गदराया यौवन विलाप के आक्रोश से और भी रक्तिम हो आया है। वह तेजी से चिल्लाती और भागती हुई अतीला के चरणो पर गिर पडती है। कोई उसे रोक नहीं पाता)

इल्डिको आलीजाह, जहापनाह क्षमा कर दो उन्हे क्षमा कर (अतीला पास आकर उसे ठोकर लगाता है और

अतीला — तुम कौन हो। तुम यहा तक आने की हिम्मत कैसे कर सकी?

इल्डिको — जहांपनाह, मैं आपसे भीख मांगती हूं उन्हें क्षमा कर दो।

अतीला — किन्हें क्षमा कर दें? तुम हो कौन? और कहाँ से आई हो? लेकिन कुछ भी हो तुम सचमुच बला की खूबसूरत हो। (कड़ककर) सुनती नहीं। खड़ी होकर मेरी बात का जवाब दो।

सरदार — गुस्ताख लड़की खड़ी हो जा। (**लड़की उसी तरह से रोती रहती है। दो सरदार उसे पकड़कर खड़ा कर देते हैं**)

अतीला — इतनी खूबसूरत! तुम्हारा नाम क्या है लड़की?

इल्डिको — मेरा नाम इल्डिको है। मेरे पिता और भाई को आपके सिपाहियों ने पकड़ लिया है। वे उन्हें जान से मार डालेंगे। मैं आपके चरण पकड़ती हूँ आप उन्हें क्षमा कर दें।

वह फिर अतीला के पैर पकड़ने के लिए झुकती है, पर सरदार उसे रोक लेता है।

सरदार — अदब से खड़ा होना सीखो गुस्ताख लड़की।

अतीला — ठहरो। क्या नाम है तुम्हारा? इल्डिको। बड़ा प्यारा, बड़ा खूबसूरत नाम है। वैसा ही खूबसूरत, जैसी तुम हो। तुम्हारे पिता और भाई कौन है?

इल्डिको — वे आलीजाह के कैदी हैं। वे इस देश के सिपाही हैं।

अतीला — (फुफकारकर) सिपाही? तुम्हारे बाप और भाई सिपाही हैं? उन्होंने मावदौलत के खिलाफ हथियार उठाये थे?

इल्डिको — जहाँपनाह यह उनका कसूर नहीं है। वे सिपाही हैं और सिपाही का धर्म हथियार चलाना है।

अतीला — यानी तुम कहना चाहती हो यह उनका कसूर नहीं यह उनके धर्म का कसूर है। (हँसता है) लड़की तुम खूबसूरत ही नहीं, होशियार भी हो। हालाँकि होशियारी और खूबसूरती की कभी नहीं पटती, लेकिन कसूर किसी का भी हो,

उन्होने मावदौलत के खिलाफ हथियार उठाये और जो मावदौलत के खिलाफ हथियार उठाता है मावदौलत उसका सिर काट लेत हैं। तेरे बाप और भाई का भी सिर काट लिया जाएगा। तू दखना। देखेगी ना ? अभी तर देखते देखते वडी मफाइ स एक ही वार म हमार सरदार उनका सिर उडा दगे। (अटटहास)

इल्डिको नही, नही जहाँपनाह। उनकी जगह मुझे मार डालो पर उन्ह बख्श दो। मैं आपस उनके प्राणा की भीख मागती हूँ।

अतीला (तेज होकर) चुप हो जाओ गुस्ताख लडकी। (सरदार से) इसक बाप और भाई को यही अभी इसी वक्त हाजिर किया जाए।

सरदार जो हुक्म आलीजाह। (जाता है)

इल्डिको (गिडगिडाकर) नही, नही, जहाँपनाह उन्ह यहाँ न बुलाइये उन्ह छोड दीजिए। आप दुनिया के बादशाह है। आप जहाँपनाह हैं। आप मुझे मार डालिए।

अतीला हम जहाँपनाह हैं। हाँ हैं। लडकी हम तुझ पर बहुत खुश है। हम तुझे बहुत बडी इज्जत बख्शन वाले हैं।

सरदार जजीरो से जकडे हुए दो कैदियों को लाता है। एक प्रौढ है और दूसरा युवक। उनके कपडे फट गये हैं और शरीर घायल है। पर वे दृढता से मच पर आते हैं। इल्डिको उनकी ओर भागती है।

इल्डिको (चीखकर) पिताजी पिताजी भइया, ये आपको मार डालेंगे।

लडका सिपाही मरने से कभी नही डरते, इल्डिका

अतीला (कडककर) पीछे हट लडकी। देखत क्या हो इसे पीछे हटा लो।

सरदार (अदब से लडकी को पीछे हटा लेता है) इधर आओ लडकी। जहाँपनाह के सामने बाप से मोहब्बत दिखाना जुर्म है।

जश्न मनने दो। नाचना गाना खाना पीना और देखो आज लड़ाई बन्द रहेगी। हाँ कत्लेआम हो सकता है।

सरदार (आदाब बजाकर) ऐसा ही होगा जहाँपनाह। (दूसरे सरदारों से) आओ दोस्तो हम चलें। (जाने को मुड़ते हैं)

अतीला ठहरो।

सरदार हुक्म जहांपनाह।

अतीला जानते हो अभी तक हमारे हरम में कितनी बीवियाँ दाखिल हो चुकी हैं। है है है नहीं जानते। 399। इसलिए इल्डिको खासतौर से खुशकिस्मत है वह हमारी 400वीं बीवी है। इस खुशी में 400 जानवर मारकर लाओ। 400 तरह के पकवान बनने दो। 400 कैदियों के सिर काटकर शादी का जश्न मनाओ। 400 दासियाँ हमारी मलिका की खिदमत में रहनी चाहिए।

सरदार जो हुक्म आलीजाह ऐसा ही होगा। हम 400 बार इस मुल्क पर चढ़ाई करेंगे। 400 बार इसे तबाह करेंगे। (चले जाते हैं)

अतीला (अट्टहास करता हुआ) चार सौ बार हा, हा हा, 400वीं बीवी। खूबसूरत इल्डिको मेरी 400वीं बीवी है। इसलिए आज ऐसा जश्न मनेगा जैसा पहले कभी नहीं मना। (अट्टहास)

इसी क्षण मंच पर अंधकार छाने लगता है। दो क्षण मौन रहने के बाद फिर अट्टहास के स्वर उठते हैं। धीरे धीरे प्रकाश उभरता है। मंच पर बहुत से सरदार बैठे हुए हैं। खानपान के दौर चल रहे हैं। भयंकर शोर मचा हुआ है। इल्डिको शादी की पोशाक में मूर्ति की तरह बैठी है। स्पन्दनहीन, सिसकती लाश जैसी। बारी बारी राजा महाराजा आते हैं और भेंट रखकर लौट जाते हैं। नृत्यगान चलता रहता है।

अतीला (नशीला अट्टहास) जश्न मनने दो। दुनिया के बादशाह, आज एसा जश्न मनन दो जैसा कभी न मना और न मनगा। क्योंकि आज तेरी 400वी सालगिरह है।

सरदार आलीजाह, 400वी सालगिरह नही 400वी शादी है यह। हुजूर आज तक 400 औरतो को अपनी बीवी होन की इज्जत बख्श चुके है।

अतीला कम हैं सरदार। हमको तो कम स-कम एक हजार बीवियाँ रखनी चाहिए। सरदार हम तुमको अभी हुक्म देते हैं कि हमारे लिए 600 और बीवियाँ हासिल करो और देखो व सब इण्डिको स बढकर हो। हमार हुक्म की तामील तुरन्त होनी चाहिए।

सरदार तामील होगी जहाँपनाह।

अतीला हमारी बीवी कुछ खा नही रही है सरदार। दासियो स कहो कि उस खूब खिलाएँ पिलाएँ। यह खुशी स क्या महरूम रह ? (एकदम) पर अभी रहन दो। अभी तो इस अपन बाप और भाई की याद आ रही होगी। क्या सरदार लोग माँ बाप स मोहब्बत क्यो करत हैं ?

सरदार जहाँपनाह माँ बाप, माँ बाप जो होत हैं।

अतीला नही नही मोहब्बत इन्सान को कमजोर बना देती है। यह गुनाह है। हम इस बर्दाश्त नही कर सकत हैं। हम हुक्म देत हैं कि जहाँ जहाँ हम जाए वहाँ-वहाँ मोहब्बत करना जुर्म करार द दिया जाए।

सरदार ऐसा ही होगा आलीजाह। आलीजाह, यह अंगूरी रस गाल के मुल्क से आया है।

अतीला लाओ। (सरदार सुराही स शराब उडेलता है। अतीला पात्र फेंककर बोतल छीन लेता है) एस नही बोतल लाओ।

सरदार और जहाँपनाह यह मांस पर्शिया के बावर्चियो न पकाया है। (पूरा सिर आग रख देता है। अतीला तजी से उठा

कर उसे खाने लगता है)

अतीला बहुत लजीज बना है। इंशाअल्लाह, हम खुश हुए। सबको बाट दो।

सरदार ऐसा ही होगा आलीजाह।

अतीला और सरदार, अब मावदौलत तखलिया चाहते हैं।

सरदार ऐसा ही होगा जहांपनाह।

अतीला हा तुमने 400 कैदी कत्ल करा दिये थे ना ?

सरदार आलीजाह शादी के ठीक बाद मलिका हुजूर के सामने उनके सिर उतार गये थे।

अतीला ठीक है, हम खुश हुए। आइन्दा सात रोज तक इतने ही सिर हमारी मलिका के कमरे में डाले जाने चाहिए जिससे एक दिन हमारी यह खूबसूरत मलिका खुद सिर काटने लगे (हँसता है) अच्छा सबको जाने की इजाजत है। (मुड़कर) आओ मलिका हम भी अन्दर चलें। (इल्डिको नहीं सुनती। अतीला इशारा करता है और दो दासियाँ उसे उठाकर अतीला के आगे आगे जाती हैं। सब लोगों के जाने के बाद मंच पर अन्धकार उभरने लगता है। दो क्षण घुप अंधेरा रहता है और फिर प्रकाश उभरने लगता है। मंच पर एक शय्या है। उस पर बहुमूल्य वस्त्र बिछे हैं। चारों ओर भय का राज है। दीवारों पर बड़ी बड़ी तलवारें और शेरों के सिर टंगे हैं। पर्दा उठने पर अतीला झूमता हुआ घूम रहा है। इल्डिको मिट्टी की मूरत बनी हुई एक कोने में धँसी हुई बैठी है)

अतीला इल्डिको देखा मैंने तुम्हारे लिए क्या क्या किया है ? तुम मेरी 400वीं बीवी हो। जानती हो इसका क्या मतलब है ? (एकदम काँपकर) लेकिन आज मेरे सर में इतना दर्द क्या सरदार ? तुम यहाँ कैसे। तुम्हारा तो कीमा बना कर परिन्दों को खिला दिया गया था ? और तुम यूनान के बादशाह ? हटो तुम पीछे हटो, सब पीछे हटो। तुम आग

क्या बढ़ आ रहे हो। तुम तलवार क्यों खींच रहे हो? तुम हमारा हुक्म क्या नहीं सुन रहे हो? तुम फिर क्या मरना चाहते हो? क्या (चीखता हुआ चारों ओर भागता है) पीछे हट जाओ। मावन्तोलत के सामने कोई तलवार नहीं उठा सकता। (पीछे हटता हटता चारपाई पर गिर पड़ता है। बुरी तरह डकराता है) ओह आह (जैसे शांति छाने लगती है। एक क्षण के लिए मौन सा छा जाता है। फिर वह एकाएक चीख उठता है) कौन हो तुम? इल्डिको के बाप और भाई? तुम आखें लाल किये मेरी तरफ क्या आ रहे हो? तुमने तलवारें क्या खींच ली है? तुम मुझे मारोगे मुझे? नहीं नहीं। (चीख) हट जाओ जाओ। मैं तुम सबके सिर काट लूगा। लेकिन तुम्हारे धड़ पर तो सिर ही नहीं है। हा हा हा तुम तो मरे हुए हो। तुम मुझे क्या मारोगे?। (उठने की चेष्टा करता है) यह सब मेरा भ्रम है। मैं भी कैसा पागल हू। इल्डिको, इल्डिको उठो और यहाँ आओ? (फिर अट्टहास उभरता है) तुम फिर हस। गुस्ताख कहीं के। तुम फिर आ गये। तुम मुझे इल्डिको का नहीं छून दोगे। देखता हूँ अतीला का रास्ता किसने रोका है? (अट्टहास तीव्र होता है। जैसे एक साथ कई व्यक्ति हँस रहे हों। अतीला कानों पर हाथ रख लेता है) तुम कितना भी हँस लो। मैं नहीं रुकूगा। मुझे कोई नहीं रोक सकता। कोई नहीं रोक सकता। (चीख बराबर बढ़ती है। लेकिन फिर एकाएक सब शांत हो जाता है। अतीला जैसे टूटकर चारपाई पर गिर पड़ता है। इल्डिको जो अब तक मूर्ति की तरह बैठी हुई थी, सिर उठाकर अतीला को देखती है। चेहरे पर पहले भय और फिर मुसकराहट की रेखा खिचती है)

इल्डिको कोई आवाज नहीं है। कोई जुम्बिश नहीं है। वह इस तरह चीख रहा था अब मौन हो गया। (उठकर पास जाती है)

यह क्या खून। इसकी नाक स खून बह रहा है। इसके मुह स खून बह रहा है। तो क्या यह सचमुच मर गया। (भय से) मर गया। (हष से) मर गया। मेरे पिता और भाई का हत्यारा हूण मर गया। अतोला मर गया। धम आर ईश्वर का दुश्मन मर गया। इसान को सताने वाला बबर मर गया।

जसे जसे बोलती ह, उसका अट्टहास तेज होता ह। यहा तक कि उन्मत्त होकर नाचने लगती ह। और धीरे धीरे कई हूण सरदार वहाँ आते हैं। अतोला को देखते हैं। जसे पीले पड जाते हैं। कोई जुम्बिश नहीं कर पाता और इल्डिको उसी तरह उन्मत्त सी नाचती रहती ह। धीरे धीर पर्दा गिर जाता ह।